केंद्रीय विद्यालय संगठन
जयपुर संभाग

पाठ्य सामग्री एवं आदर्श प्रश्न-पत्र
सत्र-2022-23
कक्षा – ग्यारहवीं
विषय - हिंदी (आधार)

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा-ज्ञान के,मिटत न हिय को सूल ।

मुख्य संरक्षक

श्री बी.एल.मोरोड़िया

उपायुक्त, के.वि.सं., जयपुर संभाग

संरक्षक

श्री दिग्ग राज मीणा

सहायक आयुक्त, के.वि.सं., जयपुर संभाग

समन्वयक

श्री कैलाशचन्द मीणा

प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय सीकर

पाठ्य सामग्री निर्माण समिति

श्री मुकेश कायल
परास्नातक शिक्षक -हिन्दी
केंद्रीय विद्यालय खाजूवाला

श्री ओमप्रकाश
परास्नातक शिक्षक -हिन्दी
केंद्रीय विद्यालय इन्द्रपुरा

श्री कैलाश चंद रैगर
परास्नातक शिक्षक -हिन्दी
केंद्रीय विद्यालय सूरतगढ़ छावनी

श्री धर्मेन्द्र शर्मा
परास्नातक शिक्षक -हिन्दी
केंद्रीय विद्यालय क्र. 1 थल सेना, जोधपुर

श्री मुकेश कुमार टेलर
परास्नातक शिक्षक -हिन्दी
केंद्रीय विद्यालय झुंझुनू

श्री राकेश कुमार यादव
सामग्री संयोजक व संपादक
परास्नातक शिक्षक -हिन्दी
केंद्रीय विद्यालय सीकर

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय/बिंदु	पृष्ठ संख्या
1	केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा सत्र 2022-23 के लिए जारी प्रश्न-पत्र प्रारूप (अंक भार)	
2	अपठित गद्यांश	
3	अपठित पद्यांश	
4	अभिव्यक्ति और माध्यम पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न	
5	आरोह से पठित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न	
6	आरोह से पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न	
7	वितान से बहुविकल्पी प्रश्न	
	रचनात्मक लेखन	
8	अप्रत्याशित विषयों पर लेखन	
9	औपचारिक पत्र-लेखन	
10	डायरी लेखन,कथा-पटकथा आधारित लेखन	
11	स्ववृत लेखन और रोजगार संबंधी आवेदन-पत्र लेखन	
12	शब्दकोश एवं सन्दर्भ ग्रंथों पर आधारित प्रश्न	
13	काव्य खंड आधारित लघुत्तर प्रश्न	
14	गद्य खंड आधारित लघुत्तर प्रश्न	
15	आदर्श प्रश्न-पत्र -1	
16	आदर्श प्रश्न-पत्र -2	
17	आदर्श प्रश्न-पत्र -3	
18	आदर्श प्रश्न-पत्र -4	
19	आदर्श प्रश्न-पत्र-5	

परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

प्रश्न-पत्र दो खण्डों- खंड 'अ' और 'ब' का होगा ।

खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होगें।

खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।

भारांक :100 निर्धारित समय 3 घंटे

		खंड -अ (वस्तुपरक प्रश्न)	
		विषयवस्तु	भार
1		अपठित गद्यांश	15
	अ	एक अपठित गद्यांश (अधिकतम 300 शब्दों का) (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
	ब	दो अपठित पद्यांशों में से कोई एक पद्यांश (अधिकतम 150 शब्दों का)(1अंक x 5 प्रश्न)	5
2		पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम की इकाई एक से पाठ संख्या 1 तथा 2 पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	5
3		पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 1 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न	10
	अ	पठित काव्यांश पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	5
	ब	पठित गद्यांश पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	5
4		पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-1 से बहुविकल्पात्मक	10
	अ	पठित पाठों पर दस बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
		खंड ब (वर्णनात्मक प्रश्न)	
		विषयवस्तु	भार
5		पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से सृजनात्मक लेखन और व्यावहारिक लेखन पाठ संख्या 1, 2, 9, 10, 14, 15 तथा 16 पर आधारित	20
	1	दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (5अंक x 1 प्रश्न)	5
	2	औपचारिक पत्र लेखन । (5 अंक x 1 प्रश्न) (विकल्प सहित)	5
	3	डायरी लेखन, कथा - पटकथा विषयों पर लेखन पर आधारित दो प्रश्न (3 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 60 शब्दों में)	6
	4	स्ववृत्त लेखन और रोजगार संबंधी आवेदन पत्र तथा शब्दकोश, संदर्भ ग्रंथों की उपयोगी विधि और परिचय पर आधारित तीन में से दो प्रश्न (2 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 40 शब्दों में)	4
		पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 1	20
6	1	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	6
	2	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में)(2 अंक x 2 प्रश्न)	4
	3	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	6

	4	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न	4
7	अ	श्रवण तथा वाचन	10
	ब	परियोजना कार्य	10
कुल अंक			100

नोट - पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं।

आरोह भाग 1	काव्य खंड	कबीर (पद 2) - संतो देखत जग बौराना
		मीरा (पद 2) - पग घुंगरू बांधि मीरा नाची
		रामनरेश त्रिपाठी – पथिक (पूरा पाठ)
		सुमित्रानंदन पंत - वे आँखें (पूरा पाठ)
	गद्य खंड	कृष्णनाथ - स्पीति में बारिश (पूरा पाठ)
		सैयद हैदर रज़ा - आत्मा का ताप (पूरा पाठ)

प्रश्न-1 (क) अपठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

अपठित गद्यांश

अपठित गद्यांश के प्रश्नों को कैसे हल करें –

अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों को हल करते समय निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए

- गद्यांश को एक बार सरसरी दृष्टि से पढ़ लेना चाहिए।
- पहली बार में समझ में न आए अंशों, शब्दों, वाक्यों को गहनतापूर्वक पढ़ना चाहिए।
- गद्यांश का मूलभाव अवश्य समझना चाहिए।
- यदि कुछ शब्दों के अर्थ अब भी समझ में नहीं आते हों तो उनका अर्थ गद्यांश के प्रसंग में जानने का प्रयास करना चाहिए।
- अनुमानित अर्थ को गद्यांश के अर्थ से मिलाने का प्रयास करना चाहिए।
- गद्यांश में आए व्याकरण की दृष्टि से कुछ महत्त्वपूर्ण शब्दों को रेखांकित कर लेना चाहिए। अब प्रश्नों को पढ़कर संभावित उत्तर गद्यांश में खोजने का प्रयास करना चाहिए।
- शीर्षक समूचे गद्यांश का प्रतिनिधित्व करता हुआ कम से कम एवं सटीक शब्दों में होना चाहिए।
- प्रतीकात्मक शब्दों एवं रेखांकित अंशों की व्याख्या करते समय विशेष ध्यान देना चाहिए।
- मूल भाव या संदेश संबंधी प्रश्नों का जवाब पूरे गद्यांश पर आधारित होना चाहिए।
- प्रश्नों का जवाब गद्यांश पर ही आधारित होना चाहिए, आपके अपने विचार या राय से नहीं।

प्रश्न-1 निम्नलिखित गद्यांशों को पढकर सही विकल्पों का चयन कीजिए ।

अपठित गद्यांश-1

"इतिहास लिखने की ओर कोई जाति तभी प्रवृत्त होती है जब उसका ध्यान अपने इतिहास के निर्माण की ओर जाता है। यह बात साहित्य के बारे में उतनी ही सच है जितनी जीवन के। हिन्दी में आज इतिहास लिखने के लिए यदि विशेष उत्साह दिखाई पड़ रहा है तो यही समझा जाएगा कि स्वराज्य प्राप्ति के बाद सारा भारत जिस प्रकार सभी क्षेत्रों में इतिहास-निर्माण के लिए आकुल है उसी प्रकार हिंदी के विद्वान एवं साहित्यकार भी अपना ऐतिहासिक दायित्व निभाने के लिए प्रयत्नशील हैं। पहले भी जब साहित्य का इतिहास लिखने की परंपरा का सूत्रपात हुआ था तो संपूर्ण राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के इतिहास-निर्माण के साथ ही। यदि आरंभिक इतिहासों के इतिहास में न जाकर पं. रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास को ही लें, जो हिंदी साहित्य का पहला व्यवस्थित इतिहास माना जाता है, तो उसकी ऐतिहासिकता द्योतित करने के लिए उस युग का राष्ट्रीय आन्दोलन समानांतर दिखाई पड़ेगा। राजनीतिक इतिहास ग्रंथों का सिलसिला भी उसी ऐतिहासिक दौर में जमा। परन्तु शुक्ल जी के इतिहास के संदर्भ में जो सबसे प्रासंगिक तथ्य है वह है तत्कालीन रचनात्मक साहित्य की ऐतिहासिक क्रान्ति-कविता और कथा-साहित्य का नवीन सृजनात्मक प्रयत्न। साहित्य का वैसा इतिहास तभी संभव हुआ जब साहित्य-रचना के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक परिवर्तन आया, जब सच्चे अर्थों में इतिहास बना।

इसके अतिरिक्त, शुक्ल जी का इतिहास 'हिंदी शब्द सागर' के साथ आया था, जिसके आसपास ही पं. कामताप्रसाद गुरु का पहला प्रामाणिक 'हिंदी व्याकरण' भी निकला था। साहित्य का इतिहास, शब्दकोश एवं व्याकरण- क्या इन तीनों का एक साथ बनना आकस्मिक है ? यह तथ्य इसलिए ध्यान देने योग्य है कि आज फिर जब साहित्यिक इतिहास लिखने का उत्साह उमड़ा है तो साथ-साथ शब्दकोश और व्याकरण के संशोधन एवं परिवर्तन के प्रयत्न भी हो रहे हैं; बल्कि जिस काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने पिछले ऐतिहासिक दौर में ये तीनों कार्य किए थे, वही संस्था आज फिर बहुत बड़े पैमाने पर तीनों योजनाओं के साथ प्रस्तुत है। और चूँकि अब हिंदी का कार्यक्षेत्र पहले से कहीं अधिक व्यापक हो गया है इसलिए इस प्रकार के प्रयत्न यदि अन्य अनेक जगहों से भी हों तो स्वाभाविक ही कहा जाएगा, जैसे भारतीय हिंदी परिषद, प्रयाग की ओर से तीन

जिल्दों में प्रकाशित होनेवाला 'हिंदी-साहित्य'। इन तथ्यों से प्रमाणित होता है कि आज भी हिंदी उन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पूर्णतः तत्पर है, जो कि उससे अपेक्षित भाषाएँ जो कार्य काफी पहले कर चुकी हैं उसे थोड़े समय में ही जल्द से जल्द पूरा करके हिंदी भी सबके साथ आ जाना चाहती है, बल्कि संभव हुआ तो आगे निकल जाने के लिए भी आकुल है। सभा एवं परिषद के बृहद्-मध्यम इतिहास अनायास ही 'कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंगलिश लिटरेचर' और 'ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंगलिश लिटरेचर' की याद दिला देते हैं। जैसा कि इन हिंदी इतिहासों का मंतव्य स्पष्ट किया गया है, 'कोई एक लेखक सभी विषयों पर विशेषज्ञता की दृष्टि से विचार नहीं कर सकता है, इसलिए विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के सहयोग से ऐसा इतिहास प्रस्तुत किया जाए जिसमें नवीनतम खोजों और नवीन व्याख्याओं का समुचित उपयोग हो सके।' ऐसे संदर्भ-ग्रंथों की एक निश्चित उपयोगिता है, किन्तु यह उनकी अनिवार्य सीमा भी है। इस सीमा को ध्यान में रखकर ही साहित्यिक इतिहास पर पुनर्विचार संभव है।"

(i) प्रस्तुत गद्यांश में किस विषय पर बात हुई है?

(क) साहित्य का निर्माण (ख) इतिहास निर्माण

(ग) हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन (घ) इतिहास लेखन

(ii) किस समय से इतिहास लेखन में हिन्दी के विद्वानों ने व्याकुलता दिखाईं?

(क) और इतिहास लिखे जाने के बाद (ख) स्वतंत्रता के बाद

(ग) शब्दकोश के निर्माण के बाद (घ) कथा साहित्य के आने के बाद

(iii) साहित्यिक इतिहास की सीमा क्या है?

(क)शब्दकोश (ख)पुनर्विचार (ग) मध्य इतिहास (घ) उसकी उपयोगिता

(iv) वर्तमान में हिन्दी का कार्यक्षेत्र कैसा है?

(क) सबसे आगे (ख)व्यापक (ग) कम (घ) सिमटा हुआ

(v) भारतीय हिंदी परिषद कहाँ स्थित है?

(क) लखनऊ (ख) काशी (ग) प्रयाग (घ) बनारस

(vi) शुक्ल जी का इतिहास किसके साथ आया था?

(क) हिन्दी शब्द सागर (ख) हिन्दी व्याकरण (ग) मध्यकालीन इतिहास (घ) आधुनिक काल का इतिहास

(vii) साहित्य का इतिहास लिखना कैसे संभव हुआ?

(क) हिन्दी व्याकरण के आने से (ख) लिखने आने पर

(ग) साहित्य की रचना में परिवर्तन होने पर (घ) कुछ समय बीतने पर

(viii) इतिहास लिखने की ओर कोई प्रवृत्त कब होता है?

(क) युग की समाप्ति के बाद (ख) जब कुछ इतिहास हो जाता है

(ग) जब सही समय आता है (घ) जब इतिहास निर्माण की जरूरत होती है

(ix) इतिहास लेखन का कार्य किस संस्था ने पहले किया था?

(क) नागरी प्रचारिणी सभा (ख) काशी सभा (ग) रामचन्द्र शुक्ल (घ) हिन्दी इतिहास संस्था **(x) हिंदी साहित्य का पहला व्यवस्थित इतिहास किसके इतिहास को माना जाता है?**

(क) नामवर सिंह (ख) रामचन्द्र शुक्ल (ग) हजारी प्रसाद द्विवेदी (घ) कामताप्रसाद गुरु

उत्तर

प्रश्न सं .	i	ii	iii	iv	v	vi	vii	viii	ix	x
उत्तर	(ग)	(क)	(घ)	(ख)	(ग)	(क)	(ग)	(घ)	(क)	(ख)

अपठित गद्यांश-2

"इतिहास से विरासत में आपको भारतीय संगीत जैसी अमूल्य निधि मिली है। अन्य देशों के संगीतों की अपेक्षा इसमें जो विशिष्टता है, वह उन मान्यताओं के कारण है जो संगीत के संबंध में हमारे पूर्वजों की थी। भारत में संगीत क्षणिक आमोद-प्रमोद या अतृप्त तृष्णा की वस्तु न होकर, समस्त ब्रह्मांड से ऐक्य का आभास है, आनंद प्रदान करने वाला आध्यात्मिक साधन है और मानव को बह्म तक ले जाने वाला मार्ग है। संगीत के इस स्वभाव और ध्येय को हमारे देश के लोगों ने हमारी सभ्यता के प्रारंभ में ही पहचान लिया था और संगीत का विकास इन्हीं आदर्शों के अनुकूल किया था।

उन्होंने संगीत और जीवन में किसी प्रकार की दीवार नहीं खड़ी की। यह कहना अनुचित न होगा कि उन्होंने संगीत को हमारे जीवन में इस प्रकार बुन दिया कि सहस्राब्दियों के पश्चात् भी वह उसका अविच्छिन्न अंग बना हुआ है। संसार में संभवत: ऐसा अन्य कोई देश नहीं है जहाँ संगीत इतने पुराने युग से जन-जीवन में इतना व्याप्त हो जितना कि भारत में भारतवासियों के अधिक संगीतप्रेमी होने की बात का उल्लेख मेगस्थनीज भी कर गया है। दूसरी शताब्दी ई.पू. में लिखे गए 'इंडिका' नामक अपने ग्रंथ में एरियन मेगस्थनीज का यह कथन उद्धत है कि "सब जातियों की अपेक्षा भारतीय लोग संगीत के कहीं अधिक प्रेमी है।

सहस्त्रों वर्षों से हमारे घरेलू और सांसारिक जीवन में लगभग सभी काम किसी-न-किसी प्रकार के संगीत से प्रारंभ होते रहे हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक यह संगीत हमारे साथ बना रहता है। जिस दिन बालक संसार में अपनी आँखे खोलता है, उस दिन से ही संगीत से भी उसका परिचय हो जाता है। नामकरण, कर्णछेदन, विवाह आदि में तो संगीत होता ही है। ऐसा कोई तीज-त्योहार नहीं होता, ऐसा कोई पर्व और संस्कार नहीं होता जिसमें संगीत न हो। घर में ही क्यों, हमारे यहाँ खेल में और चौपाल में, चक्की चलाने और धान कूटने के समय भी संगीत चलता ही रहता है। यह हमारे जन-जीवन के उल्लास को प्रकट करने का तो प्रभावी साधन है ही, साथ ही साथ उसको गतिमान बनाने का भी प्रबल अस्त्र है। संगीत रचनात्मक कार्यों में अग्रसर होने की सामूहिक स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करता है और वह सामूहिक शक्ति देता है, जो हमें उन कार्यों को करने के योग्य बना देती है, जिन्हें हम अकेले या समूह में संगीत की प्रेरणा के बिना नहीं कर पाते।"

(i) प्रस्तुत गद्यांश किस विषयवस्तु पर आधारित है?

(क) इतिहास के पृष्ठों पर भारत (ग) इतिहास की प्रसिद्ध पुस्तक
(ख) भारतीय संगीत की विशाल परंपरा (घ) विभिन्न कर्मकांडों का व्यक्ति पर प्रभाव

(ii) भारतीय संगीत में अन्य देशों के संगीत की अपेक्षा क्या विशेषता है?

(क) संपूर्ण ब्रह्मांड से ऐक्य करने का आभास है
(ख) मानव को वास्तविकता से विमुख करना
(ग) मानव को ब्रह्म बना देना
(घ) कृत्रिम वातावरण उपस्थित कर कल्पना लोक में ले जाना

(iii) मनुष्य को ब्रह्म तक ले जाने का मार्ग किसे कहा गया है?

(क) संगीत को (ख) आदर्शों को (ग) ईश्वर को (घ) गुरु को

(iv) संसार का ऐसा कौन-सा देश है, जहाँ संगीत पुराने समय से मानव जीवन का हिस्सा रहा हो?

(क) एशिया (ख) जापान (ग) तुर्किस्तान (घ) भारत

(v) इतिहास में भारतीयों की संगीतप्रियता का उल्लेख किससे मिलता है?

(क) पर्व-त्योहार से (ख) इंडिका ग्रंथ से (ग) संस्कारों से (घ) सामूहिक कार्यक्रम से

(vi) निम्नलिखित में से किस संस्कार में संगीत नहीं मिलता है?

(क) नामकरण (ख) विवाह (ग) कर्ण छेदन (घ) इनमें से कोई नहीं

(vii) जन-जीवन के उल्लास को प्रकट करने का प्रभावी साधन क्या है?

(क) त्योहार (ख) पर्व (ग) संगीत (घ) रीति रिवाज

(viii) सामूहिक रचनात्मक कार्यों में संगीत का क्या प्रभाव होता है?

(क) शिथिलता प्रदान करना (ग) स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करना

(ख) अकेलेपन का अनुभव करना (घ) कार्य करने योग्य ना छोड़ना

(ix) हमारे घरेलू जीवन में संगीत कहाँ व्याप्त दिखाई देता है?

(क) चक्की चलाने में (ख) चौपाल में (ग) धान कूटने में (घ) यह सभी

(x) अन्य देशों की अपेक्षा भारतीय संगीत की विशिष्टता का क्या कारण रहा है?

(क) भारतीयों का संगीत प्रेमी होना (ग) संगीत के संबंध में पूर्वजों की मान्यताएं होना

(ख) मानव हेतु संगीत का होना (घ) जनजीवन द्वारा संगीत की उपेक्षा करना

उत्तर-

प्रश्न सं .	i	ii	iii	iv	v	vi	vii	viii	ix	x
उत्तर	ख	क	क	घ	ख	क	ग	ग	घ	क

अपठित गद्यांश-3

"कर्तव्य-पालन और सत्यता में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। जो मनुष्य अपना कर्तव्य-पालन करता है, वह अपने कामों और वचनों में सत्यता का बर्ताव भी रखता है। वह ठीक समय पर उचित रीति से अच्छे कामों को करता है। सत्यता ही एक ऐसी वस्तु है, जिससे इस संसार में मनुष्य अपने कार्यों में सफलता पा सकता है, क्योंकि संसार में कोई कार्य झूठ बोलने से नहीं चल सकता। यदि किसी के घर सब लोग झूठ बोलने लगे तो उस घर में कोई कार्य न हो सकेगा और सब लोग बड़ा दु:ख भोगेंगे। इसलिए हम लोगों को अपने कार्यों में झूठ का बर्ताव नहीं करना चाहिए। अतएव सत्यता को सबसे ऊँचा स्थान देना उचित है। संसार में जितने पाप हैं, झूठ उन सभी से बुरा है। झूठ की उत्पत्ति पाप, कुटिलता और कायरता के कारण होती है। बहुत-से लोग सच्चाई का इतना थोड़ा ध्यान रखते हैं कि अपने सेवकों को स्वयं झूठ बोलना सिखाते हैं। पर उनको इस बात पर आश्चर्य करना और क्रुद्ध न होना चाहिए, जब उनके नौकर भी उनसे अपने लिए झूठ बोलें।

बहुत-से लोग नीति और आवश्यकता के बहाने झूठ की रक्षा करते हैं। वे कहते हैं कि इस समय इस बात को प्रकाशित न करना और दूसरी बात को बनाकर कहना, नीति के अनुसार समयानुकूल और परम आवश्यक है। फिर बहुत-से लोग किसी बात को 'सत्य-सत्य' कहते हैं कि जिससे सुनने वाला यह समझे कि यह बात सत्य नहीं, वरन् इसका जो उल्टा है वही सत्य होगा। इस प्रकार से बातों का कहना झूठ बोलने के पाप से किसी प्रकार कम नहीं है।

संसार में बहुत-से ऐसे भी नीच और कुत्सित लोग होते हैं, जो झूठ बोलने में अपनी चतुराई समझते हैं और सत्य को छिपाकर धोखा देने या झूठ बोलकर अपने को बचा लेने में अपना परम गौरव मानते हैं। ऐसे लोग ही समाज को नष्ट करके दु:ख और सन्ताप के फैलाने के मुख्य कारण होते हैं। इस प्रकार झूठ बोलना स्पष्ट न बोलने से अधिक निन्दित और कुत्सित कर्म है।

विधाता-रचित इस सृष्टि का सिरमौर है मनुष्य। उसकी कारीगरी का सर्वोत्तम नमूना! इस मानव को ब्रह्मांड का लघु रूप मानकर भारतीय दार्शनिकों ने 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्मांडे' की कल्पना की थी। उनकी

यह कल्पना मात्र कल्पना नहीं थी, प्रत्युत यथार्थ भी थी क्योंकि मानव-मन में जो विचारणा के रूप में घटित होता है, उसी का कृति रूप ही तो सृष्टि है। मन तो मन, मानव का शरीर भी अप्रतिम है"

(i) कैसे लोग झूठ बोलने में अपनी चतुराई समझते हैं?

(क) समझदार लोग (ख) बेईमान लोग (ग) नीच और कुत्सित लोग (घ) सामान्य लोग

(ii) सृष्टि का सिरमौर किसे कहा गया है?

(क) पशुओं को (ख) पक्षियों को (ग) मनुष्य को (घ) प्रकृति को

(iii) भारतीय दार्शनिकों ने 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्मांडे' की कल्पना किस आधार पर की थी?

(क) मानव को ब्रह्मांड का लघु रूप मानकर (ख) मानव को सृष्टि सिरमौर मनाकर

(ग) मनुष्य को विधाता की सर्वोत्तम कृति मनाकर (घ) नीच और कुत्सित मनाकर

(iv) झूठ बोलना स्पष्ट न बोलने से अधिक निन्दित और कुत्सित कर्म है। कैसे?

(क) झूठ बोलने वाले लोग समाज को नष्ट करते हैं।

(ख) झूठ बोलने वाले लोग समाज में संताप को फैलाते हैं।

(ग) झूठ बोलने वाले नीच और कुत्सित लोग होते हैं

(घ) उपर्युक्त सभी

(v) बहुत-से लोग नीति और आवश्यकता के बहाने झूठ की रक्षा करते हैं। कौन-सा विकल्प प्रासंगिक नहीं है?

(क) इस समय इस बात को प्रकाशित न करना

(ख) दूसरी बात को बनाकर कहना

(ग) नीति के अनुसार समयानुकूल और परम आवश्यक है।

(घ) बहुत-से लोग किसी बात को 'सत्य-सत्य' कहते हैं।

(vi) झूठ की उत्पत्ति किस कारण नहीं होती है?

(क) पाप के (ख) सत्य के (ग) कायरता के (घ) कुटिलता के

(vii) 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्मांडे' की कल्पना किसने की थी।

(क) भारतीय संस्कृति ने (ख) भारतीय दार्शनिकों ने

(ग) भारतीय वैज्ञानिकों ने (घ) भारतीय विचारकों ने

(viii) मानव के किस कृति रूप को ही सृष्टि माना गया है?

(क) कल्पना को (ख) मन की विचारणा को (ग) मन के भावों को (घ) अनुभूतियों को

(ix) किस के सहारे मनुष्य सफलता प्राप्त कर सकता है?

(क) झूठ के (ख) पाप के (ग) पुण्य के (घ) सत्य के

(x) 'दार्शनिक' शब्द में प्रत्यय हैं-

(क) दर्शन (ख) दर्स (ग) ईक (घ) इक

उत्तर-

प्रश्न सं .	i	ii	iii	iv	v	vi	vii	viii	ix	x
उत्तर	ग	ग	ग	घ	ग	ख	ख	ख	ख	घ

अपठित गद्यांश-4

"जीवात्मा संसार में आते ही भिन्नत्व को प्राप्त होता है। कोई गरीब है, कोई अमीर है। कोई झुग्गी-झोपडी में जन्म लेता है और पूरा जीवन अभावग्रस्त,रोग,भूख,शोक,अपमान की स्थिति में रहकर हर पल जीता हुआ संसार से कूच कर जाता है। कोई किसी संपन्न घराने में जन्म लेता है,जहाँ सब सुख-सुविधाएँ,पद-प्रतिष्ठा,मान-सम्मान का बाहुल्य होता है। किसी को दीर्घायु प्राप्त होती है,तो कोई अकाल ही कालग्रस्त हो जाता है। यह विषमता संसार में जीवात्मा के साथ कारण चाहती है,जो प्रत्यक्ष या परोक्ष में दृष्टिगोचर नहीं

होती। तब साधारणतया हम सब सोचने लगते हैं कि तकदीर का ही खेल है। भाग्य प्रबल होता है। ऐसा भी मानना पड़ता है कि आत्मा अविनाशी है और यह विषमता हमारे साथ पूर्व जन्म के कर्मों के कारण उपस्थित है।

कोई मिट्टी में हाथ डालता है,तो उसके पास अपार धन हो जाता है और कई बार कोई सम्पन्नता की उँचाई से ऐसा गिरता है कि सब कुछ मिट्टी हो जाता है। शायद इसीलिये हमलोग तकदीर का रोना रोते हैं और भाग्य पलटने की कई उल्टी-सीधी जुगतें लगाते हैं। कई लोग तो जादू-टोना,धागा-ताबीज,झाड़-फूँक या फिर किसी पाखंडी ज्योतिषी का सहारा लेते हैं। जब ऐसे मिथ्याचार व अंधविश्वासों से कुछ नहीं होता तो भाग्य को प्रबल मान कर बैठ जाते हैं। मनीषी कहते हैं कि पुरुषार्थी भाग्य का निर्माण स्वयं करते हैं। केवल आलसी भाग्य को कोसते हैं। पुरुषार्थी आलस्यरहित रहना ठीक समझता है। साधारणतया जिसे हम भाग्य या प्रारब्ध कहते हैं वह हमारे पूर्व-संचित कर्म ही होते हैं। श्रेष्ठ पुरुष दौड़ लगाते हैं, आगे चलते हैं, उनके पीछे और लोग चलते हैं।जो दौड़ता है उसे लक्ष्य मिलने की सम्भावना अधिक होती है। घर के अन्दर पलंग पर पड़े-पड़े हम केवल कमरों को ही देख सकते हैं। महाराज भर्तृहरि ने मनुष्यों को तीन श्रेणियों में बाँटा था। अधम,मध्यम,उत्तम।अधम क्लेश के डर से कोई काम प्रारम्भ नहीं करते।मध्यम लोग कार्य प्रारम्भ तो कर देते हैं, परंतु कोई विघ्न पड़ने पर दुखी होकर बीच में छोड़ देते हैं परंतु उत्तम लोग बार-बार विघ्न आने पर भी प्रारम्भ किये काम को नहीं छोड़ते,वरन उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। ऐसे लोग पुरुषार्थी कहलाते हैं। उपनिषद कहते हैं-चरैवेति,चरैवेति अर्थात चलते रहो,चलते रहो। हर स्थिति और परिस्थिति में आगे बढ़ने का नाम ही जीवन है। गुरु नानक ने कहा था कि आयु का एक क्षण संसार के सब रत्नों को देकर भी नहीं पाया जा सकता। जो हमारा समय निकल गया उसकी चिंता छोड़ें। जो जीवन शेष बचा है उसके बारे में विचार करें, सँभालें। गीता का सर्वप्रिय उपदेश भी यही है कि फल की चिंता किये बिना सत्कर्मों में प्रवृत्त हो जाएं और अपने इस देव-दुर्लभ जीवन को सफल बनाएं"

(i) जीवात्मा के भिन्नत्व से तात्पर्य है-

(अ) अमीरी-गरीबी (ब) दीर्घायु-अल्पायु जीवन (स) विनाशी-अविनाशी आत्मा (द) 'अ' और 'ब' दोनों

(ii) सांसारिक विषमता को देखकर हमसब क्या सोचने लग जाते हैं-

(अ) तकदीर का ही खेल है (ब) रिश्तों की उपेक्षा है

(स) सम्पर्कों का प्रभाव है (द) नैतिक पतन है

(iii) पुरुषार्थी क्या करते है-

(अ) भाग्य का रोना रोते हैं (ब) हारकर बैठ जाते हैं

(स) भाग्य का निर्माण स्वयं करते हैं (द) सरकारों को कोसते हैं

(iv) प्रारब्ध क्या है-

(अ) आत्मा का रूप (ब) पूर्वसंचित कर्म (स) भिन्न-भिन्न जीवन (द) आदर्श व्यक्ति

(v) भर्तृहरि के अनुसार मनुष्य होते हैं-

(अ) अधम (ब) मध्यम (स) उत्तम (द) दिये गए तीनों

(vi) मध्यम श्रेणी के लोग.....।

(अ) कार्य प्रारम्भ नहीं करते (ब) कार्य पूर्ण करते हैं

(स) बहस करते हैं (द) कार्य बीच में ही छोड़ देते हैं

(vii) आलसी व्यक्ति को किस श्रेणी में रखा जा सकता है-

(अ) अधम (ब) मध्यम (स) उत्तम (द) इनमें से कोई नहीं

(viii) 'चलते रहो,चलते रहो' किसका उपदेश है-

(अ) गुरु नानक का (ब) उपनिषद का (स) आलसी व्यक्ति का (द) अंधविश्वासी का

(ix) गीता का उपदेश है-

(अ) अवसर खोजो (ब) अंधविश्वासी बनो

(स) कर्म करो, फल की चिंता नहीं (द) फल की चिंता करो,कर्मों की नहीं

(x) 'अविनाशी" शब्द का अर्थ होगा-

(अ) भाग्यवादी (ब) पुरुषार्थी (स) अमर (द) नष्ट होने वाला

उत्तर-

प्रश्न सं .	i	ii	iii	iv	v	vi	vii	viii	ix	x
उत्तर	घ	क	ग	ख	ख	घ	क	ख	ग	घ

अपठित गद्यांश-5

"विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का स्वर्णिम काल कहलाता है। यही वह काल है, जब मानव अपनी सोई हुई शक्तियों को पूर्ण रूप से विकसित करने में सक्षम होता है और वह समाज का उपयोगी अंश बनने की शिक्षा ग्रहण कर पाता है। इसी विद्यार्थी काल में मानव का शरीर और मस्तिष्क विकसित हो पाता है। इसी समय में विद्यार्थी अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने का महत्व समझ जाता है। विद्यार्थी को अपने विद्यार्थी काल में ही परिवार, समाज तथा अपने देश के प्रति अपने कर्तव्यों तथा दायित्वों का आभास हो पाता है। इसी काल में वह अपने अधिकारों को समझकर आदर्शों एवं मूल्यों को आत्मसात् कर लेता है तथा संपूर्ण मानव जाति के कल्याण का व्रत धारण करता है। शाब्दिक अर्थों में विद्या का अध्ययन करने वाला व्यक्ति ही विद्यार्थी कहलाता है। विद्यार्थी के जीवन का लक्ष्य विद्या प्राप्त करना ही नहीं होता है, बल्कि इसके साथ ही चरित्र निर्माण, शारीरिक, मानसिक एवं अन्य आदर्शों तथा गुणों को ग्रहण करने की ओर भी विशेष ध्यान देना होता है। विद्यार्थी के लिए मात्र पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं होता है। आजकल लोग पुस्तकों को पढ़ने वाले को ही मानते हैं। पुस्तकों को आधुनिक काल में ज्ञान प्राप्ति का साधन माना जाता है। विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त करने के लिए कठोर त्याग भी करना आवश्यक होता है।

आज हम आए दिन सुनते हैं कि अमुक विद्यार्थी ने अपने गुरु के साथ अभद्र व्यवहार किया या साथियों के साथ झगड़ा किया। घर में माता-पिता का अपमान किया। ये सब बातें उन विद्यार्थियों की होती है जिनका चरित्र, आचरण और व्यवहार खराब होता है। पहले तथा आज भी आदर्श विद्यार्थियों की अलग ही पहचान होती है। आदर्श विद्यार्थी अपने गुरु के प्रति आस्था रखते हैं। गुरु भी अपने शिष्य को अपनी सन्तान की तरह मानते हैं। जिस विद्यार्थी या मानव का चरित्र खराब हो जाता है उसे अपने परिवार में ही नहीं अपितु संपूर्ण समाज में सम्मान प्राप्त नहीं होता है। अंग्रेजी में एक कहावत है-स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। मानव को अपने मस्तिष्क को सुचारू रूप से चलाने के लिए साफ-सुथरा एवं स्वस्थ होना चाहिए"

(i) किस काल को मनुष्य के जीवन का स्वर्णिम काल कहा गया है?

(क) कामकाजी जीवन को (ख) वैवाहिक जीवन को (ग) सांसारिक जीवन (घ) विद्यार्थी जीवन को

(ii) यही वह काल है, जब मानव अपनी सोई हुई शक्तियों को पूर्ण रूप से विकसित करने में सक्षम होता है?

(क) यौवन काल (ख) विद्यार्थी काल (ग) वृद्धावस्था काल (घ) बाल्यकाल

(iii) विद्यार्थी के जीवन का लक्ष्य विद्या प्राप्त करना ही नहीं होता है? (कौन-सा संगत नहीं है)

(क) चरित्र निर्माण (ख) शारीरिक विकास (ग) मानसिक विकास (घ) भौतिक विकास

(iv) जिन विद्यार्थियों का चरित्र और आचरण ख़राब होता है वे क्या करते हैं?

(क) गुरु के साथ अभद्र व्यवहार (ख) साथियों के साथ झगड़ा

(ग) माता-पिता का अपमान (घ) ये सभी

(v) किसे अपने परिवार और समाज में सम्मान प्राप्त नहीं होता?

(क) चरित्रवान व्यक्ति को (ख) स्वस्थ व्यक्ति को (ग) चरित्रहीन व्यक्ति को (घ) बौद्धिक व्यक्ति को

(vi) किस प्रकार के विद्यार्थियों को गुरु अपनी संतान की तरह मानते थे?

(क) अपराधी विद्यार्थियों को (ख) आदर्श विद्यार्थियों को
(ग) चरित्रहीन विद्यार्थियों को (घ) असत्य बोलने वाले विद्यार्थियों को

(vii) विद्यार्थी शब्द का अर्थ है?

(क) विद्या से अर्थ प्राप्त करने वाला (ख) विद्या का अर्थ जानने वाला
(ग) विद्या का अध्ययन करने वाला (घ) विद्या का अध्ययन कराने वाला

(viii) विद्यार्थी अपने विद्यार्थी काल में कौन-सा काम नहीं करता है?

(क) परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह
(ख) देश के प्रति अपने कर्तव्यों तथा दायित्वों निर्वाह
(ग) अपने अधिकारों को समझकर आदर्शों एवं मूल्यों को आत्मसात् नहीं करना
(घ) संपूर्ण मानव जाति के कल्याण का व्रत धारण करना

(ix) "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।" वाक्य का भाव है?

(क) स्वस्थ व्यक्ति सब कर सकता है (ख) स्वस्थ मस्तिष्क सब कर सकता है
(ग) स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन व्यक्ति के विकास के पूरक हैं
(घ) स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क एक दूसरे के विपरीत हैं

(x) 'इक' प्रत्यय से निर्मित शब्द नहीं है?

(क) शारीरिक (ख) मानसिक (ग) सामाजिक (घ) नायक

उत्तर-

प्रश्न सं .	i	ii	iii	iv	v	vi	vii	viii	ix	x
उत्तर	घ	ख	घ	घ	क	ख	ग	ग	ग	घ

प्रश्न-1 (ख) अपठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

अपठित पद्यांश-1

"साक्षी है इतिहास हमीं पहले जागे हैं,
जाग्रत सब हो रहे हमारे ही आगे हैं।
शत्रु हमारे कहाँ नहीं भय से भागे हैं?
कायरता से कहाँ प्राण हमने त्यागे हैं?
हैं हमीं प्रकंपित कर चुके, सुरपति तक का भी हृदय।
फिर एक बार हे विश्व तुम, गाओ भारत की विजय।।
कहाँ प्रकाशित नहीं रहा है तेज हमारा,
दलित कर चुके शत्रु सदा हम पैरों द्वारा।
बतलाओं तुम कौन नहीं जो हमसे हारा,
पर शरणागत हुआ कहाँ कब हमें न प्यारा !
बस युद्ध मात्र को छोड़कर कहाँ नहीं है हम सदय !
फिर एक बार हे विश्व तुम, गाओ भारत की विजय"

(i) पद्यांश में 'हमीं' पद प्रयुक्त हुआ है:

(क) भारतीयों के लिए (ख) देश के लिए (ग) भारत के लिए (घ) इनमें से कोई नहीं

(ii) भारत किन क्षेत्रों में अग्रणी रहता आया है?

(क) शौर्य में (ख) ज्ञान- विज्ञान में (ग) शांति के प्रसार में (घ) उक्त सभी में

(iii) भारत शरणागत के साथ कैसा व्यवहार करता है?

(क) शरणागत के प्रति उदासीन रहता है (ग) शरणागत को प्रेमपूर्वक अपना लेता है

(ख) शत्रुता का भाव रखता है (घ) उक्त सभी

(iv) हम सदय नहीं है:

(क) मित्रता में (ख) युद्धों में (ग) संधियों में (घ) इनमें से कोई नहीं

(v) <u>प्रकंपित</u> में प्रयुक्त उपसर्ग है :

(क) प्रम् (ख) प्र (ग) प्रंक (घ) इत

उत्तर गद्यांश – 1

1	2	3	4	5
क	घ	ग	ख	ख

अपठित पद्यांश-2

"भारत माता का मंदिर यह, समता को संवाद जहाँ।
सबका शिव कल्याण यहाँ पाएँ सभी प्रसाद यहाँ।
जाति-धर्म या संप्रदाय का, नहीं भेद व्यवधान यहाँ
सबका स्वागत, सबका आदर, सबका सम्मान यहाँ।
राम-रहीम, बुद्ध ईसा का, सुलभ एक-सा ध्यान यहाँ।
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के, गुण-गौरव का ज्ञान यहाँ।
नहीं चाहिए बुद्धि वैर की, भला प्रेम उन्माद यहाँ।
सब तीर्थों का एक तीर्थ यह, हृदय पवित्र बना लें हम।
रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने मन के चित्र बना लें हम।
सौ-सौ आदर्शों को लेकर, एक चरित्र बना लें हम।
कोटि-कोटि कंठों से मिलकर, उठे एक जयनाद यहाँ।
सबका शिव कल्याण यहाँ है, पाएँ सभी प्रसाद यहाँ"

(i) कवि किस मंदिर की बात कर रहा है?

(क) शिव मंदिर (ख) शक्ति मंदिर (ग) राम-सीता मंदिर (घ) भारत माता

(ii)"जाति-धर्म या संप्रदाय का, नहीं भेद व्यवधान यहाँ" का क्या तात्पर्य है?

(क) समानता का भाव है (ग) असमानता का भाव है

(ख) जाति धर्म का भेद है (घ) इनमेंसे कोई नहीं

(iii) सबका आदर सम्मान कहाँ होता है?

(क) भारत देश में (ख) ईरान (ग) चीन में (घ) पाकिस्तान में

(iv) हम सबके मित्र कैसे बन सकते हैं?

(क) वैरभाव से (ख) आपसी भेदभाव से (ग) वैर-बुद्धिको त्यागकर (घ) विषम दृष्टिकोण से

(v) एकता के सूत्र में बाँधने के लिए क्या प्रयास किया गया है?

(क) अपने मन के चित्र बनाना (ग) एक चरित्र बनाना

(ख) विभिन्न प्रकार के आदर्शों को ग्रहण करना (घ) उक्त सभी

उत्तर गद्यांश – 2

1	2	3	4	5
घ	क	क	ग	घ

अपठित पद्यांश-3

"मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है,
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है?
जिसके चरण निरन्तर रत्नेश धो रहा है,
मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है?
नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं,
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है?
जिसके बड़े रसीले फल, कन्द, नाज, मेवे,
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है?
जिसमें सुगन्ध वाले, सुन्दर प्रसून प्यारे,
दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है?
मैदान, गिरि, वनों में हरियालियाँ लहकती,
आनन्दमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है?
जिसकी अनन्त धन से, धरती भरी पड़ी है,
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है?"

(i) भारत का मुकुट किसे कहा गया है?

(क) रत्नेश (ख) हिमालय (ग) स्वर्ग (घ) उक्त सभी

(ii) भारत बसा हुआ है:

(क) स्वर्ग में (ख) हिमालय में (ग) मैदानों में (घ) प्रकृति की जो गोद में

(iii) "सींचा हुआ सलोना' से क्या तात्पर्य है?

(क) अमृत धाराओं वाली नदियों के सिंचन से सुन्दर (ग) केवल 'क'

(ख) रत्नेश द्वारा चरणों के सिंचन से सुन्दर (घ) 'क' व 'ख' दोनो

(iv) भारत देश को संसार का शिरोमणि क्यों कहा गया है?

(क) खेतों की उत्पादकता की प्रचुरता के कारण (ख) प्राकृतिक सौंदर्य के कारण

(ग) अपूर्व खनिज-संपदा के कारण (घ) उक्त सभी

(v) 'दिन-रात' में समास है-

(क) द्वंद्व (ख) तत्पुरुष (ग) कर्मधारय (घ) बहुव्रीहि

उत्तर गद्यांश – 3

1	2	3	4	5
ख	घ	घ	घ	क

अपठित पद्यांश-4

"अर्जुन देखो, किस तरह कर्ण, सारी सेना पर टूट रहा,
किस तरह पाण्डवों का पौरुष होकर अशंक वह लूट रहा।
देखो, जिस तरफ, उधर उसके ही बाण दिखायी पड़ते हैं,
बस, जिधर सुनो, केवल उसकी हुँकार सुनायी पड़ते हैं।
कैसी करालता ! क्या लाघव! कैसा पौरुष! कैसा प्रहार।
किस गौरव से यह वीर द्विरद कर रही समर-वन में विहार।
व्यूहों पर व्यूह फटे जाते, संग्राम उजड़ता जाता है,
ऐसी तो नहीं कमलवन में भी कुंजर धूम मचाता है।
इस पुरुष-सिंह का समर देख मेरे तो हुए निहाल नयन,
कुछ बुरा न मानो, कहता हूँ मैं आज एक चिर गूढ़ वचन।
कर्ण के साथ तेरा बल भी मैं खूब जानता आया हूँ।
मन ही मन तुझसे बड़ा वीर पर, इसे मानता आया हूँ।
औ' देख चरम वीरता आज तो यही सोचता हूँ मन में।
है भी जो कोई जीत सके, इस अतुल धनुर्धर को रण में?"

(i) श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कर्ण की किस बात की प्रशंसा की है?

(क) पराक्रम की (ख) मित्रता की (ग) शांत स्वाभाव की (घ) इनमें से कोई नहीं

(ii)कर्ण को कवि ने 'कमल-वन' में किसके समान बताया है?

(क) पुरुष-सिंह के समान (ख) कुंजर के समान (ग) धनुर्धर के समान (घ) कौरव के समान

(iii) श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कौन-सा गूढ़ वचन बताया?

(क) कर्ण और अर्जुन दोनों सामान रूप से बलशाली हैं
(ख) कर्ण अर्जुन से अधिक बलशाली हैं
(ग) अर्जुन कर्ण से अधिक बलशाली है
(घ) इनमें से कोई नहीं

(iv) कर्ण के युद्ध कौशल को देखकर कृष्ण उसके बारे में क्या सोच रहे थे?

(क) कर्ण वीरता की चरम सीमा है
(ख) कर्ण को शायद ही कोई जीत सके!
(ग) केवल 'क'
(घ) 'क' और 'ख' दोनों

(v) 'पुरुष-सिंह' में अलंकार है:

(क) उत्प्रेक्षा (ख) उपमा (ग) रूपक (घ) श्लेष

उत्तर गद्यांश –4

1	2	3	4	5
क	ख	ख	घ	ग

अपठित पद्यांश-5

"मत रोक मुझे भयभीत न कर, मैं सदा कटीली राह चला।
पथ-पथ मेरे पतझारों में नव सुरभि भरा मधुमास पला।
फिर कहाँ डरा पाएगा यह पगले! जर्जर संसार मुझे।
इन लहरों के टकराने पर, आता रह-रह कर प्यार मुझे।

मैं हूँ अपने मन का राजा, इस पार रहूँ उस पार चलें।
मैं मस्त खिलाड़ी हूँ ऐसा जी चाहे जीतू, हार चलें॥
मैं हूँ अनाथ, अविराम अथक, बंधन मुझको स्वीकार नहीं।
मैं नहीं अरे ऐसा राही, जो बेबस-सा मन मारे चलें॥
कब रोक सकी मुझको चितवन, मदमाते कजरारे घन की।
कब लुभा सकी मुझको बरबस, मधु-मस्त फुहारें सावन की।
जो मचल उठे अनजाने ही अरमान नहीं मेरे ऐसे –
राहों को समझा लेता हूँ सब बात सदा अपने मन की।
इन उठती-गिरती लहरों का कर लेने दो शृंगार मुझे।
इन लहरों के टकराने पर आता रह-रह कर प्यार मुझे।।"

(i) पद्यांश में 'लहरें' किसकी प्रतीक है?

(क) जीवन की (ग) बंधनों की
(ख) जीवन में होने वाली उथल-पुथल की (घ) आशाओं की

(ii) पद्यांश में कवि की कौनसी विशेषता नहीं बतलाई गई?

(क) मन का राजा (ख) खिलाड़ी (ग) अनाथ (घ) संन्यासी

(iii) कवि राहों में किस मनोभाव के साथ आगे बढ़ता है?

(क) उदासीनता (ख) निराशा (ग) बेमन (घ) उत्साह

(iv) जीवन को कंटीली राह क्यों कहा गया है?

(क) जीवन की सरलता के कारण (ग) संघर्षों से भरा होने के कारण
(ख) राहों में बिखरे काँटों के कारण (घ) रास्ते की विषमता के कारण

(v) 'जर्जर संसार' में <u>संसार</u> पद है:

(क) सर्वनाम (ख) विशेषण (ग) विशेष्य (घ) इनमें कोई नहीं

उत्तर गद्यांश – 5

1	2	3	4	5
ख	घ	घ	ग	ग

प्रश्न-2 अभिव्यक्ति और माध्यम पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

जनसंचार माध्यम और लेखन

स्मरणीय बिन्दु-

अर्थ- चर् धातु से उत्पन्न संचार शब्द का अर्थ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना है। दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचनाओं, विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान संचार कहा जाता है।

विल्बर श्रेम (प्रसिद्ध संचार शास्त्री) के अनुसार संचार अनुभवों की साझेदारी है।

संचार- संचार जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। सभी जीव संचार करते है। परन्तु मनुष्य बौद्धिक रूप से विकसित होने के कारण सर्वोत्तम संचार करता है। संचार माध्यमों के विकास से भौगोलिक दूरियाँ कम हो गई हैं। सूचनाओं, विचारों और भावनाओं को मौखिक, लिखित अथवा दृश्य-श्रव्य माध्यमों के द्वारा सफलतापूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचना ही संचार है।

संचार एक प्रक्रिया है जिसमें सूचना देने वाले और पाने वाले दोनों की ही सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। एक के अभाव में भी ये संभव नहीं है. इस अर्थ में संचार अंतर क्रियात्मक (इंटरएक्टिव) प्रक्रिया है।

संचार के विभिन्न तत्व :

- **स्रोत**- संचार प्रक्रिया को प्रारम्भ करता है। व्यक्ति अपने संदेश या सूचना को अन्य तक पहुँचाना चाहता है वह स्रोत है।
- **कूटीकृत या एनकोर्डिंग** संदेश की भाषा का ज्ञान संचारकर्त्ता व प्राप्तकर्ता दोनों को होना चाहिए।
- **संदेश**- सफल संचार के लिए संदेश का स्पष्ट और सीधा होना आवश्यक है।
- **माध्यम (चैनल)-** संदेश को किस माध्यम (टेलीफोन, समाचारपत्र, रेडियो, इंटरनेट) से संदेश प्राप्तकर्त्ता तक पहुँचाया जाता है।
- **डीकोर्डिंग** प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझना।
- **फीडबैक** फीडबैक द्वारा पता चलता है कि संदेश सही रूप में प्राप्तकर्त्ता तक पहुंचा या नहीं।
- **शोर**- संचार प्रक्रिया में आने वाली रुकावटें शोर कहलाती हैं। शोर मानसिक, तकनीकी और भौतिक भी हो सकता है।

संचार के प्रकार

- **सांकेतिक संचार**- जब संकेतों से बात समझाई जाए।
- **मौखिक और अमौखिक संचार**-मुख खोलकर संचार करे वह मौखिक और बिना मुख खोले बात समझाए वह अमौखिक संचार है।
- **अंतःवैयक्तिक संचार**- जब व्यक्ति अपने से बात करे अर्थात् मन में प्रश्न करे और उत्तर भी दे वह अंतःवैयक्तिक संचार होता है।
- **अंतरवैयक्तिक संचार**- जब दो व्यक्ति आमने-सामने बैठकर संचार करें वह अन्तरवैयक्तिक संचार कहलाता है।
- **समूह संचार**-जब एक समूह आपस में विचार-विमर्श या चर्चा करे तो उसे समूह संचार कहते हैं।
- **जनसंचार**-जब हम व्यक्तियों के समूह के साथ प्रत्यक्ष संवाद के बजाय किसी यांत्रिक या तकनीकी माध्यम के ज़रिये समाज के एक विशाल वर्ग से संवाद कायम करने की कोशिश करते हैं तब उसे जनसंचार कहते हैं। जनसंचार के प्रमुख माध्यम- अखबार, रेडियों, टी.वी, सिनेमा,इंटरनेट आदि हैं।

संचार के कार्य- प्राप्ति, नियंत्रण, सूचना, अभिव्यक्ति, सामाजिक संपर्क, समस्या समाधान, प्रतिक्रिया और भूमिका को पूरा करने के लिए संचार का प्रयोग किया जाता है।

जनसंचार की विशेषताएँ-

- फीडबैक तुरंत नहीं प्राप्त होता।
- प्रकाशित या प्रसारित संदेशों की प्रकृति सार्वजनिक होती है।
- संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच कोई सीधा संबंध नहीं होता है।
- एक औपचारिक संगठन की आवश्यकता होती है।

- ढेर सारे द्वारपाल (गेटकीपर) काम करते हैं।

द्वारपाल (गेटकीपर)- द्वारपाल वह व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह है जो जनसंचार माध्यमों से प्रकाशित या प्रसारित होने वाली सामग्री को नियंत्रित और निर्धारित करता है।

जनसंचार के कार्य – सूचना देना, शिक्षित करना, मनोरंजन करना, एजेंडा तय करना, निगरानी करना, विचारों की अभिव्यक्ति के लिए मंच उपलब्ध कराना।

आधुनिक जनसंचार के माध्यम पाश्चात्य तकनीक से प्रेरित हैं परन्तु भारतीय इतिहास गवाह है कि देवर्षि नारद पहले समाचार वाचक माने जाते हैं। महाभारत काल में संजय की कल्पना जिसने युद्ध का आँखों देखा वर्णन धृतराष्ट्र को सुनाया था, एक समृद्ध संचार व्यवस्था की ओर इशारा करता है।

जनसंचार के आधुनिक माध्यम- समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, टेलीविजन, सिनेमा, इंटरनेट आदि हैं।

- जनसंचार की मजबूत कड़ी समाचार पत्र, पत्रिकाएँ या प्रिंट-माध्यम हैं। यही समाचारों के आदान-प्रदान का मुख्य साधन माना जाता है।
- **पत्रकारिता के तीन पहलू हैं**- पहला समाचारों को संकलित करना, दूसरा उन्हें संपादित कर छपने लायक बनाना और तीसरा पत्र या पत्रिका के रूप में छापकर पाठकों तक पहुँचाना।
- संवाददाता जो खबरें एकत्रित करके लाते हैं,उन्हें व्यवस्थित ढंग से छापने का काम संपादक करता है।
- 400 साल पहले ही अखबारी पत्रकारिता अस्तित्व में आई परन्तु भारत में इसकी शुरूआत 1780 में जेम्स ऑगस्ट हिकी के 'बंगाल गजट' से हुई, जो कोलकाता से निकला था।
- हिन्दी का पहला साप्ताहिक पत्र 'उदन्त मार्तंड' था जो 1826 में कोलकाता से ही प्रकाशित हुआ जिसका संपादन पं जुगलकिशोर शुक्ल ने किया था।
- स्वतन्त्रता से पूर्व पत्रकारों में- गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, प्रताप नारायण मिश्र, शिवपूजन सहाय, राम वृक्ष बेनीपुरी और बालमुकुंद गुप्त हैं।
- स्वतन्त्रता से पूर्व प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ- केसरी, हिन्दुस्तान, सरस्वती, हंस, कर्मवीर, प्रताप, प्रदीप, विशाल भारत आदि हैं।
- आज़ादी के बाद प्रमुख पत्रकारों में- सच्चिदानन्दहीरानन्द वात्स्यायन, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, मनोहर श्याम जोशी, राजेन्द्र माथुर आदि हैं।
- आज़ादी के बाद प्रमुख समाचार पत्र-नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, नई दुनिया, अमर उजाला, दैनिक जागरण, राजस्थान पत्रिका आदि हैं। पत्रिकाएँ-धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिनमान, इन्डिया टुडे, रविवार, आउटलुक आदि।

रेडियो-रेडियाँ जनसंचार का श्रव्य माध्यम है। 1895 में इटली के जी. मार्कोनी ने वायरलैस की खोज की और उसी का रुपान्तर रेडियो है। 1921 में मुंबई में 'टाइम्स ऑफ इंडिया' ने डाक तार विभाग के सहयोग से पहला संगीत कार्यक्रम प्रसारित किया। 1936 में ऑल इण्डिया रेडियों की स्थापना हुई। आज देश में 350 से अधिक निजी रेडियों स्टेशन का जाल बिछ गया है। 1993 में एफएम (फ्रीक्वेन्सी मॉड्यूलेशन) की शुरुआत हुई।

टेलीविजन-आज टेलीविज़न जनसंचार का सबसे लोकप्रिय और ताकतवर माध्यम बन गया है। यह दृश्य-श्रव्य माध्यम है। इसकी विश्वसनीयता सर्वाधिक है। 1927 में बेल टेलीफोन लेबोरेट्रीज में न्यूयार्क और वॉशिंगटन के बीच प्रायोगिक टेलीविज़न कार्यक्रम का प्रसारण किया। 1936 में बी.बी.सी. ने अपनी टेलीविजन सेवा प्रारम्भ की। भारत में टेलीविजन की शुरूआत यूनेस्को के एक शैक्षिक परियोजना के तहत 15 सितंबर 1959 को हुई जिसका उद्देश्य शिक्षा और सामुदायिक विकास को प्रोत्साहित करना था। 15

अगस्त 1965 में स्वतंत्रता दिवस से विधिवत टी.वी. सेवा प्रारंभ हुई। 11 अप्रैल 1976 से इसे आकाशवाणी से अलग कर दूरदर्शन का नाम दिया गया।

सिनेमा-मनोरंजन के साथ-साथ परोक्ष रूप में सूचना ज्ञान और संदेश देने का काम करता है। सिनेमा का अविष्कार का श्रेय थॉमस अल्वा एडीसन को जाता है। 1894 में फ्रांस में पहली फिल्म 'द अराइवल ऑफ ट्रेन' बनी। भारत में पहली मूक फिल्म 1913 में 'राजा हरिश्चंद्र' दादा साहब फाल्के द्वारा बनाई गई। 1931 में पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' बनी। इस समय भारत विश्व का सबसे बड़ा फिल्म निर्माता देश है। यहाँ हिन्दी के अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों में भी फिल्में बनती है।

इन्टरनेट-इंटरनेट जनसंचार का सबसे आधुनिक और तेजी से लोकप्रिय हो रहा माध्यम है। रेडियो, टेलीविज़न, किताब, सिनेमा यहाँ तक कि इसमें पुस्तकालय के भी सारे गुण मौजूद है। यह एक अन्तर्क्रियात्मक माध्यम है, जिसमें प्रयोगकर्ता मूकदर्शक नहीं है, वह चर्चा बातचीत का एक हिस्सा होता है। इंटरनेट ने संचार की नई संभावनाएं जगा दी हैं। हमें विश्वग्राम का सदस्य बना दिया है। अश्लील पन्नों व आपराधिक गतिविधियों के कारण इसके दुरुपयोग की घटनाएँ भी सामने आने लगी हैं।

जनसंचार माध्यमों का प्रभाव-जनसंचार माध्यमों के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। अखबार पढ़े बिना हमारी सुबह नहीं होती। रेडियो, टेलीविज़न, मनोरंजन के साथ-साथ समाचार, ज्ञान-विज्ञान, बाज़ार भाव, विज्ञापन देते हैं। इंटरनेट का प्रयोग टिकट बुक करवाने के लिए, कोई भी बिल जमा कराने, बैंक के काम घर से करने के लिए करते है। ऐसा लगता है पूरी दुनिया नेट पर निर्भर है। सदुपयोग के साथ-साथ दुरूपयोग भी हो रहा है। नेट-क्राइम बढ़ता जा रहा है जहाँ सिनेमा, टी.वी. वास्तविकता से परे काल्पनिक दुनिया में पहुँचा देते हैं। वहीं वे अपराधों के नए-नए तरीके सिखा देते हैं। हिंसा और अश्लीलता युवा वर्ग को प्रभावित करती है। विज्ञापनों के जाल में मनुष्य फंस जाता है, अखबार और टेलीविज़न चैनलों में कुछ खास मुद्दों को उछाला जाता है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि जहाँ एक ओर लोग शिक्षित, सचेत और जागरुक हो रहे हैं वहीं नकारात्मक प्रभाव उन्हें भ्रमित, पथभ्रष्ट और चरित्र पर प्रभाव डाल रहे हैं। एक जागरूक पाठक व श्रोता होने के नाते हमें आँखें, कान और दिमाग सदा खुले रखने चाहिए।

बहुविकल्पी प्रश्न

(1) संचार का प्रकार है-

(क) मौखिक संचार (ख) समूह संचार (ग) अंतःवैयक्तिक संचार (घ) उपर्युक्त सभी

(2) 'संचार अनुभवों की साझेदारी है।' कथन किस प्रसिद्ध संचार शास्त्री का है?

(क) विल्बर श्रेम (ख) एडीसन (ग) मार्कोनी (घ) जे एल बेयर्ड

(3) पहला समाचार वाचक माना जाता है-

(क) वेदव्यास को (ख) भरतमुनी को (ग) वाल्मीकि को (घ) महर्षि नारद को

(4) जनसंचार का कार्य है-

(क) सूचना देना (ख) शिक्षित करना (ग) मनोरंजन करना (घ) उपर्युक्त सभी

(5) जनसंचार का आधुनिकतम माध्यम है-

(क) रेडियो (ख) टेलीविज़न (ग) इंटरनेट (घ) अखबार

(6) संचार प्रक्रिया में संदेश प्राप्तकर्ता द्वारा दर्शाई गई प्रतिक्रिया कहलाती है-

(क) लाइव (ख) डिकोडिंग (ग) फीडबैक (घ) शोर

(7) भारत में प्रकाशित होने वाला पहला समाचार पत्र था-

(क) बंगाल गज़ट (ख) उदन्त मार्तंड (ग) प्रभा साक्षी (घ) पंजाब केसरी

(8) संचार प्रक्रिया में 'शोर' से तात्पर्य है-

(क) संचार प्रक्रिया में संदेश प्राप्तकर्ता द्वारा दर्शाई गई प्रतिक्रिया

(ख) संचार प्रक्रिया में आने वाली बाधाएँ

(ग) किसी कार्यक्रम का सीधा प्रसारण

(घ) प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझना

(9) संचार का तत्व नहीं है-

(क) एनकोडिंग (ख) डीकोडिंग (ग) शोर (घ) लाइव

(10) प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझना कहलाता है-

(क) डीकोडिंग (ख) एनकोडिंग (ग) फीडबैक (घ) शोर

(11) संचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम है--

(क) रेडियो (ख) समाचार पत्र (ग) टेलीविज़न (घ) इंटरनेट

(12) भारत में प्रकाशित होने वाला पहला हिन्दी साप्ताहिक पत्र था-

(क) बंगाल गज़ट (ख) उदन्त मार्तंड (ग) पंजाब केसरी (घ) अमर उजाला

(13) ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना हुई-

(क) 1836 ईस्वी में (ख) 1876 ईस्वी में (ग) 1993 ईस्वी में (घ) 1936 ईस्वी में

(14) भारत में एफ एम (फ्रिक्वेंसी मॉड्यूलेशन) की शुरुआत हुई-

(क) 1896 ईस्वी में (ख) 1976 ईस्वी में (ग) 1993 ईस्वी में (घ) 1956 ईस्वी में

(15) रेडियो का आविष्कार किया-

(क) एडीसन ने (ख) जे एल बेयर्ड ने (ग) राइट ब्रदर्स ने (घ) जी मार्कोनी ने

(16) सिनेमा के आविष्कार का श्रेय जाता है-

(क) जे एल बेयर्ड को (ग) जी मार्कोनी को

(ख) थॉमस अल्वा एडीसन को (घ) राइट ब्रदर्स को

(17) भारत की पहली मूक फ़िल्म थी-

(क) राजा हरिश्चंद्र (ख) आलम आरा (ग) मदर इंडिया (घ) शोले

(18) विश्व की पहली फ़िल्म 'द अराइवल ऑफ ट्रेन' (1894) किस देश में बनी?

(क) फ्रांस (ख) ब्रिटेन (ग) जर्मनी (घ) इटली

(19) भारत की पहली बोलती फ़िल्म कौन-सी थी?

(क) मदर इंडिया (ख) गदर (ग) राजा हरिश्चंद्र (घ) आलम आरा

(20) किसी घटना या कार्यक्रम का वहाँ से सीधा प्रसारण कहलाता है-

(क) लाइव (ख) शोर (ग) फीडबैक (घ) एनकोडिंग

(21) निम्नलिखित में से जनसंचार की विशेषता नहीं है-

(क) फीडबैक तुरंत प्राप्त नहीं होता

(ख) संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच सीधा संबंध होता है

(ग) अनेक द्वारपाल काम करते हैं

(घ) प्रकाशित या प्रसारित संदेशों की प्रकृति सार्वजनिक होती है।

(22) निम्नलिखित में से सही कथन का चयन कीजिए-

(i) संचार माध्यम केवल मनोरंजन के साधन हैं

(ii) इंटरनेट सभी संचार माध्यमों का मिला-जुला रूप या समागम है

(iii) कई बार संचार माध्यमों का नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है

(iv) केवल तकनीक विकास के कारण संचार संभव हुआ, इससे पहले संचार संभव नहीं था।

(क) कथन (i) और (ii) सहीं हैं (ग) कथन (ii) और (iii) सहीं हैं

(ख) कथन (i) और (iii) सहीं हैं (घ) कथन (i) और (ii) और (iv) सहीं हैं

(23) संचार प्रक्रिया की शुरुआत होती है-

(क) एनकोडिंग से (ख) माध्यम से (ग) प्राप्तकर्ता से (घ) स्रोत या संचारक से से

(24) जनसंचार का समेकित माध्यम है-

(क) रेडियो (ख) टेलीविजन (ग) इंटरनेट (घ) सिनेमा

उत्तरमाला

1-घ	2-क	3-घ	4-घ	5-ग	6-ग	7-क	8-ख	9-घ	10-क
11-ख	12-ख	13-घ	14-ग	15-घ	16-ख	17-क	18-क	19-घ	20-क
21-ख	22-ग	23-घ	24-ग						

पत्रकारिता के विविध आयाम

स्मरणीय बिन्दु-

मनुष्य अपने सहज स्वभाव के कारण अपने आस-पास व दूर की जानकारी रखना चाहता है, ज्ञान अर्जित करना चाहता है। उसकी इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए ही पत्रकारिता का विकास हुआ है। अतः पत्रकारिता का मूल तत्त्व जिज्ञासा है।

पत्रकारिता-पत्रकारिता, अंग्रेजी जर्नलिज़म का हिन्दी अनुवाद है। जर्नल शब्द का प्रयोग पत्रिका के लिए होता है। मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार-पत्रकारिता शीघ्रता में लिखे जाने वाला साहित्य है। पत्रकार देश-विदेश की घटनाओं, समस्याओं और सूचनाओं को संकलित कर समाचार रुप में ढालकर प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रक्रिया को पत्रकारिता कहते हैं।

समाचार-हर घटना समाचार नहीं होती। समाचार के रूप में उन्हीं घटनाओं, सूचनाओं और मुद्दों को चुना जाता है जिन्हें जानने में अधिक से अधिक लोगों की रुचि हो। किसी घटना को समाचार बनने के लिए उसमें नवीनता, निकटता, जनरुचि, प्रभाव जैसे तत्वों का होना आवश्यक है। समाचार किसी भी ऐसी ताजा घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट है जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रूचि हो और जिसका प्रभाव अधिक से अधिक लोगों पर पड़े।

समाचार के आवश्यक तत्व

- नवीनता-समाचार बनने के लिए न्यू होने पर ही वह न्यूज है। दैनिक समाचार पत्र रात 12 बजे तक के समाचार कवर करता है जो (डेडलाइन) समय सीमा होती है।
- निकटता-लोग उन घटनाओं को जानना चाहते हैं जो भौगोलिक सामाजिक व सांस्कृतिक रूप में उनसे जुड़ी हो।
- प्रभाव-घटना की तीव्रता उससे पता चलती है कि उससे कितने लोग प्रभावित होते हैं।
- जनरुचि-किसी घटना, विचार या समस्या के समाचार बनने के लिए यह भी आवश्यक है कि आम लोगों की उसमें रुचि हो।
- टकराव या संघर्ष-किसी घटना में टकराव या संघर्ष का पहलू होने पर उसके समाचार के रूप में चयन की संभावना बढ़ जाती है।
- महत्वपूर्ण लोग मशहूर और जाने-माने लोगों के बारे में जानने की आम पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं में स्वाभाविक इच्छा होती है।
- उपयोगी जानकारियाँ-उपयोगी जानकारियाँ भी समाचार की भूमिका निभाती है। इन्हें जानने में आम लोगों की सहज दिलचस्पी होती है।
- अनोखापन-अनोखापन लिए हुए घटनाएँ भी समाचार पत्र में विशेष भूमिका निभाती हैं।

- पाठक वर्ग-समाचारीय घटना का महत्व इससे भी तय होता है कि खास समाचार का पाठक वर्ग कौन है? पाठक वर्ग की रूचियों और जरूरतों का विशेष ध्यान रखा जाता है।
- नीतिगत ढाँचा-विभिन्न समाचार संगठनों की समाचारों के चयन और प्रस्तुति को लेकर एक नीति होती है। इस नीति को 'संपादकीय नीति' कहते हैं। संपादकीय नीति का निर्धारण संपादक या समाचार संगठन के मालिक करते हैं। संपादक ही तय करता है कि कौन-सी खबर चुनी जाए तथा उसकी प्रस्तुति किस प्रकार की जाए।

संपादन-किसी सामग्री की अशुद्धियों को दूर करके उसे पठनीय एवं प्रकाशन योग्य बनाना संपादन कहलाता है। संपादकीय टीम अपने संवाददाता की खबरों की भाषा, वर्तनी तथा तथ्यपरक अशुद्धियों को दूर करके उसे प्रकाशित करने का स्थान तय करती है।

संपादन के सिद्धान्त-पत्रकारिता को खास बनाए रखने के लिए इन सिद्धान्तों को पालन करना आवश्यक हो जाता है।

- निष्पक्षता (फेयरनेस)-पत्रकार के लिए निष्पक्ष होना जरूरी है। पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है। निष्पक्षता का अर्थ तटस्थता नहीं है। सही-गलत, न्याय-अन्याय को ध्यान में रख किया गया निर्णय है।
- तथ्यों की शुद्धता (एक्युरेसी-) मीडिया या पत्रकारिता यथार्थ का प्रतिबिंब है अतः तथ्यों को तोड़-मोड़ कर नहीं प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
- वस्तुपरकता (ऑब्जेक्टीविटी)-एक पत्रकार समाचार के लिए तथ्यों का आकलन अपनी धारणा के आधार पर न करे बल्कि उसका वास्तविक रूप प्रस्तुत करे।
- संतुलन (बैलेंस)-समाचार को किसी एक पक्ष में झुका नहीं होना चाहिए। दोनों पक्षों की बात बराबर लानी चाहिए।
- स्रोत (सोर्सिंग) एट्रीब्यूशन)-किसी भी समाचार में शामिल की गई सूचना एवं जानकारी का कोई स्रोत होना आवश्यक है। स्रोत का उल्लेख आवश्यक हो जाता है।
- एक अच्छे पत्रकार को सफल होने के लिए पत्रकारिता के मूल्यों को ध्यान में रखना पड़ता है। इन्हीं मूल्यों को पत्रकार की बैसाखियाँ कहा जाता है। सच्चाई, संतुलन, निष्पक्षता और स्पष्टता पत्रकार की बैसाखियाँ हैं।

पत्रकारिता के अन्य आयाम

- संपादकीय-यह समाचार पत्र का सबसे महत्वपूर्ण पृष्ठ होता है। संपादक इस पृष्ठ पर अपनी राय प्रकट करता है। इस पृष्ठ पर विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के लेख होते हैं। संपादक के नाम पत्र भी इसी पृष्ठ पर होते हैं जो घटनाओं पर आम लोगों की टिप्पणी होती है।
- फोटो पत्रकारिता-जो बात हजार शब्द स्पष्ट नहीं कर सकते उसे एक फोटो स्पष्ट कर देती है। यह बहुत प्रभावशाली माध्यम है।
- कार्टून कोना-कार्टून के माध्यम से की गई धारदार टिप्पणियाँ सीधे पाठक के मन को छूती है।
- रेखांकन और कार्टोग्राफ-इनके प्रयोग से शब्दों के बिना ही आँकड़ो को ग्राफ के द्वारा एक नज़र में समझाया जाता है। इसका प्रयोग समाचार पत्रों के अलावा टी.वी. में भी होता है।

पत्रकारिता के प्रकार

- खोजपरक पत्रकारिता-ऐसी पत्रकारिता जिसमें गहराई से छानबीन करके ऐसे तथ्यों व सूचनाओं को सामने लाने की कोशिश की जाती है, जिन्हें दबाने या छुपाने का प्रयास किया जा रहा हो। आमतौर पर सार्वजनिक महत्व के मामलों में भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को सामने लाने की कोशिश की जाती है। 'स्टिंग ऑपरेशन' इसी का एक नया रूप है।
- विशेषीकृत पत्रकारिता-इसके अंतर्गत संसदीय पत्रकारिता, न्यायालय पत्रकारिता, आर्थिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, विज्ञान और विकास पत्रकारिता, अपराध पत्रकारिता, फैशन और फिल्म पत्रकारिता शामिल हैं। इसमें संबंधित पत्रकार उस क्षेत्र की विशेषज्ञ होते हैं।

- वॉचडॉग पत्रकारिता-जब मीडिया सरकार के कामकाज पर निगाह रखकर होने वाली गड़बड़ियों का परदाफ़ाश कर जनता के समक्ष लाता है तो उसे वॉचडॉग पत्रकारिता कहते हैं।
- एडवोकेसी पत्रकारिता • जब कोई समाचार संगठन किसी मुद्दे को उछाल कर उसके पक्ष में जनमत हासिल करने के लिए अभियान चलाता हैं तो उसे एडवोकेसी या पक्षधर पत्रकारिता कहते है।
- वैकल्पिक पत्रकारिता-जो मीडिया स्थापित व्यवस्था के विकल्प को सामने लाने और उसके अनुकूल सोच को अभिव्यक्त करता है उसे 'वैकल्पिक मीडिया' कहा जाता है।
- संपादक मंडल यह एक संगठन है जिसमें संपादक, संयुक्त संपादक, सहायक संपादक, विशेष संपादक, मुख्य संपादक, उप-संपादक, संवाददाता और प्रूफर शामिल होते हैं।
- समाचार माध्यमों का मौजूदा रुझान-व्यापारीकरण के कारण सभी अधिक से अधिक धन कमाना चाहते हैं। अतः अपने समाचार-पत्र अथवा चैनल को लोकप्रिय बनाने के लिए पीत पत्रकारिता (सनसनीखेज खबरें) या पेज थ्री पत्रकारिता(महत्वपूर्ण लोगों के निजी जीवन से संबंधित खबरें) का प्रयोग अधिक से अधिक करते हैं।

पत्रकारिता का महत्व-

(1) देश-विदेश की गतिविधियों की जानकारी देती है।
(2) जनसामान्य को उसके कर्तव्य और अधिकारों की जानकारी देती है।
(3) रोजगार के अवसर तलाशने में सहायक है।
(4) राष्ट्रीय चेतना का सशक्त आधार है।
(5) युगीन समस्याओं से जनता को जोड़ती है।
(6) मानव कल्याण की प्रेरणा देती है।

बहुविकल्पी प्रश्न

(1) पत्रकारिता का मूल तत्व है-

(क) जिज्ञासा (ख) जिजीविषा (ग) ज्ञान (घ) उपर्युक्त सभी

(2) समाचार के लिए आवश्यक तत्व है-

(क) नवीनता (ख) निकटता (ग) जनरुचि (घ) उपर्युक्त सभी

(3) विभिन्न समाचार संगठनों की समाचारों के चयन और प्रस्तुति को लेकर एक नीति होती है। इस नीति को कहते हैं-

(क) शासकीय नीति (ग) संचयन नीति
(ख) संपादकीय नीति (घ) पत्रकारीय नीति

(4) प्रकाशन के लिए प्राप्त सामग्री की अशुद्धियों को दूर करके उसे पठनीय बनाना कहलाता है-

(क) संपादन (ख) संपादकीय (ग) संचयन (घ) शुद्धिकरण

(5) लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है-

(क) व्यवस्थापिका को (ग) पत्रकारिता को
(ख) न्यायपालिका को (घ) कार्यपालिका को

(6) निम्नलिखित में से संपादन का सिद्धांत नहीं है-

(क) निष्पक्षता (ख) तथ्यों की शुद्धता (ग) वस्तुपरकता (घ) आत्मविश्वास

(7) पत्रकार की बैसाखी कहा गया है-

(क) सच्चाई और संतुलन को (ग) क और ख दोनों सही हैं
(ख) निष्पक्षता और स्पष्टता को (घ) इनमें से कोई नहीं

(8) 'स्टिंग ऑपरेशन' किस पत्रकारिता के अंतर्गत आता है?

(क) वाचडॉग पत्रकारिता (ख) विशेषीकृत पत्रकारिता
(ग) खोजी पत्रकारिता (घ) पीत पत्रकारिता

(9) जब मीडिया सरकार के कामकाज पर निगाह रखकर होने वाली गड़बड़ियों का परदाफ़ाश कर जनता के समक्ष लाता है तो उसे कहते हैं-

(क) खोजी पत्रकारिता (ग)विशेषीकृत पत्रकारिता

(ख) वाचडॉग पत्रकारिता (घ) पेज थ्री पत्रकारिता

(10) एडवोकेसी पत्रकारिता को अन्य किस नाम से जाना जाता है?

(क) निष्पक्ष पत्रकारिता (ख) खोजी पत्रकारिता (ग) पीत पत्रकारिता (घ) पक्षधर पत्रकारिता

(11) विशेषीकृत पत्रकारिता के अंतर्गत आती है--

(क) संसदीय पत्रकारिता (ग) खेल पत्रकारिता

(ख) विज्ञान और विकास पत्रकारिता (घ) उपर्युक्त सभी

(12) सनसनीखेज खबरें किस पत्रकारिता के अंतर्गत आती हैं?

(क) खोजी पत्रकारिता (ग) पेज थ्री पत्रकारिता

(ख) पीत पत्रकारिता (घ) एडवोकेसी पत्रकारिता

(13) समाचार पत्र का सबसे महत्वपूर्ण पृष्ठ होता है-

(क) खेल पृष्ठ (ग) संपादकीय पृष्ठ

(ख) आर्थिक पृष्ठ (घ) प्रथम पृष्ठ

(14) धारदार टिप्पणियाँ की जाती हैं-

(क) फोटो पत्रकारिता के माध्यम से

(ख) कार्टून के माध्यम से

(ग) रेखांकन और कार्टोग्राफ के माध्यम से

(घ) संपादकीय के माध्यम से

(15) जब कोई समाचार संगठन किसी मुद्दे को उछाल कर उसके पक्ष में जनमत हासिल करने के लिए अभियान चलाता है तो यह किस पत्रकारिता के अंतर्गत आता है?

(क) खोजी पत्रकारिता

(ख) वाचडॉग पत्रकारिता

(ग) एडवोकेसी पत्रकारिता

(घ) वैकल्पिक पत्रकारिता

(16) 'डेडलाइन' क्या है?

(क) समाचारपत्रों की समाचारों को कवर करने की निर्धारित समय-सीमा

(ख) संचार प्रक्रिया में संदेश प्राप्तकर्ता द्वारा दर्शाई गई प्रतिक्रिया

(ख) संचार प्रक्रिया में आने वाली बाधाएँ

(घ) किसी कार्यक्रम का सीधा प्रसारण

(17) निम्नलिखित में से किसे आप समाचार नहीं कह सकते?

(क) प्रेरक और उत्तेजित कर देने वाली हर सूचना

(ख) किसी घटना की रिपोर्ट

(ख) समय पर दी जाने वाली हर सूचना

(घ) सहकर्मियों का आपसी कुशलक्षेम या किसी मित्र की शादी

उत्तरमाला-

1-क	2-घ	3-ख	4-क	5-ग	6-घ	7-ग	8-ग	9-ख	10-घ
11-घ	12-ख	13-ग	14-ख	15-ग	16-क	17-घ			

प्रश्न-3 (क)-काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

1. कबीर

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए।

"हम तौ एक –एक करि जाना
दोइ कहँ तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचांनां।
एकै पवन एकै ही पानी एकै जोति समांनां।
एकै खाक गढे सब भांडै एकै कोंहरा सांनां
जैसे बाढी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई
सब घटि अंतरि तूँही व्यापक धरै सरूपै सोई।
माया देखि के जगत लुभानां काहे रे नर गरबानां।
निरभै भया कछू नहिं ब्यापै कहै कबीर दिवांनां"

(i) प्रस्तुत पद्यांश के कवि कौन है?

(क) सूरदास (ख) तुलसीदास (ग) कबीर (घ) मीरा बाई।

(ii) कबीर ने किन लोगों को नरक का अधिकारी माना है?

(क) जो परमात्मा को नहीं मानते (ख) जो परमात्मा के एक स्वरूप को ही मानते है
(ग) जो परमात्मा के दो रूपो की बात करते हैं (घ) जो निर्गुण है

(iii) कबीर ने ईश्वर के एक ही स्वरूप के पक्ष में कौनसा तर्क नहीं दिया है?

(क) एक ही जल है (ख) एक ही पवन है (ग) एक ही स्वर्ग है (घ) एक ही ज्योति है

(iv) कबीर के अनुसार मानव शरीर का निर्माण किन-किन तत्वों से हुआ है?

(क) जल (ख) पवन और पृथ्वी (ग) अग्नि और आकाश (घ) सभी

(v) दोजग शब्द का प्रयोग किस के लिए किया गया है?

(क) ईश्वर के लिए (ख) मानव के लिए (ग) नरक के लिए (घ) स्वर्ग के लिए

(vi) कबीर के द्वारा रचित पद की भाषा कौनसी है?

(क) ब्रज (ख) अवधी (ग) सधुक्कड़ी (घ) राजस्थानी

उत्तर-

प्रश्न संख्या	**(i)**	**(ii)**	**(iii)**	**(iv)**	**(v)**	**(vi)**
सही विकल्प	**ग**	**ग**	**ग**	**घ**	**ग**	**ग**

2. मीरा

- **जन्म:** सन् 1498, कुड़की गाँव (मारवाड़ रियासत)
- **मृत्यु**: सन् 1546
- **प्रमुख रचनाएँ:-**'मीरापदावली', 'नरसीजी-रो-माहेरो'

पद

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जा के सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई
छांड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई?
संतन ढिग बैठि-बैठि, लोक लाज खोयी
अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोयी

अब त बेलि फैलि गयी, आणंद-फल होयी
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी
भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी
दासि मीरां लाल गिरधर! तारो अब मोही

बहुविकल्पी प्रश्न

1. मीरा ने अपने आराध्य देव की क्या पहचान बताई है?

(क) उसके सिर पर ताज है (ख) उसके सिर पर मोर मुकुट है
(ग) उसने अपने सिर को झुकाया है (ग) उसके सिर पर पगड़ी बँधी हुई है

2. "छाड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई?" इस पंक्ति से मीरा की कौन-सी भावना प्रकट होती है?

(क) समाज के प्रति चुनौती (ख) विनयभाव
(ग) समाज के सामने याचना भाव (घ) समाज से डरने का भाव

3. किसके साथ बैठ-बैठ कर मीरा ने लोक-लाज को त्याग दिया था?

(क) सास-ससुर (ख) सखियों (ग) संतों (घ) राजा

4. मीरा ने अपनी प्रेम-बेलि को किससे सींचा है?

(क) पानी से (ख) दूध से (ग) अमृत से (घ) आँसुओं से

5. मीरा इस जगत में क्या देखकर प्रसन्न होती है?

(क) सामाजिक बंधन (ख) समाज में मोह-माया
(ग) प्रभु-भक्ति (घ) सगे-संबंधी

उत्तर-

(i)	**(ii)**	**(iii)**	**(iv)**	**(v)**
(ख)	**(क)**	**(ग)**	**(घ)**	**(ग)**

3. भवानीप्रसाद मिश्र
कविता-घर की याद

पद्यांश-1

"और माँ बिन – पढ़ी मेरी,
दुःख में वह गढ़ी मेरी,
माँ कि जिसकी गोद में सिर,
रख लिया तो दुख नहीं फिर,
माँ कि जिसकी स्नेह – धारा,
का यहाँ तक भी पसारा,
उसे लिखना नहीं आता,
जो कि उसका पत्र पाता।
पिता जी जिनको बुढ़ापा,
एक क्षण भी नहीं व्यापा,

जो अभी भी दौड़ जाएँ,
जो अभी भी खिलखिलाएँ,
मौत के आगे न हिचकें,
शेर के आगे न बिचकें,
बोल में बादल गरजता,
काम में झंझा लरजता"

(i) दुःख से वह गढ़ी मेरी-यह पंक्ति किसके लिए प्रयुक्त हुई है

(क) कवि के पिता के लिए (ग) कवि के भाई के लिए
(ख) कवि की बहन के लिए (घ) कवि की माँ के लिए

(ii) "माँ कि जिसकी स्नेह-धारा" इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास (ख) यमक (ग) श्लेष (घ) रूपक

(iii) कवि ने माँ की किस विवशता का उल्लेख किया है?

(क) वह पढ़-लिख नहीं सकती है (ग) उसके पास धन-दौलत नहीं है
(ख) वह देख सुन नहीं सकती है (घ) वह चल नहीं सकती है

(iv) कवि के अनुसार उसके पिता की विशेषता नहीं है?

(क) बुढ़ापे में भी दौड़ लगाना (ग) निडर होना
(ख) तीव्र गति से काम करना (घ) बुढ़ापे के लक्षण दिखाई देना

(v) काम में झंझा लरजता-इसमें 'झंझा' शब्द का अर्थ है-

(क) बिजली (ख) बादल (ग) तूफान (घ) सागर

1-घ	2-घ	3-क	4-घ	5-ग

पद्यांश-2

"पिता जी ने कहा होगा,
हाय, कितना सहा होगा,
कहाँ मैं रोता कहाँ हूँ,
धीर में खोता कहाँ हूँ,
हे संजील हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसे
पाँचवें को वे न तरसे,
मैं मजे में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,
किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है,

(i) पिता जी ने कहा होगा-इस पंक्ति में किससे कहने का संकेत है?

(क) माँ से (ख) बहन से (ग) दोस्त से (घ) पिताजी से

(ii) कवि ने अपना संदेश देने के लिए किस महीने को संबोधित किया है?

(क) आषाढ़ को (ख) सावन को (ग) भादो को (घ) फागुन को

(iii) पाँचवें को वे न तरसे यहाँ 'पाँचवा' शब्द किसके लिए आया है?

(क) पिता के लिए. (ख) भाई के लिए (ग) माँ के लिए (घ) कवि के लिए

(iv) किन्तु यह बस बड़ा बस है-इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) यमक (ख) रूपक (ग) श्लेष (घ) अतिशयोक्ति

(v) कवि अपनी वास्तविक स्थिति परिवार वालों को क्यों नहीं बताना चाहता?

(क) कवि परिवार वालों को क्रोधित नहीं करना चाहता
(ख) कवि परिवार वालों को दुखी नहीं करना चाहता
(ग) कवि परिवार वालों को हतोत्साहित नहीं करना चाहता
(घ) कवि परिवार वालों को शांत नहीं करना चाहता

उत्तरमाला-

1-क	2-ख	3-घ	4-क	5-ख

4. त्रिलोचन

कविता- चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती

पद्यांश-1

"चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आ जाती है
खड़ी खड़ी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है:
इन काले चीन्हों से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं
चंपा सुन्दर की लड़की है
सुन्दर ग्वाला है: गायें-भैंसें रखता है
चंपा चौपायों को लेकर
चरवाही करने जाती है"
चंपा अच्छी है
चंचल है
न ट ख ट भी है
कभी कभी ऊधम करती है
कभी कभी वह कलम चुरा देती है
जैसे तैसे उसे ढूँढ़ कर जब लाता हूँ
पाता हूँ-अब कागज़ गायब
परेशान फिर हो जाता हूँ"

(i) चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती। इस पंक्ति में 'काले काले' शब्द किस ओर संकेत करते हैं?

(क) शिक्षा-व्यवस्था के अंतर्विरोधों की ओर
(ख) उस दारुण यथार्थ की ओर जहाँ आर्थिक मजबूरियों के चलते घर टूटते हैं
(ग) क और ख दोनों सही हैं
(घ) इनमें से कोई नहीं

(ii) चम्पा को किस बात पर आश्चर्य होता है?

(क) लोग पढ़-लिखकर इतने चालाक कैसे हो जाते हैं
(ख) काले चिन्हों (अक्षरों) से अलग-अलग स्वर कैसे निकलते हैं
(ग) कवि हर समय कागज़ पर क्या लिखता रहता है
(घ) गांधी जी पढ़ने-लिखने की बात कैसे कह सकते हैं

(iii) चम्पा क्या काम करती है?

(क) पढ़ती है (ख) पढ़ाती है (ग) पशु चराती है (घ) कविता लिखती है

(iv) निम्नलिखित में से सही कथन है-

(क) चम्पा पढ़ाई-लिखाई का महत्त्व नहीं समझती है
(ख) चम्पा कवि की कलम और कागज़ चुराकर उसे परेशान करती है
(ग) चम्पा सुंदर की लड़की है
(घ) उपर्युक्त सभी

(v) 'अच्छर' शब्द का तत्सम रूप है-

(क) आखर (ख) अक्सर (ग) अक्षर (घ) अक्षत

उत्तरमाला

(i)-ग	**(ii)-ख**	**(iii)-ग**	**(iv)-घ**	**(v)-ग**

पद्यांश-2

"उस दिन चंपा आई, मैंने कहा कि
चम्पा तुम भी पढ़ लो
हारे गाढ़े काम सरेगा
गाँधी बाबा की इच्छा है-
सब जन पढ़ना-लिखना सीखें
चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गांधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी"

(i) कवि ने चम्पा से क्या कहा?

(क) अनपढ़ रहना अच्छा है (ग) पशु चराना अच्छा है
(ख) पढ़ना-लिखना अच्छा है (घ) बहस करना अच्छा है

(ii) कवि के अनुसार महात्मा गांधी जी की क्या इच्छा थी?

(क) सब लोग आराम से रहें (ग) सब लोग पढ़ना-लिखना सीखें
(ख) सब लोग खेती के काम करें (घ) सब चरखा चलाना सीखें

(iii) चम्पा ने कवि को क्या जवाब दिया?

(क) वह पढाई नहीं करेगी (ग) उसे लिखना अच्छा लगता है
(ख) वह पशुओं को लेकर नहीं जाएगी (घ) वह कलकता जाएगी

(iv) गांधी बाबा अच्छे हैं-यह किसने कहा?

(क) चंपा ने (ख) कवि ने (ग) चम्पा के पिता ने (घ) चम्पा के पति ने

(v) 'हारे गाढ़े काम सरेगा' पंक्ति का अर्थ है-

(क) मनोबल बढ़ेगा (ग) हारने पर काम आएगा
(ख) किसी भी समय काम निकल जाएगा (घ) कठिनाई के वक्त काम आएगा

उत्तरमाला

(i)-ख	**(ii)-ग**	**(iii)-क**	**(iv)-क**	**(v)-ख**

5. दुष्यंत कुमार
कविता-गज़ल

पद्यांश-1

कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।
यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।
न हो कमीज तो पाँवों से पेट ढँक लेंगे,
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिए।
खुदा नहीं, न सही, आदमी का ख्वाब सही,
कोई हसीन नजारा तो है नजर के लिए।

(i) क्या तय किया गया था?

(क) हर व्यक्ति को दीपक दिया जाएगा
(ख) हर व्यक्ति को उसके हक की सुख-सुविधाएं मिलेंगी
(ग) हर व्यक्ति देश छोड़कर जाएगा
(घ) हर व्यक्ति कमीज़ पहनेगा

(ii) 'साये में धूप लगना' में कौनसा अलंकार है?

(क) अनुप्रास (ख) अतिशयोक्ति (ग) विरोधाभास (घ) यमक

(iii) 'न हो कमीज तो पाँवों से पेट ढँक लेंगे' इस पंक्ति से प्रवृत्ति का पता चलता है?

(क) संतोषी प्रवृत्ति (ग) अनुकरणात्मक प्रवृत्ति
(ख) विरोधात्मक प्रवृत्ति (घ) दिखावे की प्रवृत्ति

(iv) यहाँ 'चिराग' किसका प्रतीक है?

(क) दीपावली के दीपक (ग) रोजगार
(ख) बिजली (घ) अधिकार एवं सुख-सुविधाएं

(v) गज़ल मे प्रयुक्त 'वृक्ष' का समानार्थक शब्द है-

(क) मयस्सर (ख) दरख्त (ग) मुनासिब (घ) चिराग

उत्तर-(i) (ख) हर व्यक्ति को उसके हक की सुख-सुविधाएं मिलेंगी (ii) (ग) विरोधाभास (iii) (क) संतोषी प्रवृत्ति (iv) (घ) अधिकार एवं सुख-सुविधाएं (v) (ख) दरख्त

पद्यांश-2

वे मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता,
मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए।
तेरा निजाम है सिल दे जुबान शायर की,
ये एहतियात जरूरी है इस बहर के लिए।
जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले,
मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए।

(i) कवि किस के लिए बेकरार है?

(क) आवाज को मधुर बनाने के लिए
(ख) अधिकारियों को खुश करने के लिए
(ग) जनता को जगाने के लिए
(घ) सत्ता में बैठे लोगों को सावधान करने के लिए

(ii) सत्ता में आसीन वर्ग को किस तरह की सावधानी की जरुरत है?

(क) कवियों की जुबान बंद करने की
(ख) रैलियाँ निकालने की
(ग) आम जन को परेशान करने की
(घ) इनमें से कोई नहीं

(iii) "जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले" पंक्ति में 'बगीचे' का प्रतीकार्थ क्या है?

(क) धन-दौलत
(ख) मान-सम्मान
(ग) राग-रंग
(घ) देश-समाज

(iv) गैर की गलियों में रहकर भी कवि किसके लिए मरना चाहता है?

(क) नेताओं के लिए
(ख) अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए
(ग) अधिकारियों के लिए
(घ) पूँजीपतियों के लिए

(v) कौन मुतमइन हैं?

(क) गरीब आदमी
(ख) कवि
(ग) जनता
(घ) सत्ता में बैठे लोग

उत्तर- (i) (ग) जनता को जगाने के लिए (ii) (क) कवियों की जुबान बंद करने की (iii) (घ) देश-समाज (iv) (ख) अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए (v) (घ) सत्ता में बैठे लोग

6. अक्क महादेवी
कविता- हे भूख मत मचल

"हे भूख! मत मचल
प्यास, तड़प मत
हे नींद! मत सता
क्रोध, मचा मत उथल-पुथल
हे मोह! पाश अपने ढील
लोभ, मत ललचा
मद! मत कर मदहोश
ईर्ष्या, जला मत
ओ चराचर! मत चूक अवसर
आई हूँ संदेश लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का"

(i) प्रस्तुत वचन में कौन-सा अलंकार है?

(क) विभावना (ख) अतिशयोक्ति (ग) विरोधाभास (घ) मानवीकरण

(ii) पद्यांश में 'प्यास' से क्या तात्पर्य है?

(क) पानी की प्यास (ख) आलस्य (ग) सांसारिक तृष्णा (घ) क्रोध

(iii) क्रोध से क्या हानि होती है?

(क) मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है (ग) मनुष्य की चेतना लुप्त हो जाती है
(ख) मनुष्य का ज्ञान नष्ट हो जाता है (घ) उपर्युक्त सभी

(iv) प्रस्तुत पद्यांश में कवयित्री क्या आग्रह कर रही है?

(क) अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखने का (ग) भौतिक सुख-सुविधा पाने का
(ख) दीन-हीनों की सहायता करने का (घ) उपर्युक्त में कोई नहीं

(v) कवयित्री किसका संदेश प्रचारित कर रही है?

(क) भगवान श्रीकृष्ण का (ख) भगवान विष्णु का (ग) देवी दुर्गा का (घ) भगवान शिव का

उत्तर-(i) घ (ii) ग **(iii)** क **(iv) क (v)** घ

कविता- हे भूख मत मचल, हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर

"हे! मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर
मँगवाओ मुझसे भीख और कुछ ऐसा करो
कि भूल जाऊँ अपना घर पूरी तरह
झोली फैलाऊँ और न मिले भीख
कोई हाथ बढ़ाए कुछ देने को,
तो वह गिर जाए नीचे
और यदि मैं झुकूँ उसे उठाने
तो कोई कुत्ता आ जाए
और उसे झपटकर छीन ले मुझसे"

(i) कवयित्री ने ईश्वर की उपमा किससे की है?

(क) चमेली के फूल से (ख) कमल के फूल से
(ग) जूही के फूल से (घ) गुलाब के फूल से

(ii) कवयित्री अपने अहंकार से दूर रहने के लिए ईश्वर से क्या प्रार्थना कर रही है?

(क) मुझे ज्ञान और विवेक से परिपूर्ण कर दो (ख) मुझसे नीच-से-नीच कार्य करवाओ
(ग) मैं सांसारिक विषयों से दूर रहूँ (घ) ये सभी

(iii) अपनी दयनीय स्थिति बनाने के लिए कवयित्री क्या-क्या कार्य करना चाहती है?

(क) मैं दूसरों से भीख माँगू (ख) अपना घर पूरी तरह से भूल जाऊँ
(ग) मुझे मिली भीख को कुत्ता उठाकर ले जाए (घ) ये सभी

(iv) पद्यांश के अनुसार, कवयित्री की कामना क्या है?

(क) परम ईश्वर की प्राप्ति (ख) निकृष्ट कार्य करना
(ग) अत्यधिक भौतिक सुखों की प्राप्ति (घ) दीनता-हीनता का त्याग

(v) 'हे! मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर' पंक्ति में अलंकार है?

(क) रूपक (ख) उपमा (ग) यमक (घ) श्लेष

उत्तर – (I) ग (ii) ग (iii) घ (iv) क (v) ख

7. अवतार सिंह संधू 'पाश'

कविता-सबसे खतरनाक

पद्यांश-1

"सबसे खतरनाक होता है
मुर्दा शांति से भर जाना
न होना तड़प का सब सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर
और काम से लौटकर घर आना
सबसे खतरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना
सबसे खतरनाक वह घड़ी होती है
आपकी कलाई पर चलती हुई भी जो
आपकी निगाह में रुकी होती है"

(i) 'मुर्दा शांति से भर जाना' क्यों सबसे खतरनाक होता है?

(क) क्योंकि मुर्दा भी जिंदा हो सकता है (ख) क्योंकि उसमें विरोध करने की क्षमता नहीं होती है
(ग) क्योंकि उसमें कठोरता होती है। (घ) इनमें से कोई नहीं

(ii) एक ढर्रे पर चलने वाली जिंदगी कैसी होती है?

(क) घर से निकलना काम पर (ख) काम से लौटकर घर आना (ग) इनमें से केवल एक (घ) इनमें से दोनों

(iii) सपनों के मर जाने का क्या तात्पर्य है?

(क) निराशा में जीना (ग) सुनहरे भविष्य की इच्छाएँ खत्म होना
(ख) चिंता में डूबे रहना (घ) इनमें से कोई नहीं

(iv) सबसे खतरनाक वह घड़ी होती है-इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास (ख) श्लेष (ग) यमक (घ) उपमा

(v) 'सबसे खतरनाक' कविता के रचनाकार का क्या नाम है?

(क) अवतार सिंह संधू (ख) अक्क महादेवी (ग) भवानीप्रसाद मिश्र (घ) निर्मला पुतुल

उत्तर-(i)-(ख) (ii)-(घ) (iii)-(ग) (iv) (ख) (v) (क)

7. निर्मला पुतुल

- **जन्म**: सन् 1972 में झारखंड राज्य के दुमका क्षेत्र में एक आदिवासी परिवार में।
- **रचनाएँ-**नगाड़े की तरह बजते शब्द, अपने घर की तलाश में।

कविता-आओ, मिलकर बचाएँ

पद्यांश: 1

"अपनी बस्तियों को
नंगी होने से
शहर की आबो-हवा से बचाएँ उसे
बचाएँ डूबने से
पूरी की पूरी बस्ती को
हड़िया में
अपने चहरे पर
संथाल परगना की माटी का रंग
भाषा में झारखडीपन"

(i) कवयित्री क्या बचाने का आह्वान करती है?

(क) आदिवासी बस्तियों को (ख) शहरी संस्कृति को (ग) आदिवासियों अवगुणों को (घ) उक्त सभी को

(ii) संथाल परगना की क्या समस्या है?

(क) शहरों का बढ़ता प्रभाव (ख) भौतिक संपदा का विवेकहीन दोहन

(ग) केवल'क' (घ) 'क' व 'ख' दोनों

(iii) झारखंडीपन से क्या आशय है?

(क) संथाली भाषा में झारखण्ड का प्रभाव (ख) झारखंडियों के नकारात्मक पक्ष

(ग) आदिवासी लोग (घ) उक्त में से कोई नहीं

(iv) 'आबो-हवा' से क्या अर्थ है?

(क) मिट्टी का रंग (ख) प्रदूषित हवा (ग) जलवायु (घ) प्रदूषित नदियाँ

(v) 'नंगी होने से' से क्या अभिप्राय है?

(क) वस्त्रहीन होना (ख) मर्यादारहित होना (ग) पाशविक प्रवृति (घ) उक्त सभी

उत्तर-

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)
(क)	(घ)	(क)	(ग)	(ख)

पद्यांश: 2

"और इस अविश्वास-भरे दौर में
थोड़ा-सा विश्वास
थोड़ी-सी उम्मीद
थोड़े-से सपने
आओ, मिलकर बचाएँ
कि इस दौर में भी बचाने को
बहुत कुछ बचा है
अब भी हमारे पास!"

(i) वर्तमान को 'अविश्वास-भरा' क्यों कहा गया है?

(क) प्रत्येक व्यक्ति दूसरे को ठगने की ताक में रहता है। (ख) दिखावटी सम्मान के कारण

(ग) मानवीय संवेदनाओं के अभाव के कारण (घ) उक्त सभी

(ii) पद्यांश परिचायक है-

(क) कवयित्री की सकारात्मकता का (ख) आदिवासी संस्कृति के प्रति जुड़ाव का

(ग) सामूहिक प्रयास के महत्त्व का (घ) उक्त सभी को

(iii) 'बहुत कुछ बचा है' से क्या आशय है?

(क) आदिवासी समाज की अच्छाइयां (ख) झारखंडियों के नकारात्मक पक्ष

(ग) आदिवासी लोग (घ) उक्त में से कोई नहीं

(iv) 'आओ, मिलकर बचाएँ' में कवयित्री का आह्वान है-

(क) देशवासियों से (ख) सरकारों से (ग) आदिवासी समाज के लोगों से (घ) देश की नई पीढ़ी से

(v) 'थोड़े-से सपने' में 'सपने' प्रतीक है-

(क) आधुनिकता के (ख) सफल और सुकून युक्त जीवन के (ग) संघर्ष के (घ) कठिनाइयों के

उत्तर-

(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)
(घ)	**(घ)**	**(क)**	**(ग)**	**(ख)**

प्रश्न-3 (क) गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

निम्नलिखित पठित गद्यांशों के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिये –

1. नमक का दारोगा-प्रेमचंद

गद्यांश-1

"जब नमक का नया विभाग बना और ईश्वर-प्रदत्त वस्तु के व्यवहार करने का निषेध हो गया तो लोग चोरी-छिपे इसका व्यापार करने लगे। अनेक प्रकार के छल-प्रपंचों का सूत्रपात हुआ, कोई घूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। अधिकारियों के पौ-बारह थे। पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड़-छोड़कर लोग इस विभाग की बरकंदाजी करते थे। इसके दारोगा पद के लिए तो वकीलों का भी जी ललचाता था। यह वह समय था, जब अंग्रेज़ी शिक्षा और ईसाई मत को लोग एक ही वस्तु समझते थे। फ़ारसी का प्राबल्य था। प्रेम की कथाएँ और शृंगार रस के काव्य पढ़कर फारसीदां लोग सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो जाया करते थे।"

(i) किस ईश्वर प्रदत्त वस्तु का व्यवहार करना निषेध हो गया था –

(क) जल (ख) वायु (ग) नमक (घ) धरती

(ii) नमक का दरोगा पाठ के लेखक?

(क) प्रेमचंद (ख) कृष्ण चन्दर (ग) शेखर जोशी (घ) कृष्ण नाथ

(iii) किन के पौ-बारह थे-

(क) गृहणियों के (ख) अधिकारीयों के (ग) पतियों के (घ) बच्चों के

(iv) नमक विभाग में दरोगा के पद के लिए कौन ललचाते थे –

(क) डॉक्टर (ख) प्रोफेसर (ग) इंजीनियर (घ) वकील

(v) पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड़-छोड़कर लोग इस विभाग की बरकंदाजी करते थे।यहां किस विभाग की बात की जा रही है?

(क) नमक विभाग (ख) पुलिस विभाग (ग) मेडिकल विभाग (घ) न्याय विभाग

उत्तर-

प्रश्न संख्या	**)i(**	**)ii)**	**)iii)**	**)iv)**	**)v)**
सही विकल्प	**ग**	**क**	**ख**	**घ**	**क**

गद्यांश-2

"पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं। लेटे ही लेटे गर्व से बोले-चलो, हम आते हैं। यह कहकर पंडित जी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर खाए फिर लिहाफ़ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले-बाबू जी, आशीर्वाद कहिए हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गई। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए। वंशीधर रुखाई से बोले-सरकारी हुक्म है।"

(i) पंडित अलोपिद्दीन का किस पर अखंड विश्वास था?

(क) अपने सेवको पर (ख) दरोगा बंशीधर पर (ग) वकीलों पर (घ) लक्ष्मी जी पर

(ii) स्वर्ग में किस का राज्य है?

(क) भगवान का (ख) पंडित अलोपीदीन का (ग) दारोगा का (घ) लक्ष्मी जी का

(iii) न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं। यह किसका कथन है?

(क) हवलदार का (ख) दारोगा का (ग) पंडित अलोपीद्दीन का (घ) बंशीधर के पिता का

(iv) हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए। किसकी कृपा की बात की जा रही है?

(क) ईश्वर की (ख) दारोगा वंशीधर की (ग) लक्ष्मी जी की (घ) हवलदार बदलू सिंह की

(v) नमक की कालाबाजारी कौन कर रहा था –

(क) अलोपीदीन (ख) रामदीन (ग) दातादीन (घ) मातादीन

उत्तर-

प्रश्न संख्या	**(i)**	**(ii)**	**(iii)**	**(iv)**	**(v)**
सही विकल्प	**घ**	**घ**	**ग**	**ख**	**क**

गद्यांश-3

"दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सवेरे देखिए तो बालक-वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए, वही पंडित जी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछार हो रही थीं. मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला, कल्पित रोज़नामचे बनाने वाले सेठ और साहूकार, यह सब-के-सब देवताओं की भाँति गरदनें चला रहे थे। जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभभरे, लज्जा से गरदन झुकाए अदालत की तरफ चले, तो सारे शहर में हलचल मच गई। मेलों में कदाचित् आँखें इतनी व्यग्र न होती होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा।"

(i) नमक का दरोगा पाठ के लेखक कौन हैं?

(क) महादेवी वर्मा (ख) प्रेमचंद (ग) हरिशंकर परसाई (घ) कृष्णा सोबती

(ii) दुनिया सोती थी मगर दुनिया की _____ जागती थी –

(क) आँख (ख) कान (ग) जीभ (घ) नाक

(iii) कौन देवताओं की भाँति गरदनें चला रहे थे।

(क) पानी को दूध के नाम से बेचनेवाला ग्वाला
(ख) कल्पित रोज़नामचे बनाने वाले बाबू लोग
(ग) सेठ और साहूकार,
(घ) उपर्युक्त सभी

(iv) भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा क्यों?

(क) वंशीधर की नौकरी लग गई थी
(ख) वंशीधर की नौकरी चली गई थी
(ग) पंडित अलोपीदीन की गिरफ्तारी हो गई थी
(घ) पंडित अलोपीदीन अदालत से बरी हो गए थे

(v) मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया किस घटना के बारे में कहा गया है?

(क) वंशीधर की नौकरी लगने के बारे में
(ख) वंशीधर की नौकरी चली जाने के बारे में
(ग) पंडित अलोपीदीन की गिरफ्तारी के बारे में
(घ) पंडित अलोपीदीन के अदालत से बरी हो जाने के बारे में

उत्तर-

प्रश्न संख्या	**(i)**	**(ii)**	**(iii)**	**(iv)**	**(v)**
सही विकल्प	**ख**	**ग**	**घ**	**ग**	**ग**

गद्यांश-4

"पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील मुख़्तार उनके आज्ञापालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना माल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करनेवाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के निमित्त वकीलों की एक सेना तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया। वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र। गवाह थे किंतु लोभ से डाँवाडोल।"

(i) नमक की कालाबाजारी कौन कर रहा था –

(क) अलोपदीन (ख) रामदीन (ग) दातादीन (घ) मातादीन

(ii) किसका लाखों का लेन देन था –

(क) वंशीधर का (ख) मुरलीधर का (ग) मातादीन का (घ) अलोपदीन का

(iii) अलोपदीन को, दरोगा को किस बल पर खरीद लेने का विश्वास था –

(क) ताकत के बल पर (ख) छल के बल पर (ग) रिश्वत के बल पर (घ) सम्बन्ध के बल पर

(iv) " न्याय और नीति सब लक्ष्मी के खिलौने है" – यह कथन किसका था?

(क) वंशीधर (ख) अलोपदीन (ग) बदलूसिंह (घ) वंशीधर के पिता का

(v) मुकदमा चलाने पर अदालत ने किसे दोषी ठहराया?

(क) वंशीधर (ख) अलोपीदीन (ग) वकील (घ) किसी को भी नहीं

(vi) लोगों को किस बात पर आश्चर्य हो रहा था?

(क) अलोपीदीन की गिरफ्तारी पर (ग) न्यायाधीश के न्याय पर

(ख) वंशीधर की ईमानदारी पर (घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर-

प्रश्न	(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)
सही	क	घ	ग	ख	क	घ

2. 'मियाँ नसीरुद्दीन'-कृष्णा सोबती

गद्यांश-1

"मियाँ नसीरुद्दीन ने आँखों के कंचे हम पर फेर दिए। फिर तरेरकर बोले 'क्या मतलब? पूछिए साहब-नानबाई इल्म लेने कहीं और जाएगा? क्या नगीनासाज़ के पास? क्या आईनासाज़ के पास? क्या मीनासाज़के पास? या रफ़ूगर, रँगरेज़ या तेली-तंबोली से सीखने जाएगा? क्या फ़रमा दिया साहब-यह तो हमारा खानदानी पेशा ठहरा। हाँ, इल्म की बात पूछिए तो जो कुछ भी सीखा, अपने वालिद उस्ताद से ही। मतलब यह कि हम घर से न निकले कि कोई पेशा अख्तियार करेंगे। जो बाप-दादा का हुनर था वही उनसे पाया और वालिद मरहूम के उठ जाने पर आ बैठे उन्हीं के ठीये पर!'

(i) नानबाई कौन होते है?

(क) खेती करने वाले (ख) हलवाई का काम करने वाले

(ग) मिठाई बनाने वाले (घ) रोटी बनाने का काम करने वाले

(ii) खानदानी पेशा से क्या अभिप्राय होता है?

(क) जिस व्यवसाय में रुचि हो (ख) जाति से सम्बंधित धंधा

(ग) पैतृक धंधा (घ) रोटियां बनाने का धंधा

(iii) 'तरेरकर' से क्या तात्पर्य है?

(क) सामान्य रूप से देखना (ख) गुस्से से देखना (ग) प्रेम से देखना (घ) घूरकर देखना

(iv) मियाँ ने रोटी बनाने का काम किनसे सिखा?

(क) अपने खानदान से (ख) अपने पिता से (ग) परदादा से (घ) दूसरे की दूकान पर काम करके

(v) "मियाँ नसीरुद्दीन ने आँखों के कंचे हम पर फेर दिए" वाक्य में **'हम'** पद का प्रयोग किनके लिए किया गया है?

(क) अखबारवालों के लिए (ख) लेखिका के लिए

(ग) अखबार पढने वालों के लिए (घ) इनमें से कोई नहीं

गद्यांश-2

"फिर तेवर चढ़ा हमें घूरकर कहा 'तुनकी पापड़ से ज्यादा महीन होती है, महीन। हाँ किसी दिन खिलाएँगे, आपको।' एकाएक मियाँ की आँखों के आगे कुछ कौंध गया। एक लंबी साँस भरी और किसी गुमशुदा याद को ताज़ा करने को कहा उतर गए वे ज़माने और गए वे कद्रदान जो पकाने-खाने की कद्र करना जानते थे। मियाँ अब क्या रखा है... निकाली तंदूर से-निगली और हज़म!"

(i) तुनकी क्या है?

(क) पापड़ (ख) सेवइयां (ग) मिठाई (घ) रोटी

(ii) मियाँ के आगे क्या कौंध गया?

(क) पुरानी याद (ख) पुराना ज़माना (ग) कद्रदान लोग (घ) उक्त सभी

(iii) 'उतर गए वे जमाने' से क्या अभिप्राय है?

(क) आने वाला समय (ख) गुजरा हुआ समय (ग) संघर्ष का समय (घ) इनमें से कोई नहीं

(iv) मियाँ को क्या गम है?

(क) अपने खानदान का (ख) अपने पिता का (ग) खाने के कद्रदान नहीं है (घ) अपने व्यवसाय का

(v) 'कद्रदान' का क्या अर्थ है?

(क) क़द्र(सम्मान) करने वाले (ख) गर्व करने वाले (ग) ज्यादा खाने वाले (घ) इनमें से कोई नहीं

3. अपू के साथ ढाई साल – सत्यजित राय

गद्यांश-1

"रासबिहारी एवेन्यू की एक बिल्डिंग में मैंने एक कमरा भाड़े पर लिया था, वहाँ पर बच्चे इंटरव्यू के लिए आते थे। बहुत-से लड़के आए, लेकिन अपू की भूमिका के लिए मुझे जिस तरह का लड़का चाहिए था, वैसा एक भी नहीं था। एक दिन एक लड़का आया। उसकी गर्दन पर लगा पाउडर देखकर मुझे शक हुआ। नाम पूछने पर नाजुक आवाज में वह बोला-'टिया'। उसके साथ आए उसके पिता जी से मैंने पूछा, 'क्या अभी-अभी इसके बाल कटवाकर यहाँ ले आए हैं?' वे सज्जन पकड़े गए। सच छिपा नहीं सके बोले, ''असल में यह मेरी बेटी है। अपू की भूमिका मिलने की आशा से इसके बाल कटवाकर आपके यहाँ ले आया हूँ।''

विज्ञापन देकर भी अपू की भूमिका के लिए सही तरह का लड़का न मिलने के कारण मैं तो बेहाल हो गया। आखिर एक दिन मेरी पत्नी छत से नीचे आकर मुझसे बोली, 'पास वाले मकान की छत पर एक लड़का देखा, जरा उसे बुलाइए तो!' आखिर हमारे पड़ोस के घर में रहने वाला लड़का सुबीर बनर्जी ही 'पथेर पांचाली' में 'अपू' बना। फ़िल्म का काम आगे भी ढाई साल चलने वाला है, इस बात का अंदाजा मुझे पहले नहीं था।

इसलिए जैसे-जैसे दिन बीतने लगे, वैसे-वैसे मुझे डर लगने लगा। अपू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाले बच्चे अगर ज्यादा बड़े हो गए, तो फ़िल्म में वह दिखाई देगा! लेकिन मेरी खुश किस्मती से उस उम्र में बच्चे जितने बढ़ते हैं, उतने अपू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाले बच्चे नहीं बढ़े। इंदिरा ठाकरुन की भूमिका निभाने वाली अस्सी साल उम्र की चुन्नीबाला देवी ढाई साल तक काम कर सकी, यह भी मेरे सौभाग्य की बात थी"

(i) रासबिहारी एवेन्यू की एक बिल्डिंग में कमरा भाड़े पर क्यों लिया गया था?

(क) फ़िल्म की शूटिंग के लिए (ख) अपू के लिए
(ग) इंटरव्यू के लिए (घ) ठहरने के लिए

(ii) गर्दन पर लगा पाउडर देखकर लेखक को क्या शक हुआ?

(क) यह लड़का नहीं है बल्कि लड़की है (ग) यह सही पात्र है
(ख) अपू की भूमिका के लिए लड़का मिल गया है (घ) इनमें से कोई नहीं

(iii) विज्ञापन किसलिए दिया गया था?

(क) फ़िल्म के प्रचार-प्रसार के लिए (ग) फ़िल्म के लिए कर्मचारियों की आवश्यता हेतु
(ख) जनता को शूटिंग की जानकारी देने के लिए (घ) अपू की भूमिका के लिए लड़का ढूँढने हेतु

(iv) अपू की भूमिका किसने निभाई थी?

(क) सुधीर बनर्जी (ख) सुबीर बनर्जी (ग) सुबोद बनर्जी (घ) सुनील बनर्जी

(v) लेखक किसे खुशकिस्मती या सौभाग्य की बात मानता है?

(क) अपू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाले बच्चे नहीं बढ़े
(ख) अपू की भूमिका के लिए लड़का मिल गया
(ग) अस्सी साल उम्र की चुन्नीबाला देवी ढाई साल तक काम कर सकी
(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर-(i) (ग) इंटरव्यू के लिए (ii) (क) यह लड़का नहीं है बल्कि लड़की है (iii) (घ) अपू की भूमिका के लिए लड़का ढूँढने हेतु (iv) (ख) सुबीर बनर्जी (v) (घ) उपर्युक्त सभी

गद्यांश-2

"शूटिंग की शुरुआत में ही एक गड़बड़ हो गई। अपू और दुर्गा को लेकर हम कलकत्ता' से सत्तर मील पर पालसिट नाम के एक गाँव गए। वहाँ रेल-लाइन के पास काशफूलों से भरा एक मैदान था। अपू और दुर्गा पहली बार रेलगाड़ी देखते हैं-इस सीन की शूटिंग हमें करनी थी। यह सीन बहुत ही बड़ा था। एक दिन में उसकी शूटिंग पूरी होना नामुमकिन था। कम-से-कम दो दिन लग सकते थे। पहले दिन जगद्धात्री पूजा का त्योहार था। दुर्गा के पीछे-पीछे दौड़ते हुए अपू काशफूलों के वन में पहुँचता है। सुबह शूटिंग शुरू करके शाम तक हमने सीन का आधा भाग चित्रित किया। निर्देशक, छायाकार, छोटे अभिनेता-अभिनेत्री हम सभी इस क्षेत्र में नवागत होने के कारण थोड़े बौराए हुए ही थे, बाकी का सीन बाद में चित्रित करने का निर्णय लेकर हम घर पहुँचे। सात दिन बाद शूटिंग के लिए उस जगह गए, तो वह जगह हम पहचान ही नहीं पाए! लगा, ये कहाँ आ गए हैं हम? कहाँ गए वे सारे काशफूल। बीच के सात दिनों में जानवरों ने वे सारे काशफूल खा डाले थे! अब अगर हम उस जगह बाकी आधे सीन की शूटिंग करते, तो पहले आधे सीन के साथ उसका मेल कैसे बैठता? उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती"

(i) 'अपू के साथ ढाई साल' पाठ के लेखक का क्या नाम है?

(क) प्रेमचंद (ख) सत्यजित राय (ग) कृष्णा सोबती (घ) बालमुकुंद गुप्त

(ii) निर्देशक, छायाकार, छोटे अभिनेता-अभिनेत्री और लेखक क्यों बौराए हुए थे?

(क) शूटिंग पूरी हो जाने के कारण (ग) नवागत होने के कारण
(ख) शूटिंग खत्म न होने के कारण (घ) इनमें से कोई नहीं

(iii) वे सात दिन बाद शूटिंग के लिए उस जगह गए, तो क्या हुआ?

(क) उस जगह को पहचान ही नहीं पाए
(ख) शूटिंग पूरी नहीं हुई
(ग) वहाँ जानवर आ गए
(घ) वहाँ कोई न था

(iv) बीते सात दिनों में जानवरों ने क्या किया?

(क) उस जगह पर कोई नहीं गया
(ख) शूटिंग पूरी हुई
(ग) सारे काशफूल खा डाले थे
(घ) वे वहीं रुके रहे

(v) अब अगर उस जगह बाकी आधे सीन की शूटिंग की जाती, तो क्या होता?

(क) कोई प्रभाव नहीं पड़ता
(ख) शूटिंग बहुत प्रभावी होती
(ग) काशफूल बहुत सुंदर दिखाई देते
(घ) उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती

उत्तर-(i) (ख) सत्यजित राय (ii) (ग) नवागत होने के कारण (iii) (क) उस जगह को पहचान ही नहीं पाए (iv) (ग) सारे काशफूल खा डाले थे (v) (घ) उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती

गद्यांश-3

"श्रीनिवास नामक घूमते मिठाईवाले से मिठाई खरीदने के लिए अपू और दुर्गा के पास पैसे नहीं हैं। वे तो मिठाई खरीद नहीं सकते, इसलिए अपू और दुर्गा उस मिठाईवाले के पीछे-पीछे मुखर्जी के घर के पास जाते हैं। मुखर्जी अमीर आदमी हैं। वे तो मिठाई जरूर खरीदेंगे और उनका मिठाई खरीदना देखने में ही अपू और दुर्गा की खुशी है।

इस दृश्य का कुछ अंश चित्रित होने के बाद हमारी शूटिंग कुछ महीनों के लिए स्थगित हो गई। पैसे हाथ आने पर फिर जब हम उस गाँव में शूटिंग करने के लिए गए, तब खबर मिली कि श्रीनिवास मिठाईवाले की भूमिका जो सज्जन कर रहे थे, उनका देहांत हो गया है। अब पहले वाले श्रीनिवास का मिलता-जुलता दूसरा आदमी कहाँ से मिलेगा?

आखिर श्रीनिवास की भूमिका के लिए हमें जो सज्जन मिले, उनका चेहरा पहले वाले श्रीनिवास से मिलता-जुलता नहीं था, लेकिन शरीर से वे पहले श्रीनिवास जैसे ही थे। उन्हीं पर हमने दृश्य का बाकी अंश चित्रित किया। फ़िल्म में दिखाई देता है कि एक नंबर श्रीनिवास बाँसबन से बाहर आता है और अगले शॉट में दो नंबर श्रीनिवास कैमरे की ओर पीठ करके मुखर्जी के घर के गेट के अंदर जाता है। 'पथेर पांचाली' फ़िल्म अनेक लोगों ने एक से अधिक बार देखी है, लेकिन श्रीनिवास के मामले में यह बात किसी के ध्यान में आई है, ऐसा मैंने नहीं सुना"

(i) अपू और दुर्गा ने मिठाई क्यों नहीं खरीदी?

(क) क्योंकि उन्हें मिठाई खाने की इच्छा नहीं थी।
(ख) क्योंकि उनके पास पैसे नहीं थे।
(ग) क्योंकि वे अमीर थे।
(घ) क्योंकि उन्हें मिठाई अच्छी नहीं लगती थी।

(ii) अपू और दुर्गा की खुशी किसमें है?

(क) मुखर्जी द्वारा मिठाई खरीदे जाने को देखने में
(ख) मिठाई लेकर घूमने में
(ग) मिठाई खाने में
(घ) इनमें से कोई नहीं

(iii) शूटिंग किस कारण से स्थगित हुई?

(क) श्रीनिवास के देहांत के कारण
(ख) मौसम खराब हो जाने के कारण
(ग) शूटिंग एक बार में ही पूरी हो जाने के कारण
(घ) धन की कमी के कारण

(iv) लेखक के सामने क्या समस्या आई?

(क) अपू और दुर्गा को मिठाई नहीं मिल पाई
(ख) श्रीनिवास जैसे दिखाई देने वाले दूसरे सज्जन मिल गए
(ग) श्रीनिवास की भूमिका वाले सज्जन का देहांत हो गया
(घ) मुखर्जी ने मिठाई खरीद ली

(v) मृत श्रीनिवास की भूमिका के लिए जो सज्जन मिले, उन्हें लेकर क्या समस्या थी?

(क) उन्हें अभिनय नहीं आता था (ग) उनका शरीर श्रीनिवास जैसा नहीं था
(ख) उनका चेहरा श्रीनिवास से मिलता-जुलता नहीं था (घ) कोई समस्या नहीं थी

उत्तर-(i) (ख) क्योंकि उनके पास पैसे नहीं थे। (ii) (क) मुखर्जी द्वारा मिठाई खरीदे जाने को देखने में (iii) (घ) धन की कमी के कारण (iv) (ग) श्रीनिवास की भूमिका वाले सज्जन का देहांत हो गया (v) (ख) उनका चेहरा श्रीनिवास से मिलता-जुलता नहीं था

गद्यांश-4

"पैसों की कमी के कारण ही बारिश का दृश्य चित्रित करने में बहुत मुश्किल आई थी। बरसात के दिन आए और गए, लेकिन हमारे पास पैसे नहीं थे, इस कारण शूटिंग बंद थी। आखिर जब हाथ में पैसे आए, तब अक्टूबर का महीना शुरू हुआ था। शरद ऋतु में, निरभ्र आकाश के दिनों में भी शायद बरसात होगी, इस आशा से मैं अपू और दुर्गा की भूमिका करने वाले बच्चे, कैमरा और तकनीशियन को साथ लेकर हर रोज देहात में जाकर बैठा रहता था। आकाश में एक भी काला बादल दिखाई दिया, तो मुझे लगता था कि बरसात होगी। मैं इच्छा करता, वह बादल बहुत बड़ा हो जाए और बरसने लगे।

आखिर एक दिन हुआ भी वैसा ही। शरद ऋतु में भी आसमान में बादल छा गए और धुआँधार बारिश शुरू हुई। उसी बारिश में भीगकर दुर्गा भागती हुई आई और उसने पेड़ के नीचे भाई के पास आसरा लिया। भाई-बहन एक-दूसरे से चिपककर बैठे। दुर्गा कहने लगी-'नेबूर-पाता करमचा, हे वृष्टी घरे जा!ऽ' बरसात, ठंड, अपू का बदन खुला, प्लास्टिक के कपड़े से ढके कैमरे को आँख लगाकर देखा, तो वह ठंड लगने के कारण सिहर रहा था। शॉट पूरा होने के बाद दूध में थोड़ी ब्रांडी मिलाकर दी और भाई-बहन का शरीर गरम किया। जिन्होंने 'पथेर पांचाली' फ़िल्म देखी है, वे जानते ही हैं कि वह शॉट बहुत अच्छा चित्रित हुआ है"

(i) शूटिंग बंद क्यों रही?

(क) क्योंकि बरसात के दिन आए और गए (ग) पैसों की कमी के कारण
(ख) शूटिंग पूरी हो जाने के कारण (घ) अक्टूबर माह के कारण

(ii) लेखक हर रोज देहात में जाकर क्यों बैठा रहता था?

(क) बारिश होने के कारण (ग) अपना समय गुजारने के लिए
(ख) जेब में पैसे आ जाने के कारण (घ) बारिश की उम्मीद में

(iii) लेखक की क्या इच्छा थी?

(क) तेज बारिश होने की (ख) शूटिंग बंद करने की (ग) देहात मे जाने की (घ) काला बादल देखने की

(iv) 'नेबूर' शब्द का अर्थ है-

(क) पड़ोसी के (ख) बेर के (ग) नींबू के (घ) आम के

(v) लेखक को बारिश का दृश्य शूट करने का अवसर कब मिला?

(क) वर्षा ऋतु में (ख) शरद ऋतु में (ग) शीत ऋतु में (घ) ग्रीष्म ऋतु में

उत्तर-(i) (ग) पैसों की कमी के कारण (ii) (घ) बारिश की उम्मीद में (iii) (क) तेज बारिश होने की (iv) (ग) नींबू के (v) (ख) शरद ऋतु में

4. विदाई संभाषण-बालमुकुंद गुप्त

गद्यांश-1

विचारिए तो, क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई। "कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे। अलिफ़ लैला के अलहदीन ने चिराग रगड़कर और अबुलहसन ने बगदाद के खलीफ़ा की गद्दी पर आँख खोलकर वह शान न देखी, जो दिल्ली दरबार में आपने देखी। आपकी और आपकी लेडी की कुर्सी सोने की थी और आपके प्रभु महाराज के छोटे भाई और उनकी पत्नी की चाँदी की। आप दाहिने थे, वह बाएँ, आप प्रथम

थे, वह दूसरे। इस देश के सब रईसों ने आपको सलाम पहले किया और बादशाह के भाई को पीछे। जुलूस में आपका हाथी सबसे आगे और सबसे ऊँचा था; हौदा, चँवर, छत्र आदि सबसे बढ़-चढ़कर थे। सारांश यह है कि ईश्वर और महाराज एडवर्ड के बाद इस देश में आप ही का एक दर्जा था। किंतु अब देखते हैं कि जंगी लाट के मुकाबले में आपने पटखनी खाई, सिर के बल नीचे आ रहे! आपके स्वदेश में वही ऊँचे माने गए, आपको साफ़ नीचा देखना पड़ा! पद त्याग की धमकी से भी ऊँचे न हो सके।"

(i) 'कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे' कथन किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(क) वायसराय कर्ज़न के लिए
(ख) ब्रिटेन के शासक के लिए
(ग) भारतीय बादशाहों के लिए
(घ) उपर्युक्त सभी के लिए

(ii) अबुलहसन कहाँ के खलीफ़ा थे?

(क) इंगलैंड के (ख) बगदाद के (ग) दिल्ली के (घ) अफ़गानिस्तान के

(iii) लार्ड कर्ज़न ने किस बात की धमकी दी?

(क) पदत्याग की
(ख) कर्मचारियों को निकालने की
(ग) भारतीय बादशाहों से बदला लेने की
(घ) बंगाल विभाजन की

(iv) 'आपके स्वदेश में वही ऊँचे माने गए।' कथन में "वही" शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(क) ब्रिटेन के शासक एडवर्ड के लिए
(ख) ईश्वर के लिए
(ग) दिल्ली के शासक के लिए
(घ) लॉर्ड कर्ज़न के लिए

(v) निम्नलिखित में से गलत कथन का चयन कीजिए-

(क) लॉर्ड कर्ज़न द्वारा ब्रिटिश सरकार को पद त्याग की धमकी दी गई।
(ख) महाराज एडवर्ड लॉर्ड कर्ज़न से ऊँचे माने गए
(ग) ईश्वर और महाराज एडवर्ड के बाद लॉर्ड कर्ज़न का स्थान था।
(घ) लॉर्ड कर्ज़न हमेशा भारतीयों के कल्याण के लिए काम करते थे

उत्तमाला

)i)-क	)ii)-ख	)ii)-क	)iv)-क	)v)-घ

गद्यांश-2

"आप बहुत धीर-गंभीर प्रसिद्ध थे। उस सारी धीरता-गंभीरता को आपने इस बार कौंसिल में बेकानूनी कानून पास करते और कनवोकेशन वक्तृता देते समय दिवाला निकाल दिया। यह दिवाला तो इस देश में हुआ। उधर विलायत में आपके बार-बार इस्तीफ़ा देने की धमकी ने प्रकाश कर दिया कि जड़ हिल गई है। अंत में वहाँ भी आपको दिवालिया होना पड़ा और धीरता-गंभीरता के साथ दृढ़ता को भी तिलांजलि देनी पड़ी। इस देश के हाकिम आपकी ताल पर नाचते थे, राजा-महाराजा डोरी हिलाने से सामने हाथ बाँधे हाजिर होते थे। आपके एक इशारे में प्रलय होती थी। कितने ही राजों को मट्टी के खिलौने की भाँति आपने तोड़-फोड़ डाला। कितने ही मट्टी-काठ के खिलौने आपकी कृपा के जादू से बड़े बड़े पदाधिकारी बन गए। आपके इस इशारे में इस देश की शिक्षा पायमाल हो गई, स्वाधीनता उड़ गई। बंग देश के सिर पर आरह रखा गया। आह, इतने बड़े माइ लॉर्ड का यह दर्जा हुआ कि फौजी अफसर उनके इच्छित पद पर नियत न हो सका और उनको उसी गुस्से के मारे इस्तीफ़ा दाखिल करना पड़ा, वह भी मंजूर हो गया। उनका रखाया एक आदमी नौकर न रखा, उलटा उन्हीं को निकल जाने का हुक्म मिला"

(i) उपर्युक्त गद्यांश में किस पर कटाक्ष किया गया है?

(क) नादिर शाह पर (ख) अबुलहसन पर (ग) एडवर्ड पंचम पर (घ) लॉर्ड कर्ज़न पर

(ii) लॉर्ड कर्ज़न ने इस्तीफा क्यों दाखिल कर दिया?

(क) कर्ज़न की पसंद के व्यक्ति को उनके मनपसंद पद पर नियुक्त नहीं किया गया।
(ख) ब्रिटेन के शासक के साथ कर्ज़न के संबंध अच्छे नहीं थे।
(ग) भारतीय जनता की आंदोलनों से वे परेशान थे।
(घ) लॉर्ड कर्ज़न वापस ब्रिटेन जाना चाहते थे।

(iii) 'अंत में वहाँ भी आपको दिवालिया होना पड़ा' पंक्ति का आशय है-

(क) ब्रिटिश सरकार द्वारा कर्ज़न को दिवालिया घोषित कर दिया गया।
(ख) कर्ज़न को पद से हटा दिया गया तथा उसकी सारी शक्तियाँ छिन ली गईं।
(ग) ब्रिटिश सरकार द्वारा कर्ज़न को पदावनत कर दिया गया।
(घ) लॉर्ड कर्ज़न की सारी संपत्ति को ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया।

(iv) 'आपके एक इशारे में प्रलय होती थी।' इस कथन के माध्यम से किसकी ओर इशारा किया गया है?

(क) महाराज एडवर्ड की ओर (ख) नादिरशाह की ओर (ग) अबुलहसन की ओर (घ) लॉर्ड कर्ज़न की ओर

(v) लॉर्ड कर्ज़न के संबंध में कौन-सा कथन सही है?

(क) उन्होने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को बर्बाद किया (ख) भारतीयों पर बंगाल विभाजन थोपा
(ग) अनेक राजाओं की गद्दी छिन ली। (घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर

)i)-घ	)ii)-क	)iii)-ख	)iv)-घ	)v)-घ

5. गलता लोहा-शेखर जोशी

गद्यांश-1

"धनराम की मंदबुद्धि रही हो या मन में बैठा हुआ डर कि पूरे दिन घोटा लगाने पर भी उसे तेरह का पहाड़ा याद नहीं हो पाया था। छुट्टी के समय जब मास्साब ने उससे दुबारा पहाड़ा सुनाने को कहा तो तीसरी सीढ़ी तक पहुँचते-पहुँचते वह फिर लड़खड़ा गया था। लेकिन इस बार मास्टर त्रिलोक सिंह ने उसके लाए हुए बेंत का उपयोग करने की बजाय ज़बान की चाबुक लगा दी थी, 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' अपने थैले से पाँच-छह दराँतियाँ निकालकर उन्होंने धनराम को धार लगा लाने के लिए पकड़ा दी थीं। किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। धनराम हाथ-पैर चलाने लायक हुआ ही था कि बाप ने उसे धौंकनी फूँकने या सान लगाने के कामों में उलझाना शुरू कर दिया और फिर धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगा"

(i) पूरे दिन घोटा लगाने पर भी धनराम तेरह का पहाड़ा क्यों नहीं याद कर पाया?

(क) मंदबुद्धि होने के कारण (ख) मन में डर होने के कारण
(ग) क और ख दोनों (घ) उसने अच्छे से नहीं पढ़ा

(ii) धनराम पर ज़बान की चाबुक किसने लगाई?

(क) मोहन के पिता ने (ख) मोहन ने (ग) मास्टर त्रिलोक सिंह ने (घ) धनराम के पिता ने

(iii) मास्टर त्रिलोक सिंह द्वारा अपने थैले से दराँतियाँ निकालकर देने से धनराम पर क्या प्रभाव पड़ा?

(क) धनराम का आत्मविश्वास बढा (ख) धनराम को लगाने लगा कि वह पढाई नहीं कर सकता
(ग) उसे अपने पैतृक कार्य पर अभिमान हुआ (घ) उपर्युक्त सभी

(iv) किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य किसकी नहीं थी?

(क) मोहन के पिता की (ख) धनराम के पिता की (ग) मास्टर त्रिलोक सिंह की (घ) धनराम की

(v) धनराम के पिता किसे घन चलाने की विद्या सिखाने लगे?

(क) मोहन को (ख) पुरोहित को (ग) मास्टर त्रिलोक सिंह को (घ) धनराम को

उत्तर-(i) ग (ii) ग (iii) ख (iv) ख (v) घ

गद्यांश-2

"औसत दफ़्तरी बड़े बाबू की हैसियत वाले रमेश के लिए मोहन को अपना भाई-बिरादर बतलाना अपने सम्मान के विरुद्ध जान पड़ता था और उसे घरेलू नौकर से अधिक हैसियत वह नहीं देता था, इस बात को मोहन भी समझने लगा था। थोड़ी-बहुत हीला-हवाली करने के बाद रमेश ने निकट के ही एक साधारण से स्कूल में उसका नाम लिखवा दिया, लेकिन एकदम नए वातावरण और रात-दिन के काम के बोझ के कारण गाँव का वह मेधावी छात्र शहर के स्कूली जीवन में अपनी कोई पहचान नहीं बना पाया। उसका जीवन एक बँधी-बँधाई लीक पर चलता रहा। साल में एक बार गर्मियों की छुट्टी में गाँव जाने का मौका भी तभी मिलता, जब रमेश या उसके घर का कोई प्राणी गाँव जाने वाला होता वरना उन छुट्टियों को भी अगले दरजे की तैयारी के नाम पर उसे शहर में ही गुज़ार देना पड़ता था। अगले दरजे की तैयारी तो बहाना भर थी, सवाल रमेश और उसकी गृहस्थी की सुविधा-असुविधा का था। मोहन ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया था, क्योंकि और कोई चारा भी नहीं था। घरवालों को अपनी वास्तविक स्थिति बतलाकर वह दुखी नहीं करना चाहता था। वंशीधर उसके सुनहरे भविष्य के सपने देख रहे थे"

(i) रमेश मोहन को किस हैसियत में रखता था?

(क) घरेलू नौकर की (ख) मालिक की (ग) मित्र की (घ) पारिवारिक सदस्य की

(ii) रमेश मोहन को अपना भाई-बिरादर क्यों नहीं बताना चाहता था?

(क) इससे वह मोहन का अपमान नहीं करना चाहता था (ख) इसे वह अपना अपमान समझता था
(ग) वह मोहन को इस लायक नहीं समझता था (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

(iii) रमेश ने मोहन का दाखिला कहाँ करवाया?

(क) कॉन्वेंट स्कूल में (ख) माध्यमिक स्कूल में (ग) एक साधारण स्कूल में (घ) गुरुकुल में

(iv) मोहन को किस बात की जानकारी थी?

(क) कि उसके पिता साधनहीन हैं। (ग) कि उसके पिता जमींदार हैं।
(ख) कि उसके पिता साधन संपन्न हैं। (घ) कि उसके पिता बड़े व्यवसायी हैं।

(v) निम्न में उचित विलोम शब्द युग्म है

(क) हीला-हवाली (ख) मेधावी छात्र (ग) सुविधा असुविधा (घ) सपने अपने

उत्तर-(i) क (ii) ख (iii) ग (iv) क (v) ग

6. रजनी-मन्नू भंडारी

गद्यांश-1

"हाँ! कॉपी लौटाते हुए कहा था कि तुमने किया तो अच्छा है पर यह तो हाफ़-ईयरली है... बहुत आसान पेपर होता है इसका तो। अब अगर ईयरली में भी पूरे नंबर लेने हैं तो तुरंत ट्यूशन लेना शुरू कर दो। वरना रह जाओगे। सात लड़कों ने तो शुरू भी कर दिया था। पर मैंने जब मम्मी-पापा से कहा, हमेशा बस एक ही जवाब (मम्मी की नकल उतारते हुए) मैथ्स में तो तू वैसे ही बहुत अच्छा है, क्या करेगा ट्यूशन लेकर? देख लिया अब? सिक्स्थ पोजीशन आई है मेरी। जो आज तक कभी नहीं आई थी। अमित की आँखों से फिर आँसू टपक पड़ते हैं"

(i) अमित के अध्यापक उसे क्या कह रहे थे?

(क) ट्यूशन लगाने के लिए (ग) गणित पर ध्यान देने के लिए
(ख) और अधिक पढ़ने के लिए (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ii) गद्यांश के अनुसार, कितने लड़कों ने ट्यूशन लेना शुरू भी कर दिया था?

(क) आठ (ख) दस (ग) बारह (घ) सात

(iii) अमित की मम्मी ने उसे गणित का ट्यूशन लगाने से मना क्यों किया?

(क) घर में ट्यूशन के लिए अधिक पैसे नहीं थे (ख) क्योंकि अमित गणित में होशियार था
(ग) क्योंकि अमित गणित में अच्छे अंक नहीं लाया था (घ) उपरोक्त सभी

(iv) अमित की आँखों में आँसू क्यों आ जाते हैं?

(क) मम्मी के द्वारा ट्यूशन न लगाने की वजह से (ग) निराशाजनक परिणाम के कारण
(ख) अध्यापक द्वारा डांटने के कारण (घ) क और ग दोनों

(v) 'यह तो हाफ़-ईयरली है..बहुत आसान पेपर होता है इसका तो' अध्यापक ने ऐसा क्यों कहा होगा?

(क) अध्यापक को अमित के भविष्य की चिंता थी
(ख) अध्यापक अमित पर ट्यूशन के लिए दवाब बना रहे थे
(ग) अध्यापक अमित को प्रथम स्थान दिलाने के लिए प्रयासरत थे
(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर – (i) क (ii) घ (iii) ख (iv) घ (v) ख

गद्यांश-2

"देखो, तुम मुझे फिर गुस्सा दिला रहे हो रवि। गलती करने वाला तो है ही गुनहगार, पर उसे बर्दाश्त करने वाला भी कम गुनहगार नहीं होता जैसे लीला बेन और कांति भाई और हज़ारों हज़ारों माँ-बाप। लेकिन सबसे बड़ा गुनहगार तो वह है जो चारों तरफ अन्याय, अत्याचार और तरह-तरह की धाँधलियों को देखकर भी चुप बैठा रहता है, जैसे तुम। (नकल उतारते हुए) हमें क्या करना है, हमने कोई ठेका ले रखा है दुनिया का। (गुस्से और हिकारत से) माई फुट (उठकर भीतर जाने लगती हैं। जाते-जाते मुड़कर) तुम जैसे लोगों के कारण ही तो इस देश में कुछ नहीं होता, हो भी नहीं सकता! (भीतर चली जाती है।) "

(i) देखो, तुम मुझे फिर गुस्सा दिला रहे हो रवि। यह किसने कहा?

(क) लेखिका ने (ख) रजनी ने (ग) अमित ने (घ) कांतिभाई ने

(II) रजनी के अनुसार हज़ारों-हज़ारों माँ-बाप भी गुनहगार हैं? क्योंकि

(क) वे गुनाह को बर्दाश्त करते हैं (ग) वे गुनहगारों का विरोध करते हैं
(ख) वे गुनहगारों की शिकायत करते हैं (घ) वे गुनहगारों से मिल जाते हैं

(III) जो चारों तरफ अन्याय, अत्याचार और तरह-तरह की धाँधलियों को देखकर भी चुप बैठा रहता है, वह है?

(क) गुनाह को बर्दाश्त करने वाला (ग) सबसे बड़ा गुनहगार
(ख) गुनहगारों की शिकायत करने वाला (घ) गुनहगारों का विरोध करने वाला

(iv) किन जैसे लोगों के कारण इस देश में कुछ नहीं सकता?

(क) रजनी जैसे (ख) कांति भाई जैसे (ग) अमित जैसे (घ) रवि जैसे

(v) रजनी पाठ की लेखिका का क्या नाम है?

(क) रजनी (ख) मन्नू भंडारी (ग) कृष्णा सोबती (घ) लीला बेन

उत्तर-(i) **ख** (ii) **क** (iii) **ग** (iv) **घ** (v) **ख**

7. जामुन का पेड़ – कृश्नचंदर

गद्यांश-1

"दूसरे दिन माली ने चपरासी को बताया, चपरासी ने क्लर्क को, क्लर्क ने हैड क्लर्क को। थोड़ी ही देर में सेक्रेटेरियेट में यह अफवाह फैल गई कि दबा हुआ आदमी शायर है। बस, फिर क्या था। लोगों का झुंड का झुंड शायर को देखने के लिए उमड़ पड़ा। इसकी चर्चा शहर में भी फैल गई और शाम तक गली-गली से शायर

जमा होने शुरू हो गए। सेक्रेटेरियेट का लॉन भाँति-भाँति के कवियों से भर गया और दबे हुए आदमी के चारों ओर कवि-सम्मेलन का-सा वातावरण उत्पन्न हो गया। सेक्रेटेरियेट के कई क्लर्क और अंडर सेक्रेटरी तक जिन्हें साहित्य और कविता से लगाव था, रुक गए। कुछ शायर दबे हुए आदमी को अपनी कविताएँ और दोहे सुनाने लगे। कई क्लर्क उसको अपनी कविता पर आलोचना करने को मजबूर करने लगे"

(i) सेक्रेटेरियेट में किस बात की अफवाह फैल गई?

(क) चपरासी शायर है (ख) क्लर्क शायर है (ग) माली शायर है (घ) दबा हुआ आदमी शायर है

(ii) लोगों का झुंड किसे देखने के लिए उमड़ पड़ा?

(क) चपरासी को (ख) क्लर्क को (ग) शायर को (घ) माली को

(iii) सेक्रेटेरियेट का लॉन किन लोगों से भर गया?

(क) चपरासियों से (ख) कवियों से (ग) नेताओं से (घ) सचिवों से

((iv) दबे हुए आदमी के चारों और कैसा वातावरण उत्पन्न हो गया?

(क) कवि सम्मेलन का-सा वातावरण (ग) जुलूस का-सा वातावरण
(ख) मेले का-सा वातावरण (घ) धार्मिक स्थल का-सा वातावरण

(v) उपर्युक्त गद्यांश में किस पर व्यंग्य किया गया है?

(क) वनों कि अंधाधुंध कटाई पर (ग) राजनेताओं पर
(ख) सरकारी कार्यालयों की कार्य प्रणाली पर (घ) शिक्षा व्यवस्था पर

उत्तमाला

1-घ	2-ग	3-ख	4-क	5-ख

गद्यांश-2

"हॉटीकल्चर डिपार्टमेंट का सेक्रेटरी साहित्य प्रेमी आदमी जान पड़ता था। उसने लिखा था, "आश्चर्य है, इस समय जब हम 'पेड़ लगाओ' स्कीम ऊँचे स्तर पर चला रहे हैं, हमारे देश में ऐसे सरकारी अफसर मौजूद हैं जो पेड़ों को काटने का सुझाव देते हैं, और वह भी एक फलदार पेड़ को, और वह भी जामुन के पेड़ को, जिसके फल जनता बड़े चाव से खाती है! हमारा विभाग किसी हालत में इस फलदार वृक्ष को काटने की इजाजत नहीं दे सकता।"

"अब क्या किया जाए? इस पर एक मनचले ने कहा, "अगर पेड़ काटा नहीं जा सकता, तो इस आदमी ही को काटकर निकाल लिया जाए।"

"यह देखिए," उस आदमी ने इशारे से बताया, "अगर इस आदमी को ठीक बीच में से, यानी धड़ से काटा जाए तो आधा आदमी इधर से निकल आएगा, आधा आदमी उधर से बाहर आ जाएगा और पेड़ वहीं का वहीं रहेगा।

" मगर इस तरह तो मैं मर जाऊँगा।" दबे हुए आदमी ने आपत्ति प्रकट करते हुए कहा।

"यह भी ठीक कहता है।" एक क्लर्क बोला"

(i) फलदार पेड़ किस विभाग के अंतर्गत आते हैं?

(क) बागवानी विभाग (ख) कृषि विभाग (ग) वन विभाग (घ) उद्योग विभाग

(ii) 'इस समय जब हम 'पेड़ लगाओ' स्कीम ऊँचे स्तर पर चला रहे हैं, हमारे देश में ऐसे सरकारी अफसर मौजूद हैं जो पेड़ों को काटने का सुझाव देते हैं' कथन किसका है?

(क) एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी का (ग) हॉटीकल्चर डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी का
(ख) फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी का (घ) कल्चरल डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी का

(iii) " मगर इस तरह तो मैं मर जाऊँगा।" यह किसने कहा?

(क) पेड़ के नीचे दबे हुए व्यक्ति ने (ग) माली ने
(ख) फॉरेस्ट डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी ने (घ) क्लर्क ने

(iv) मनचले व्यक्ति ने पेड़ के नीचे दबे हुए व्यक्ति को निकालने का क्या सुझाव दिया?

(क) पेड़ को काट दिया जाए (ख) लोग मिलकर पेड़ को हटा दें

(ग) व्यक्ति को बीच में से काटकर निकल लिया जाए (घ) इनमें से कोई नहीं

(v) 'हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट' को हिन्दी में कहते हैं-

(क) कृषि विभाग (ख) बागवानी विभाग (ग) उद्योग विभाग (घ) वन विभाग

उत्तरमाला

1-क	2-ग	3-क	4-ग	5-ख

8. भारत माता-जवाहर लाल नेहरू

गद्यांश-1

"मैं उत्तर-पच्छिम में खैबर के दर्रे से लेकर धुर दक्खिन में कन्याकुमारी तक की अपनी यात्रा का हाल बताता और यह कहता कि सभी जगह किसान मुझसे एक-से सवाल करते, क्योंकि उनकी तकलीफ़ें एक-सी थीं-यानी गरीबों, कर्जदारों, पूँजीपतियों के शिकंजे, जमींदार, महाजन, कड़े लगान और सूद, पुलिस के जुल्म, और ये सभी बातें गुँथी हुई थीं, उस ढड्ढे के साथ, जिसे एक विदेशी सरकार ने हम पर लाद रखा था और इनसे छुटकारा भी सभी को हासिल करना था। मैंने इस बात की कोशिश की कि लोग सारे हिंदुस्तान के बारे में सोचें और कुछ हद तक इस बड़ी दुनिया के बारे में भी, जिसके हम एक जुज़ हैं। मैं अपनी बातचीत में चीन, स्पेन, अबीसिनिया, मध्य यूरोप, मिडु और पच्छिमी एशिया में होनेवाले कशमकशों का जिक्र भी ले आता। मैं उन्हें सोवियत यूनियन में होने वाली अचरज-भरी तब्दीलियों का हाल भी बताता और कहता कि अमरीका ने कैसी तरक्की की है। यह काम आसान न था, लेकिन जैसा मैंने समझ रखा था, वैसा मुश्किल भी न था। इसकी वजह यह थी कि हमारे पुराने महाकाव्यों ने और पुराणों की कथा-कहानियों ने, जिन्हें वे खूब जानते थे, उन्हें इस देश की कल्पना करा दी थी, और हमेशा कुछ लोग ऐसे मिल जाते थे, जिन्होंने हमारे बड़े-बड़े तीर्थों की यात्रा कर रखी थी, जो हिंदुस्तान के चारों कोनों पर हैं। या हमें पुराने सिपाही मिल जाते, जिन्होंने पिछली बड़ी जंग में या और धावों के सिलसिले में विदेशों में नौकरियाँ की थीं। सन् तीस के बाद जो आर्थिक मंदी पैदा हुई थी, उसकी वजह से दूसरे मुल्कों के बारे में मेरे हवाले उनकी समझ में आ जाते थे"

(i) खैबर का दर्रा कहाँ स्थित है?

(क) भारत के दक्खिन भाग में (ग) भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में

(ख) भारत के पूर्वी भाग में (घ) भारत के पश्चिमी भाग में

(ii) किसानों की समस्या नहीं है-

(क) पूँजीपतियों के शिकंजे (ग) भ्रष्टाचार

(ख) कड़े लगान और सूद (घ) पुलिस के जुल्म

(iii) नेहरू जी किसानों से किस बात का जिक्र नहीं किया करते थे?

(क) पच्छिमी एशिया में होनेवाले कशमकशों का

(ख) सोवियत यूनियन में होने वाली अचरज-भरी तब्दीलियों का

(ग) सरकार चलाने की प्रक्रिया का

(घ) अमरीका ने कैसी तरक्की की

(iv) लोगों को देश-दुनिया के बारे में समझाना मुश्किल काम क्यों नहीं था?

(क) क्योंकि पुराणों की कथा-कहानियों ने उन्हें इस देश की कल्पना करा दी थी।

(ख) पुराने सिपाही जिन्होंने विदेशों में नौकरियाँ की थीं।

(ग) कुछ लोग ऐसे मिल जाते थे, जिन्होंने हमारे बड़े-बड़े तीर्थों की यात्रा कर रखी थी।

(घ) उपर्युक्त सभी

(v) 'जुज़' का अर्थ है-

(क) भाग (ख) इज्जत (ग) परिवर्तन (घ) बोझ

उत्तर-(i) (ग) भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में (ii) (ग) भ्रष्टाचार (iii) (ग) सरकार चलाने की प्रक्रिया का (iv) (घ) उपर्युक्त सभी (v) (क) भाग

गद्यांश-2

"कभी ऐसा भी होता कि जब मैं किसी जलसे में पहुँचता, तो मेरा स्वागत "भारत माता की जय" इस नारे से जोर के साथ किया जाता। मैं लोगों से अचानक पूछ बैठता कि इस नारे से उनका क्या मतलब है? यह भारत माता कौन है, जिसकी वे जय चाहते हैं। मेरे सवाल से उन्हें कुतूहल और ताज्जुब होता और कुछ जवाब न बन पड़ने पर वे एक-दूसरे की तरफ़ या मेरी तरफ़ देखने लग जाते। मैं सवाल करता ही रहता। आखिर एक हट्टे-कट्टे जाट ने, जो अनगिनत पीढ़ियों से किसानी करता आया था, जवाब दिया कि भारत माता से उनका मतलब धरती से है। कौन-सी धरती? खास उनके गाँव की धरती या जिले की या सूबे की या सारे हिंदुस्तान की धरती से उनका मतलब है? इस तरह सवाल-जवाब चलते रहते, यहाँ तक कि वे ऊबकर मुझसे कहने लगते कि मैं ही बताऊँ। मैं इसकी कोशिश करता और बताता कि हिंदुस्तान वह सब कुछ है, जिसे उन्होंने समझ रखा है, लेकिन वह इससे भी बहुत ज्यादा है। हिंदुस्तान के नदी और पहाड़, जंगल और खेत, जो हमें अन्न देते हैं, ये सभी हमें अजीज हैं। लेकिन आखिरकार जिनकी गिनती है, वे हैं हिंदुस्तान के लोग, उनके और मेरे जैसे लोग, जो इस सारे देश में फैले हुए हैं। भारत माता दरअसल यही करोड़ों लोग हैं, और "भारत माता की जय" से मतलब हुआ इन लोगों की जय का। मैं उनसे कहता कि तुम इस भारत माता के अंश हो, एक तरह से तुम ही भारत माता हो, और जैसे-जैसे ये विचार उनके मन में बैठते, उनकी आँखों में चमक आ जाती, इस तरह, मानो उन्होंने कोई बड़ी खोज कर ली हो"

(i) लेखक जब किसी जलसे में पहुँचता तो उसका स्वागत किस नारे के साथ किया जाता?

(क) जय हो (ख) भारत माता की जय (ग) धरती माता की जय (घ) नेहरू जी की जय

(ii) लेखक लोगों से अचानक क्या पूछ बैठता?

(क) यह भारत माता कौन है? (ग) "भारत माता की जय" का क्या मतलब है?

(ख) आप किस की जय चाहते हैं? (घ) उपर्युक्त सभी

(iii) हट्टे-कट्टे जाट ने भारत माता का क्या मतलब बताया?

(क) नदी (ख) पहाड़ (ग) धरती (घ) भारत के लोग

(iv) नेहरू जी ने 'भारत माता' का वास्तविक अर्थ क्या बताया?

(क) भरत की संतान (ग) केवल धरती (घ) केवल नदियां और पहाड़

(ख) हिंदुस्तान के लोग

(v) "भारत माता" पाठ के लेखक का नाम क्या है?

(क) बालमुकुंद गुप्त (ख) जवाहरलाल नेहरू (ग) कृश्नचंदर (घ) मन्नू भंडारी

उत्तर-(i) (ख) भारत माता की जय (ii) (घ) उपर्युक्त सभी (iii) (ग) धरती (iv) (ख) हिंदुस्तान के लोग (v) (ख) जवाहरलाल नेहरू

प्रश्न-4 वितान से बहुविकल्पी प्रश्न

1. भारतीय गायिकाओं में बेजोड़-लता मंगेशकर : कुमार गंधर्व

- लेखक एवं पाठ परिचय : लता मंगेशकरजी का जन्म कब हुआ था – 28 सितंबर 1929 (इंदौर)
- लता मंगेशकरजी की मृत्यु कब हुई – 6 फरवरी 2022 (मुंबई)
- इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है – लता जी के व्यक्तित्व से परिचय कराना
- लेखक ने लता मंगेशकर जी को– चित्रपट संगीत की बेताज स्वर साम्राज्ञी की उपाधि दी है
- लता मंगेशकर के पिता का नाम था – पंडित दीनानाथ मंगेशकर
- कुमार गंधर्व ने लता की आवाज सबसे पहले रेडियो पर सुनी थी
- लता से पूर्व प्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का जमाना था
- श्री विलायत खां – सितार वादन से जुड़े थे
- लता जी की प्रसिद्धि का कारण – उनके गानों का गानपन (गानों में मधुरता)
- लता जी के स्वरों की विशेषता– कोमलता, निर्मलता व मुग्धता हैं
- लता ने द्रुतलय के गीत बड़ी उत्कटता से गाये हैं –
- ऊँची पट्टी में गीत गाए हैं
- शास्त्रीय संगीत में ताल परिष्कृत रूप में पाया जाता है।
- चित्रपट संगीत का ताल प्राथमिक अवस्था का होता है –
- शास्त्रीय संगीत का स्थाई भाव गंभीरता हैं
- चित्रपट संगीत का मुख्य गुणधर्म जलदलय और चपलता हैं
- चित्रपट संगीत में अग्र स्थान सुलभता व लोच को दिया जाता है
- चित्रपट संगीत में आधे तालों का उपयोग किया जाता है
- भारतीय फिल्मों में लोक संगीत की धुनों का उपयोग अधिक किया जाता है।
- लता जी के गानों में "त्रिवेणी संगम" (स्वर, लय व शब्दार्थ का संगम) है।
- हमारे शास्त्रीय गायक आत्मसंतुष्टि की वृत्ति वाले होते हैं।
- कृषि संबंधित गीतों को लोक संगीत की धुनों के अंतर्गत रखा जाता है।
- लेखक के अनुसार गाने की सारी मिठास रंजकता के कारण आती है।
- लेखक के अनुसार लता जैसा गायक कलाकार सदियों में एक बार पैदा होता है।
- लेखक के अनुसार हमारा सौभाग्य हैं – लता मंगेशकर को साक्षात् देख पाना
- चित्रपट संगीत में लता को अतुलनीय कहा गया है – श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देने वाले उनके स्वरों की निर्मलता, कोमलता व मधुरता के कारण
- चित्रपट संगीत क्षेत्र की लता "अनभिषिक्त साम्राज्ञी" हैं। यहां पर "अनभिषिक्त" का अर्थ है–बेताज (Uncrowned)
- लेखक ने "चित्रपट संगीत का पर्याय" माना है – लता मंगेशकर को
- चित्रपट संगीत का अर्थ है – फिल्म, चलचित्र के संगीत को चित्रपट संगीत कहा जाता हैं।
- कुमार गंधर्व ने लता मंगेशकरजी को बेजोड गायिका कहा – उनके गानों में गानपन यानि मधुरता के कारण और उनके गानों की दुनिया भर में लोकप्रियता के कारण

बहुविकल्पी प्रश्न

1.'भारतीय गायिकाओं में बेजोड़-लता मंगेशकर' पाठ के लेखक कौन हैं?

(क) कुमार गौरव (ख) कुमार गंधर्व (ग) विलायत खां (घ) दीनानाथ मंगेशकर

2. लता मंगेशकर के पिता का नाम है-

(क) रमानाथ मंगेशकर (ख) दीनानाथ मंगेशकर (ग) काशीनाथ मंगेशकर (घ) विश्वनाथ मंगेशकर

3. लेखक कुमार गंधर्व ने सबसे पहले लता की आवाज कहाँ सुनी थी?

(क) टेलीविजन पर (ख) रेडियो पर (ग) फिल्म में (घ) लाइव कार्यक्रम में

4. चित्रपट संगीत में लता के पहले प्रसिद्ध गायिका कौन थी?

(क) मुमताज बेगम (ख) नूरजहाँ (ग) आबिदा परवीन (घ) परवीन सुलताना

5. विलायत खां किस वाद्य यंत्र से संबंधित हैं?

(क) बांसुरी (ख) शहनाई (ग) सितार (घ) संतूर

6. लेखक के अनुसार भारतीय गायिकाओं में लता मंगेशकर बेजोड़ क्यों है?

(क) लता के कारण चित्रपट संगीत को लोकप्रियता प्राप्त हुई है।
(ख) लोगों का शास्त्रीय संगीत की ओर देखने का दृष्टिकोण बदला है।
(ग) लता के कारण आजकल के नन्हे-मुन्ने भी सुर में गुनगुनाते हैं।
(घ) उपर्युक्त सभी।

7. संगीत के प्रति साधारण लोगों के दृष्टिकोण में क्या परिवर्तन हुए हैं?

(क) उनका स्वर ज्ञान बढ़ रहा है। (ख) सुरीलापन क्या है, इसकी समझ उन्हें हो रही है।
(ग) तरह-तरह की लय के भी प्रकार उन्हें सुनाई पड़ने लगे हैं। (घ) उपर्युक्त सभी।

8. संगीत जगत को लता का क्या योगदान है?

(क) संगीत की लोकप्रियता (ग) संगीत के प्रति अभिरुचि का विकास
(ख) संगीत का प्रसार (घ) उपर्युक्त सभी

9. सामान्य श्रोता के लिए संगीत में क्या महत्वपूर्ण है?

(क) ध्वनि मुद्रिका (ख) राग (ग) ताल (घ) मिठास

10. संगीत में 'गानपन' का क्या अर्थ है?

(क) लय (ख) ताल (ग) राग (घ) मिठास

11. लता के गाने की विशेषता है-

(क) गानपन (ख) स्वरों की निर्मलता (ग) नादमय उच्चार (घ) उपर्युक्त सभी

12. लेखक के अनुसार लता ने किस रस के गाने के साथ न्याय नहीं किया है?

(क) श्रृंगार (ख) करुण (ग) भक्ति (घ) वात्सल्य

13. लेखक के अनुसार लता के गाने में किस तरह के दोष देखे जाते हैं?

(क) मुग्ध श्रृंगार की अभिव्यक्ति वाले मध्य या द्रुत लय में गाना।
(ख) अधिकतर गाने ऊंची पट्टी में गाना।
(ग) क और ख दोनों।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

14. इनमें से कौन-सा कथन सही नहीं है-

(क) गंभीरता शास्त्रीय संगीत का स्थाई भाव है।
(ख) चपलता चित्रपट संगीत का मुख्य गुण धर्म है।
(ग) चित्रपट संगीत का ताल प्राथमिक अवस्था का ताल होता है।
(घ) इनमें से कोई नहीं।

15. लेखक के अनुसार चित्रपट संगीत गाने वाले को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी होना-

(क) आवश्यक है। (ख) आवश्यक नहीं है। (ग) क और ख दोनों। (घ) इनमें से कोई नहीं।

16. खानदानी गवैयों के अनुसार किस कारण लोगों की अभिरुचि बिगड़ गई है?

(क) शास्त्रीय संगीत (ख) चित्रपट संगीत (ग) लोक संगीत (घ) रॉक संगीत

17. "चित्रपट संगीत क्षेत्र की लता अनभिषिक्त सम्राज्ञी है।" अनभिषिक्त का क्या अर्थ है?

(क) महान (ख) बेताज (ग) सर्वश्रेष्ठ (घ) सुरीली

18. "ऐसा कलाकार शताब्दियों में शायद एक ही पैदा होता है।" यह पंक्ति किसके लिए कही गई है?

(क) नूरजहाँ (ख) दीनानाथ मंगेशकर (ग) कुमार गंधर्व (घ) इनमें से कोई नहीं।

19. लय कितने प्रकार की होती है?

(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पांच

20. तीन ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

(क) 12 (ख) 3 (ग) 16 (घ) 9

21. लता जी के स्वरों की विशेषता नहीं है?

(क) कोमलता (ख) सुन्दरता (ग) निर्मलता (घ) मुग्धता

22. चित्रपट संगीत क्षेत्र की लता "अनभिषिक्त साम्राज्ञी" हैं। यहां पर "अनभिषिक्त" का अर्थ है –

(क) बेमिशाल (ख) बेनक़ाब (ग) बेताज (घ) बेजूबा

23. यह हमारा सौभाग्य है कि आज हम साक्षात् उन्हें दे(ख) सुन पा रहे हैं किसके लिए कहा गया है?

(क) कुमार गंधर्व के लिए (ख) लता मंगेशकर के लिए
(ग) नूरजहाँ के लिए (घ) दीनानाथ मंगेशकर के लिए

24.लता जी के गानों में "त्रिवेणी संगम" (स्वर, लय व शब्दार्थ का संगम) है। यह कथन है?

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) आंशिक सत्य (घ) कोई नहीं

25. श्री विलायत खां का सम्बन्ध है?

(क) गायन से (ख) सितार वादन से (ग) गिटार वादन से (घ) लोक संगीत से

26. हमारे गायक आत्मसंतुष्टि की वृत्ति वाले होते हैं कौनसे गायकों के बारे में कहा गया है?

(क) शास्त्रीय गायक (ख) लोक गायक (ग) चित्रपट संगीत के गायक (घ) क और ख दोनों

27. शास्त्रीय संगीत का स्थाई भाव हैं?

(क) चंचलता (ख) चपलता (ग) गंभीरता (घ) जलदलय

28. लता मंगेशकर के पिता का नाम था?

(क) पंडित दीनानाथ मंगेशकर (ख) भोलानाथ मंगेशकर (ग) बालकनाथ (घ) रामनाथ

29.चित्रपट संगीत कैसा होता है?

(क) रंजकता (ख) लय-ताल (ग) सही उच्चारण (घ) धुन

30.लेखक के अनुसार लता मंगेशकर किस संगीत की अनभिषिक्त सम्राज्ञी हैं?

(क) शास्त्रीय संगीत (ख) लोक गीत (ग) चित्रपट संगीत (घ) पाश्चात्य संगीत

उत्तर संकेत-

1- ख, 2-ख, 3-ख, 4-ख, 5-ग, 6-घ, 7-घ, 8-घ, 9-घ, 10-घ, 11-घ, 12-ख, 13-ग, 14-घ, 15-क, 16-ख, 17-ख, 18-घ, 19-ख, 20-ग 21-ख, 22-ग, 23-ख, 24-क, 25-ख, 26-क, 27-ग, 28-क, 29-क, 30-ग

2. राजस्थान की रजत बूँदें-अनुपम मिश्र

जन्म-1948 में वर्धा (महाराष्ट्र)।

पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर बीस पुस्तकों का लेखन जिनमें 'आज भी खरे हैं तालाब' और 'राजस्थान की रजत बूँदें' विशेष चर्चित। पर्यावरण संबंधी कई आंदोलनों से न केवल घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे हैं बल्कि लोगों को जागरूक करने के लिए मुहिम भी चलाई। सन् 1977 से गांधी शांति प्रतिष्ठान के पर्यावरण कक्ष से संबद्ध।

पाठ का सार:

यह पाठ प्रसिद्ध पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र जी की प्रसिद्ध किताब "राजस्थान की रजत बूंदें" का एक छोटा सा अंश हैं जिसमें उन्होंने राजस्थान की मरूभूमि में अमृत समान मीठे पानी के स्रोत "कुँई" व उनको बनाने वाले "चेलवांजी" के बारे में विस्तार से वर्णन किया है। राजस्थान में "कुँई" का निर्माण रेत में समाए वर्षा के पानी को इकठ्ठा करने के लिए किया जाता है। "कुँई" की खुदाई और चिनाई करने वाले दक्ष लोगों को "चेलवांजी" या "चेजारो" कहा जाता है। "कुँई" की खुदाई के काम को "चेजा" कहा जाता है।

कुआँ और कुँई में अंतर

कुआँ एक पुलिंग शब्द हैं। कुँए से भूजल (पाताल पानी) प्राप्त होता हैं। पश्चिमी राजस्थान में पाताल पानी खारा होता हैं। यह पीने योग्य नही होता है। कुँए का व्यास व गहराई काफी होती हैं। जबकि "**कुँई"** एक स्त्रीलिंग शब्द है जिसमें वर्षा का मीठा व पीने योग्य जल इकठ्ठा होता हैं। जब वर्षा नहीं भी होती हैं तब भी उसका जल बड़े विचित्र ढंग से इसमें इकठ्ठा होता हैं। कुँई में जमा पानी न तो भूमि की सतह पर बहने वाला पालर पानी (नदी या तालाब का पानी) हैं और न ही भूजल (पाताल पानी)। यह तो रेत के अंदर नमी के रूप में इकठ्ठा वर्षा का जल(रेजाणी पानी) हैं जो धीरे-धीरे बूँद बनकर कुँई में इकठ्ठा होता रहता हैं। कुँई का व्यास कुएँ से कम होता हैं लेकिन गहराई लगभग कुएँ के बराबर ही होती हैं।

लेखक कहते हैं कि चेलवांजी पूरी तरह से पसीने से तरबतर होकर एक कुँई की खुदाई कर रहे हैं अभी तक वो तीस-पैतीस हाथ तक की गहरी खुदाई कर चुके हैं। कुँई का व्यास बहुत ही कम होता है जिसके कारण खुदाई का काम कुल्हाड़ी या फावड़े से करने के बजाय **बसौली** (फावड़े जैसा ही एक छोटा सा औजार जिसका फल लोहे का और हत्था लकड़ी का होता हैं) से किया जाता है।

कुँई की गहराई में लगातार बढ़ती गर्मी को कम करने के लिए ऊपर जमीन में खड़े लोगों द्वारा बीच-बीच में मुट्ठी भर रेत बहुत जोर से नीचे फेंकी जाती हैं जिससे ताजी हवा नीचे जाती है और नीचे की गर्म हवा ऊपर लौट आती है। ऊपर से फेंकी गयी रेत से बचने के लिए चेलवांजी अपने सिर पर धातु का एक बर्तन टोप (टोपी) की तरह पहन लेते हैं।

लेखक कहते हैं कि राजस्थान की मरुभूमि में कहीं-कहीं रेत की सतह के नीचे खड़िया पत्थर की एक लम्बी-चौड़ी पट्टी चलती है। यह पट्टी रेत की सतह से दस-पंद्रह हाथ नीचे से लेकर पचास – साठ हाथ नीचे तक हो सकती है। रेत के नीचे दबे होने के कारण यह खड़िया पट्टी ऊपर से नही दिखाई देती है। ऐसे क्षेत्रों में कुँई खोदते समय मिट्टी में हो रहे परिवर्तन से खड़िया पट्टी का पता चलता है।यही खड़िया पट्टी ही वर्षा के जल को गहरे खारे भूजल में मिलने से रोकती है। रेत के कण बहुत बारीक होते हैं और मरुभूमि में ये समान रूप से बिखरे रहते हैं। पानी गिरने पर ये कण थोड़े भारी जरूर हो जाते हैं मगर न ही ये कण आपस में चिपकते हैं और न ही अपनी जगह छोड़ते हैं जिस कारण मिट्टी में दरार नहीं पड़ती हैं और भीतर समाया वर्षा का जल भीतर ही बना रहता ह गर्मी से भाप बनकर उड़ता नही हैं।

इस क्षेत्र में बरसी पानी की एक-एक बूँद रेत में समा कर नमी में बदल जाती है। कुँई बनने पर रेत में समाई यही नमी, फिर से पानी की बूंदों में बदल कर कुँई में इकठ्ठा होने लगती हैं और यही पानी खारे पानी के सागर में अमृत जैसा मीठा होता है।

पानी के तीन प्रकार:-

1. **पालरपानी**
   सीधे वर्षा से मिलने वाला पानी। यह धरातल पर बहता है और इससे नदी या तालाब आदि में रोका जाता है।
2. **पातालपानी**

भूजल। यह वही भूजल है जो कुओं से निकाला जाता है।

3. रेजाणीपानी

धरती की सतह के नीचे लेकिन पाताल में न मिल पाये पानी को रेजाणीपानी कहते है।

रेजाणीपानी ही खड़िया पत्थर की पट्टी के कारण पातालपानी में नहीं मिल पाता है। इसी रेजाणीपानी को इकठ्ठा करने के लिए कुँई का निर्माण किया जाता है। राजस्थान में वर्षा की मात्रा को इंच या सेंटीमीटर में नापने के बजाय "रेजा" में नापा जाता हैं।

पहले कुँई की सफल खुदाई के बाद उत्सव मनाया जाता था व विशेष भोज का आयोजन किया जाता था। चेलवांजी को विदाई के समय तरह-तरह की भेंट दी जाती थी। आच प्रथा के तहत उन्हें वर्ष भर के तीज त्यौहारों, विवाह जैसे मंगलिक अवसरों पर भेंट दी जाती थी।

फसल कटने पर खेत – खलिहानों में उनके नाम से अनाज का अलग ढेर भी लगाया जाता था। लेकिन अब सिर्फ मजदूरी देकर भी काम करवाने का रिवाज आ गया है।

खड़िया पट्टी के अन्य नाम:-

चारोली, धाधड़ों, धड़धड़ों, बिट्टू रो बल्लियों, खड़ी आदि।

कुँई का मुँह छोटा रखने के कारण

1. कुँई में पानी बूँद-बूँद कर धीरे-धीरे इकठ्ठा होता हैं। दिन भर में मुश्किल से दो-तीन घड़े पानी ही जमा हो पाता हैं। ऐसे में कुँई का व्यास ज्यादा होगा तो पानी तले में ही फ़ैल जायेगा जिसे निकालना सम्भव नही है। कम व्यास में यह पानी दो-चार हाथ ऊपर आ जाता है जिसे बाल्टी या चड़स से आसानी से निकाल लिया जाता है।
2. कुँई का मुँह छोटा होने से पानी भाप बनकर उड़ नही पाता है।
3. कुँई का पानी साफ रखने के लिए उसका मुँह छोटा होना जरूरी है। कुँई के छोटे मुँह को लकड़ी से बने ढक्क्न आदि से आसानी से ढका जा सकता है।

बहुविकल्पी प्रश्न

1.' राजस्थान की रजत की बूंदे' पाठ के लेखक है?

(क) कुमार गंधर्व (ख) बेबी हालदार (ग) सुमित्रानंदन पंत (घ) अनुपम मिश्र

2. 'कुईं' शब्द से तात्पर्य है:

(क) खुला स्थान (ख) गहरा स्थान (ग) छोटा सा कुआँ (घ) गहरा सा कुआँ

3. चेलवांजी का शाब्दिक अर्थ है?

(क) चेजारो (ख) निहारो (ग) पुचकारो (घ) फटकारो

4. कुईं की खुदाई किससे की जाती है?

(क) खुरपी से (ख) दराती से (ग) बसौली से (घ) हत्थी से

5.वर्षा की मात्र नापने के लिए किस शब्द का प्रयोग होता है?

(क) सेंटीमीटर (ख) पत्ती (ग) इंच (घ) रेजा

6. उपलब्ध पानी के तीन रूप हैं?

(क) पालर पानी (ख) पाताल पानी (ग) रेजाणी पानी (घ) उपरोक्त सभी

7. कुँई की गरमी कम करने के लिए ऊपर जमीन पर खड़े लोग मुट्ठी भर-भरकर नीचे क्या फेंकते हैं?

(क) रेत (ख) पानी (ग) टोप (घ) रस्सी

8. जहाँ लगाव है, वहाँ ..... भी होता है?

(क) बिखराव (ख) अलगाव (ग) अवसान (घ) कुछ भी नहीं

9. मरुभूमि के विकसित किए गए समाज ने वहाँ उपलब्ध पानी को कितने रूपों में बांटा है?

(क) चार (ख) पाँच (ग) सात (घ) तीन

10. गहरी कुँई से पानी खींचने की सुविधा के लिए उसके ऊपर लगी चकरी को क्या कहते हैं?

(क) गरेड़ी (ख) चरखी (ग) फरेड़ी (घ) उपरोक्त सभी

11. जैसलमेर जिले के एक गाँव खड़ेरों की ढाणी को लोग किस नाम से जानते थे?

(क) तीन-बीसी (ख) पाँच बीसी (ग) छह-बीसी (घ) दस-बीसी

12. 'रजत' का क्या अर्थ है?

(क) पानी (ख) सोना (ग) चांदी (घ) हीरा

13. 'राजस्थान की रजत बूंदें' पाठ के आधार पर बताएं कि कौन-सा पानी पीने के काम में लाया जाता है?

(क) पालर पानी (ख) रेजाणी पानी (ग) पाताली पानी (घ) साधारण पानी

14. कुँई का निर्माण कहाँ किया जाता है?

(क) जहाँ मिट्टी नरम हो। (ख) जहाँ मिट्टी गीली हो।
(ग) जहाँ भू-जल का स्तर अच्छा हो। (घ) जहाँ मिट्टी के नीचे खड़िया पट्टी हो।

15. कुँई का व्यास छोटा क्यों रखा जाता है?

(क) इससे पानी का स्तर ऊँचा रहता है। (ख) इससे पानी वाष्पीकृत कम होता है।
(ग) कुँई को ढकना सरल होता है। (घ) उपर्युक्त सभी।

16. चड़स किस काम में आता है?

(क) कुँई की चिनाई करने के लिए। (ख) कुँई को ढकने के लिए।
(ग) कुँई से पानी निकालने के लिए। (घ) मिट्टी की खुदाई के लिए।

17. कुँई की खुदाई कर रहे मजदूरों पर ऊपर से लोग मुट्ठी भर रेत नीचे फेंकते हैं। ऐसा क्यों?

(क) कुँई बनाने में रेत का इस्तेमाल होता है। (ख) ऐसा वहाँ का रिवाज है।
(ग) गर्मी कम करने के लिए। (घ) उपरोक्त सभी।

18. चेलवांजी कुँई का निर्माण करते समय अपने सिर पर किसी धातु का एक बर्तन टोप की तरह क्यों पहनते हैं?

(क) गर्मी से बचने के लिए। (ख) चोट से बचने के लिए।
(ग) सर्दी से बचने के लिए। (घ) यह उनका पोशाक है।

19. पालर पानी क्या होता है?

(क) जो पानी धरातल पर बहता है। (ख) जो पानी कुँई में जमा होता है।
(ग) जो पानी जमीन के अंदर जमा होता है। (घ) इनमें से कोई नहीं।

20. आच प्रथा क्या है?

(क) कारीगरों को रोजगार देने की प्रथा (ख) कारीगरों को उचित मजदूरी देने की प्रथा
(ग) कारीगरों को सम्मानित करने की प्रथा (घ) कारीगरों को भोजन देने की प्रथा

21. कुँई का मुँह छोटा रखने के कारणों में शामिल नहीं है-

(क) कुँई में पानी कम होता है। (ख) वाष्पीकरण से बचाने के लिए।
(ग) कुँई को ढकना आसान होता है। (घ) वहाँ जमीन कम होती है।

22. निजी होते हुए भी कुँई पर ग्राम समाज का अंकुश क्यों रहता है?

(क) वहाँ का वैसा ही कानून है। (ख) कुँई सार्वजनिक ज़मीन पर बनाई जाती है।
(ग) ग्राम समाज का मुखिया तानाशाह होता है। (घ) क्योंकि कुँई घर से बाहर बनाई जाती है।

23.जैसलमेर जिले के खड़ेरो की ढाणी गांव को छह-बीसी के नाम से क्यों जाना जाता है?

(क) वहाँ 26 कुँई बनी हुई है। (ख) वहाँ 620 कुँई बनी हुई है।
(ग) वहाँ 120 कुँई बनी हुई है। (घ) वहाँ 2600 कुँई बनी हुई है।

24. इनमें से खड़िया पट्टी को किस नाम से नहीं जानते हैं?

(क) बिट्टू रो बल्लियो (ख) धड़धड़ो (ग) खड़ी (घ) चेजा पट्टी

25. इनमें से किस जिले में खड़िया पट्टी नहीं मिलती है?

(क) चुरू (ख) बीकानेर (ग) जयपुर (घ) जैसलमेर

26. चड़स किस चीज से नहीं बनाई जाती है?

(क) मोटे कपड़े से (ख) चमड़े से (ग) फटी ट्यूब से (घ) प्लास्टिक से

उत्तर-संकेत :

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(घ)	(ग)	(क)	(ग)	(घ)	(घ)	(क)	(ख)	(घ)	(घ)
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
(ग)	(ग)	(ख)	(घ)	(घ)	(ग)	(ग)	(ख)	(क)	(ग)
21	22	23	24	25	26				
(घ)	(ख)	(ग)	(घ)	(ग)	(ख)				

3. आलो-आँधारि-बेबी हालदार

'आलो-आंधारि' पाठ लेखिका बेबी हालदार द्वारा लिखित अपनी आत्मकथा का एक अंश है। इनका जन्म जम्मू कश्मीर के किसी स्थान पर हुआ, जहाँ सेना की नौकरी में उनके पिता तैनात थे। तेरह वर्ष की आयु में इनका विवाह दुगुनी उम्र के व्यक्ति से कर दिया गया। इस कारण उन्हें सातवीं कक्षा में पढ़ाई छोड़नी पड़ी। 12-13 वर्षों के बाद पति की ज्यादतियों से परेशान होकर वे तीन बच्चों सहित पति का घर छोड़कर दुर्गापुर से फरीदाबाद आ गई। कुछ समय बाद वे गुड़गाँव चली आईं। इनकी एकमात्र रचना है-आलो-आँधारि जो कि मूल रूप से बांग्ला भाषा में लिखी गई जिसका हिन्दी में अनुवाद प्रबोध कुमार ने किया। बेबी इस कथा की नायिका भी है और लेखिका भी। मात्र तेरह वर्ष की होते-होते सातवीं की पढ़ाई अधूरी छोड़ वह एक अधेड़ से ब्याह दी जाती है और जीवन के सबसे संवेदनशील उम्र में तीन बच्चों की माँ बन जाती है। वही बेबी पति की ज्यादतियों को न बर्दाश्त कर शुरू करती है एक ऐसी यात्रा जो न तो उसने पहाड़ों पर की, न समुद्रतट पर और न ही स्टडीरूम में बैठकर।

पाठ का सारांश-लेखिका अपने पति से अलग किराए के मकान में अपने तीन छोटे बच्चों के साथ रहती थी। उसे हर समय काम की तलाश रहती थी। वह सभी को अपने लिए काम ढूँढ़ने के लिए कहती थी। शाम को जब वह घर वापिस आती तो पड़ोस की औरतें काम के बारे में पूछतीं। काम न मिलने पर वे उसे सांत्वना देती थीं। लेखिका की पहचान सुनील नामक युवक से थी। एक दिन उसने किसी मकान मालिक से लेखिका को मिलवाया। मकान मालिक ने आठ सौ रुपये महीने पर उसे रख लिया और घर की सफाई व खाना बनाने का काम दिया। उसने पहले काम कर रही महिला को हटा दिया। उस महिला ने लेखिका से भला-बरा कहा। लेखिका उस घर में रोज सवेरे आती तथा दोपहर तक सारा काम खत्म करके चली जाती। घर जाकर बच्चों को नहलाती व खिलाती। उसे बच्चों के भविष्य की चिंता थी। जिस मकान में वह रहती थी, उसका किराया अधिक था। उसने कम सुविधाओं वाला नया मकान ले लिया। यहाँ के लोग उसके अकेले रहने पर तरह-तरह की बातें बनाते थे। घर का खर्च चलाने के लिए वह और काम चाहती थी। वह मकान मालिक से काम की नयी जगह ढूँढ़ने को कहती है। उसे बच्चों की पढ़ाई, घर के किराए व लोगों की बातों की भी चिंता थी। मालिक सज्जन थे। एक दिन उन्होंने लेखिका से पूछा कि वह घर जाकर क्या-क्या करती है। लेखिका की बात सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने स्वयं को 'तातुश' कहकर पुकारने को कहा। वे उसे बेबी कहते थे तथा अपनी बेटी की तरह मानते थे। उनका सारा परिवार लेखिका का ख्याल रखता था। वह पुस्तकों की अलमारियों की सफाई करते समय पुस्तकों को उत्सुकता से देखने लगती। यह देखकर तातुश ने उसे एक किताब पढ़ने के लिए दी।

तातुश ने उससे लेखकों के बारे में पूछा तो उसने कई बांग्ला लेखकों के नाम बता दिए। एक दिन तातुश ने उसे कॉपी व पेन दिया और कहा कि समय निकालकर वह कुछ जरूर लिखे। काम की अधिकता के कारण लिखना बहुत मुश्किल था, परंतु तातुश के प्रोत्साहन से वह रोज कुछ पृष्ठ लिखने लगी। यह शौक आदत में बदल गया। उसका अकेले रहना समाज में कुछ लोगों को सहन नहीं हो रहा था। वे उसके साथ छेड़खानी करते थे और बेमतलब परेशान करते थे। बाथरूम न होने से भी विशेष दिक्कत थी। मकान मालिक के लड़के के दुर्व्यवहार की वजह से वह नया घर तलाशने की सोचने लगी। एक दिन लेखिका काम से घर लौटी तो देखा कि मकान टूटा हुआ है तथा उसका सारा सामान खुले में बाहर पड़ा हुआ है। वह रोने लगी। इतनी जल्दी मकान ढूँढ़ने की भी दिक्कत थी। दूसरे घरों के लोग अपना सामान इकट्ठा करके नए घर की तलाश में चले गए। वह सारी रात बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे बैठी रही। उसे दुख था कि दो भाई नजदीक रहने के बावजूद उसकी सहायता नहीं करते। तातुश को बेबी का घर टूटने का पता चला तो उन्होंने अपने घर में कमरा दे दिया। इस प्रकार वह तातुश के घर में रहने लगी। उसके बच्चों को ठीक खाना मिलने लगा। तातुश उसका बहुत ख्याल रखते।

बच्चों के बीमार होने पर वे उनकी दवा का प्रबंध करते। उनके सद्व्यवहार को देखकर बेबी हैरान थी। उसका बड़ा लड़का किसी के घर में काम करता था। वह उदास रहती थी। तातुश ने उसके लड़के को खोजा तथा उसे बेबी से मिलवाया। उस लड़के को दूसरी जगह काम दिलवाया। लेखिका सोचती कि तातुश पिछले जन्म में उसके बाबा रहे होंगे। तातुश उसे लिखने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने अपने कई मित्रों के पास बेबी के लेखन के कुछ अंश भेज दिए थे। उन्हें यह लेखन पसंद आया और वे भी लेखिका का उत्साह बढ़ाते रहे। तातुश के छोटे लड़के अर्जुन के दो मित्र वहाँ आकर रहने लगे, परंतु उनके अच्छे व्यवहार से लेखिका बढ़े काम को खुशी-खुशी करने लगी। तातुश ने सोचा कि सारा दिन काम करने के बाद बेबी थक जाती होगी। उसने उसे रोजाना शाम के समय पार्क में बच्चों को घुमा लाने के लिए कहा। इससे बच्चों का दिल बहल जाएगा। अब वह पार्क में जाने लगी। पार्क में नए-नए लोगों से मुलाकात होती। उसकी पहचान बंगाली लड़की से हुई जो जल्दी ही वापिस चली गई। लोगों के दुर्व्यवहार के कारण उसने पार्क में जाना छोड़ दिया। लेखिका को किताब, अखबार पढ़ने व लेखन-कार्य में आनंद आने लगा। तातुश के जोर देने पर वह अपने जीवन की घटनाएँ लिखने लगी। तातुश के दोस्त उसका उत्साह बढ़ाते रहे। एक मित्र ने उसे आशापूर्णा देवी का उदाहरण दिया। इससे लेखिका का हौसला बढ़ा और उसने उन्हें जेलू कहकर संबोधित किया। एक दिन लेखिका के पिता उससे मिलने पहँचे। उसने उसकी माँ के निधन के बारे में बताया। लेखिका के भाइयों को पता था, परंतु उन्होंने उसे बताया नहीं। लेखिका काफी देर तक माँ को याद करके रोती रही। बाबा ने बच्चों से माँ का ख्याल रखने के लिए समझाया। लेखिका पत्रों के माध्यम से कोलकाता और दिल्ली के मित्रों से संपर्क रखने लगी। उसे हैरानी थी कि लोग उसके लेखन को पसंद करते हैं।

शर्मिला दी उससे तरह-तरह की बातें करती थी। लेखिका सोचती कि अगर तातुश उससे न मिलते तो यह जीवन कहाँ मिलता। लेखिका का जीवन तातुश के घर में आकर बदल गया। उसका बड़ा लड़का काम पर लगा था। दोनों छोटे बच्चे स्कूल में पढ़ रहे थे। वह स्वयं लेखिका बन गई थी। पहले वह सोचती थी कि अपनों से बिछुड़कर कैसे जी पाएगी, परंतु अब उसने जीना सीख लिया था। वह तातुश से शब्दों के अर्थ पूछने लगी थी। तातुश के जीवन में भी खुशी आ गई थी। अंत में वह दिन भी आ गया जब लेखिका की लेखन-कला को पत्रिका में जगह मिली। पत्रिका में उसकी रचना का शीर्षक था-'आलो-आँधारि' बेबी हालदार। लेखिका अत्यंत प्रसन्न थी। तातुश के प्रति उसका मन कृतज्ञता से भर आया। उसने तातुश के पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए-

(i) लेखिका को काम ढूँढने मे किसने मदद की?

(क) सुनील ने (ख) सुनीति (ग) अर्जुन (घ) इनमें से कोई नहीं

(ii) "मुझे कहीं और भी काम करना चाहिए" बेबी ऐसा सोचने लगी क्योंकि-

(क) बेबी को ज्यादा काम करने की आदत थी।

(ख) बेबी को बच्चों के पालन-पोषण और किराया देने के लिए पैसों की आवश्यकता थी।

(ग) वह तातुश के घर पर काम नहीं करना चाहती थी।
(घ) इनमें से कोई कारण नहीं।

(iii) तातुश नहीं चाहते थे कि-

(क) बेबी उनके घर काम करे (ग) बेबी के बच्चे पढ़ें
(ख) बेबी उनके घर आकर रहे (घ) बेबी कहीं और काम करें

(iv) तातुश की बातों से बेबी हालदार को कैसा लगता था?

(क) बहुत बुरा (ख) आश्चर्य (ग) स्नेह (घ) सहज

(v) तातुश के कितने लड़के थे?

(क) तीन (ख) चार (ग) दो (घ) एक

(vi) तातुश को किस से पता चला कि बेबी ने घर बदल लिया है?

(क) बेबी से (ख) बेबी के बच्चों से (ग) बेबी के हाव-भाव से (घ) सुनील से

(vii) तातुश को देखकर लेखिका को कौन याद आते हैं?

(क) स्वामी विवेकानंद (ख) अपने पिता (ग) रामकृष्ण (घ) सुनील

(viii) बेबी हालदार ने किस कक्षा में पढ़ाई छोड़ दी थी?

(क) पाँचवीं में (ख) सातवीं में (ग) आठवीं में (घ) चौथी में

(ix) लेखिका ने तातुश को किन-किन बांग्ला लेखकों के नाम बताए?

(क) रवीन्द्रनाथ ठाकुर (ख) सत्येन्द्र नाथ दत्त (ग) शरतचंद्र (घ) उपर्युक्त सभी

(x) लेखिका को अकेली जानकर आस-पास के लोग क्या करना चाहते थे?

(क) उसके साथ छेड़खानी करना चाहते थे (ख) उसके साथ बात करना चाहते थे
(ग) सीटियाँ मारते और ताने मारते (घ) उपर्युक्त सभी

(xi) लेखिका के घर का सारा सामान बाहर बिखरा पड़ा था क्योंकि-

(क) मकान मालिक ने सामान बाहर फेंक दिया था। (ख) वहाँ के सारे घर तोड़ दिए गए थे।
(ग) उसने घर खाली कर दिया था। (घ) उस क्षेत्र में भूकंप आया था।

(xii) घर के लिए तातुश से बात करने की सलाह लेखिका को किसने दी?

(क) भोला दा ने (ख) सुनील ने (ग) शर्मीला दी ने (घ) किसी ने नहीं दी

(xiii) तातुश के कुछ बंधु कहाँ रहते थे?

(क) लखनऊ में (ख) मुंबई और बेंगलूरू में (ग) दिल्ली और कोलकाता में (घ) जयपुर और भोपा

(xiv) तातुश बेबी को क्या मानते थे?

(क) अपनी लड़की जैसी (ख) अपनी नौकरानी जैसी (ग) अपने परिचित जैसी (घ) अपनी रिश्तेदार जैसी

(xv) बेबी के कितने बच्चे थे?

(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) एक

(xvi) तातुश के छोटे लड़के का क्या नाम था?

(क) सुनील (ख) सुखदीप (ग) रमण (घ) अर्जुन

(xvii) रमण दा के बारे में कौनसा कथन सही नहीं है?

(क) वह बेबी को खाने की चीजें बनाना सिखाता था। (ख) वह बेबी से उसके बच्चों के बारे में बात करता था।
(ग) वह कम बातचीत किया करता था। (घ) वह बेबी की लड़की को लड़का समझता था।

(xviii) पार्क में बेबी की मुलाकात किस से हुई?

(क) सुनीति से (ख) अपने बेटे से (ग) तातुश से (घ) अपने दादा से

(xix) सुनीति के बारे में कौनसा कथन सही नहीं है?

(क) जिस दिन जन्म लिया उसी दिन उसकी माँ मर गई थी।
(ख) एक वर्ष की होने पर उसके बाबा की मृत्यु हो गई थी।
(ग) वह अपनी बेटी को लेकर पार्क में आती थी।
(घ) उसे उसके मामा और नानी ने पाल-पोसकर बड़ा किया।

(xx) पार्क में बेबी की मुलाकात किस से हुई?

(क) सुनीति से (ख) अपने बेटे से (ग) तातुश से (घ) अपने दादा से

(xxi) तातुश के बड़े भाई को लेखिका क्या कहकर पुकारती थी?

(क) रामू (ख) जेठू (ग) बापू (घ) इनमें से कोई नहीं

(xxii) जेठू के बारे में कौनसा कथन सही नहीं है?

(क) उन्होंने बेबी की डायरी की बहुत प्रशंसा की। (ग) वे तातुश से एक वर्ष बड़े थे।
(ख) उनकी बांग्ला सीखने की इच्छा नहीं थी। (घ) वे बांग्ला पढ़ सकते थे पर लिख नहीं सकते थे।

(xxiii) शर्मिला दी कौन थीं?

(क) लेखिका की बहन (ख) तातुश की बहन (ग) सुनील की बहन (घ) जेठी की बंधु

(xxiv) बेबी हालदार को किस बांग्ला लेखिका का उदाहरण दिया जाता?

(क) तसलीमा नसरीन (ख) महाश्वेता देवी (ग) आशापूर्णा देवी (घ) इनमें से कोई नहीं

(xxv) आशापूर्णा देवी के बारे में कौनसा कथन सत्य है?

(क) वे घर के बाहर बहुत काम निकली थीं। (ख) उन्होंने केवल बांग्ला ही पढ़ी थी।
(ग) वह तब लिखती थी जब घर के सब लोग सो जाते थे। (घ) उपर्युक्त सभी

(xxvi) बेबी की डायरी तातुश के बंधुओं को कैसी लगी?

(क) ऐनि फ्रैंक की डायरी की तरह (ग) रवीन्द्रनाथ ठाकुर की डायरी की तरह
(ख) आशापूर्णा देवी की जीवनी की तरह (घ) रामकृष्ण की पुस्तक की तरह

(xxvii) लेखिका को अपनी माँ की मृत्यु का पता किस से चला?

(क) अपने बाबा से (ख) तातुश से (ग) अपने दादा से (घ) अपने बेटे से

(xviii) पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर क्या लिखा था?

(क) बेबी हालदार (ख) 'आलो-आँधारि'-बेबी हालदार (ग) 'आलो-आँधारि' (घ) बेबी हालदार की कहानी

(xxix) 'आलो-आँधारि' की लेखिका कौन है?

(क) बेबी हालदार (ख) आशापूर्णा देवी (ग) शर्मीला दी (घ) आशापूर्णा देवी

(xxx) 'आलो-आँधारि' का हिन्दी में अनुवाद किसने किया?

(क) आशापूर्णा देवी (ख) अशोक सिंह (ग) प्रबोध कुमार (घ) केदारनाथ सिंह

उत्तर-(i) (क) सुनील ने (ii) (ख) बेबी को बच्चों के पालन-पोषण और किराया देने के लिए पैसों की आवश्यकता थी। (iii) (घ) बेबी कहीं और काम करें (iv) (ग) स्नेह (v) (क) तीन (vi) (घ) सुनील से (vii) (ग) रामकृष्ण (viii) (ख) सातवीं में (ix) (घ) उपर्युक्त सभी (x) (घ) उपर्युक्त सभी (xi) (ख) वहाँ के सारे घर तोड़ दिए गए थे। (xii) (क) भोला दा ने (xiii) (ग) दिल्ली और कोलकाता में (xiv) (क) अपनी लड़की जैसी (xv) (ख) तीन (xvi) (घ) अर्जुन (xvii) (ग) वह कम बातचीत किया करता था। (xviii) (क) सुनीति से (xix) (ग) वह अपनी बेटी को लेकर पार्क में आती थी। (xx) (क) सुनीति से (xxi) (ख) जेठू (xxii) (ख) उनकी बांग्ला सीखने की इच्छा नहीं थी। (xxiii) (घ) जेठी की बंधु (xxiv) (ग) आशापूर्णा देवी (xxv) (घ) उपर्युक्त सभी (xxvi) (क) ऐनि फ्रैंक की डायरी की तरह (xvii) (क) अपने बाबा से (xviii) (ख) 'आलो-आँधारि'-बेबी हालदार (xxix) (क) बेबी हालदार (xxx) (ग) प्रबोध कुमार

प्रश्न-5 (1) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

नए और अप्रत्याशित विषयों पर रचनात्मक लेखन (5 अंक के लिए)

निर्देश और ध्यान रखने योग्य मुख्य बिंदु-

- इस प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित किए गए हैं। जिसमें मौलिकता के लिए 2 अंक, विषय वस्तु के लिए 3 अंक और भाषा की शुद्धता के लिए 1 अंक निर्धारित है।
- शब्द सीमा-120 शब्द है। इतने शब्द की यह सीमा थोड़ी-बहुत आगे-पीछे कर सकते हैं, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं। जैसे 120 शब्द सीमा के लिए हम 110 से 130 तक भी लिखेंगे तो गलत नहीं है। बात पूरी और स्पष्ट ढंग से रचनात्मकता के साथ आ जानी चाहिए।
- अप्रत्याशित शब्द का अर्थ है-अ+प्रति+आशा+इत = अप्रत्याशित अर्थात् जिसकी आशा न की गई हो। अर्थात एकदम नया और मौलिक विषय जो त्वरित रूप से हमारे सामने आता है, उस विषय पर हम किस प्रकार सृजनात्मकता के साथ सोच कर लिख सकते हैं, यह इस प्रश्न का उद्देश्य है।
- किसी नए अथवा अप्रत्याशित विषय पर कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर ढंग से अभिव्यक्त करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है।
- विषय पर लिखने से पहले लेखक को अपने मस्तिष्क में उसकी एक उचित रूपरेखा बना लेनी चाहिए।
- विषय से जुड़े अन्य तथ्यों की जानकारी होना भी आवश्यक है। सुसंबद्धता किसी भी लेखन का बुनियादी तत्व होता है।
- रचनात्मक लेखन के अन्तर्गत आपको किसी भी प्रकृति का कोई भी विषय दिया जा सकता है।
- लेख में आपकी कही गई बातें न सिर्फ़ आपस में जुड़ी हुई हों, अपितु उनमें तालमेल भी हो। आपकी दो बातें एक-दूसरे का खंडन करती हुई नहीं होनी चाहिए।
- नए तथा अप्रत्याशित विषयों के लेखन में आत्मपरक 'मैं' शैली का प्रयोग किया जा सकता है।
- इस शैली के प्रयोग से लेखक के विचारों और उसके व्यक्तित्व की झलक प्राप्त होती है।

पारम्परिक और अप्रत्याशित विषयों में अन्तर-पारम्परिक विषय वे विषय होते हैं जो किसी मुद्दे, विचार, घटना आदि से जुड़े होते हैं और अधिकतर सामाजिक और राजनीतिक विषय होते हैं। इसमें आप अपनी व्यक्तिगत राय को उतनी प्राथमिकता न देकर सामूहिक विचार पर ज़ोर देते हैं जबकि अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में आपके अपने निजी विचार होते हैं।

जिन विचारों को कह डालना हमारे लिए एकदम आसान होता है उन्हें लिखना चुनौती है क्योंकि आत्मनिर्भर होकर लिखित रूप से अभिव्यक्त करने का अभ्यास ही नहीं करते।

अभ्यास के हर मौके को हम रटने पर निर्भर होकर गवां बैठतें है। **यह बुरी आदत(कुटेव) है।**

अप्रत्याशित लेखन-अचानक सामने आए विषयों पर लिखना। किसी दृश्य, विचार को लेख की शक्ल देना, उसे शब्दों के सहारे पन्नों पर लिखना अप्रत्याशित लेखन है।

रचनात्मकता का कोई फार्मूला नहीं हो सकता अन्यथा कंप्यूटर सबसे अच्छा लेखक होता।

हर घर तिरंगा

भारत की आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 13 से 15 अगस्त 2022 तक हर घर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराने हेतु विशेष आह्वान किया गया। इस अभियान के माध्यम से देश के नागरिकों के दिलों में राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान की भावना पैदा कर देशभक्ति की भावना को बढ़ाना है। हर घर तिरंगा अभियान का लक्ष्य है कि प्रत्येक नागरिक देश की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहे। यह अभियान देशभक्ति की भावना को उच्चतम स्तर तक पहुंचाने में मदद करेगा। यह एक राष्ट्र के रूप में हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाने का एक अच्छा तरीका है जिससे हमारे राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान बढ़ेगा। यह अभियान भारतीय नागरिकों को राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों की याद दिलाएगा।

आजादी का अमृत महोत्सव

"भारत की आजादी के अमृत महोत्सव" प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 12 मार्च, 2021 को शुरू किया। यह कार्यक्रम 15 अगस्त 2022 से 75 सप्ताह पहले शुरू हुआ और 15 अगस्त 2023 तक चलेगा। आजादी के अमृत महोत्सव का अर्थ है-स्वतंत्रता सेनानियों से प्राप्त प्रेरणा का अमृत। भारत के पास एक समृद्ध ऐतिहासिक चेतना और सांस्कृतिक विरासत का अथाह भंडार है जिस पर हमें गर्व होना चाहिए। भारत की सांस्कृतिक विरासत को घर-घर पहुँचाने हेतु साबरमती आश्रम, अहमदाबाद (गुजरात) से 80 लोगों के दल के साथ पदयात्रा (स्वतंत्रता मार्च) का आयोजन किया गया, जो गांधीजी की दांडी यात्रा से प्रेरित है। गांधी जी की दांडी यात्रा की तरह इस पदयात्रा में 25 दिन में 241 मील का रास्ता 5 अप्रैल तक पूर्ण करने का लक्ष्य रखा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवा पीढ़ी को स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान के प्रति जागरूक करना और उन्हें श्रद्धांजलि देना है। यह महोत्सव भारत के उन सभी स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित है जिन्होंने देश को आजाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अग्निपथ योजना

"अग्निपथ योजना" सशस्त्र बलों की तीन सेनाओं में कमीशन अधिकारियों के पद से नीचे के सैनिकों की भर्ती के लिए भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक नई योजना है। इस योजना के तहत सेना में शामिल होने वाले जवानों को 'अग्निवीर' के नाम से जाना जाएगा। अग्निपथ के लिए 17.5 साल से 21 साल के बीच के उम्मीदवार आवेदन कर सकेंगे। भर्ती होने वाले युवाओं को छह महीने तक ट्रेनिंग दी जाएगी, इसके बाद 3.5 साल तक सेना में सर्विस देनी होगी। चार वर्ष की सेवा के पश्चात 25 प्रतिशत अग्निवीरों को उनकी कुशलता के आधार पर स्थाई किया जाएगा। स्थाई कैडर का हिस्सा बन जाने के पश्चात अग्निवीरों को बाकी जवानों की ही तरह पेंशन और अन्य सुविधाएं मुहैया कराई जाएगी। सेवा समाप्ति के पश्चात अग्निवीरों को उनकी कुशलता के अनुरूप कौशल प्रमाण-पत्र दिया जाएगा। इस योजना का मुख्य उद्देश्य देश के युवाओ को 4 वर्ष के लिए सेना में भर्ती करना है जिससे कि उन सभी युवाओं का सपना पूरा हो सके जो सेना में भर्ती होना चाहते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह नीति वर्तमान की 10+2 वाली स्कूली व्यवस्था को 3 से

18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या आधार पर 5+3+3+4 की एक नयी व्यवस्था के रूप में पुनर्गठित करती है। वर्तमान में 3 से 6 वर्ष की उम्र के बच्चे 10+2 वाले ढांचे में शामिल नहीं हैं। नए 5+3+3+4 ढांचे में 3 वर्ष के बच्चों को शामिल कर प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) की एक मजबूत बुनियाद को शामिल किया गया है जिससे आगे चलकर बच्चों का विकास बेहतर हो, वे बेहतर उपलब्धियां हासिल कर सकें और खुशहाल हों। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष ज़ोर देती है।

शिक्षा का अधिकार

शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए भारत सरकार ने सभी के लिए शिक्षा को अनिवार्य करने के उद्देश्य से शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 पारित किया। यह अधिनियम 6 से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार प्रदान करता है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 देश में 1 अप्रैल 2010 को लागू किया गया। शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा देने वाला भारत विश्व का 135वाँ देश बन गया। इसका मुख्य उद्देश्य प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित है। इसके तहत विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात (40 : 1) भी निश्चित किया गया है। यह अधिनियम शिक्षा के केंद्र में बच्चों को रखकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हमें इस बारे में गंभीरता से सोचना होगा, ताकि हम आने वाली मुसीबत को कम कर सकें और लोगों को जागरुक भी बनाए। जब तक हम ठोस कदम नहीं उठाएंगे, तब तक हम भारत को सुरक्षित नहीं रख पाएंगे। ऐसे में भारत को प्लास्टिक मुक्त करने का प्रयास करते रहना आवश्यक माना जाता है।

निब-पैन

स्कूली दौर में निब पैन का चलन जोरों पर था। तब कैमलिन की स्याही प्रायः हर घर में मिल ही जाती थी, कोई कोई टिकिया से स्याही बनाकर भी उपयोग करते थे और बुक स्टाल पर शीशी में स्याही भर कर रखी होती थी, 5 पैसा दो और ड्रापर से खुद ही डाल लो, ये भी सिस्टम था। जिन्होंने भी पैन में स्याही डाली होगी वो ड्रॉपर के महत्व से भली भांति परिचित होंगे। कुछ लोग ड्रापर का उपयोग कान में तेल डालने में भी करते थे। महीने में दो-तीन बार निब पैन को खोलकर उसे गरम पानी में डालकर उसकी सर्विसिंग भी की जाती थी और लगभग सभी को लगता था कि निब को उल्टा कर के लिखने से हैंडराइटिंग बड़ी सुन्दर बनती है। सामने के जेब में पेन टांगते थे और कभी कभी स्याही लीक होकर सामने शर्ट नीली कर देती थी। हर क्लास में एक ऐसा एक्सपर्ट होता था जो पैन ठीक से नहीं चलने पर ब्लेड लेकर निब के बीच वाले हिस्से में बारिकी से कचरा निकालने का दावा कर लेता था। नीचे के हड्डा को घिस कर परफेक्ट करना भी एक आर्ट था। हाथ से निब नहीं निकलती थी तो दांतों के उपयोग से भी निब निकालते थे। दांत, जीभ और होंठ भी नीला होकर भगवान महादेव की तरह हलाहल पिये सा दिखाई पड़ता था। दुकान में नयी निब खरीदने से पहले उसे पैन में लगाकर सेट करना फिर कागज़ में स्याही की कुछ बूंदे छिड़ककर निब उन गिरी हुयी स्याही की बूंदो पर लगाकर निब की स्याही सोखने की क्षमता नापना ही किसी बड़े साइंटिस्ट वाली फीलिंग दे जाता था। निब पैन कभी ना चले तो हम सभी ने हाथ से झटका देने के चक्कर में आजू बाजू वालों पर स्याही जरूर छिड़कायी होगी। कुछ बच्चे ऐसे भी होते थे जो पढ़ते लिखते तो कुछ नहीं थे लेकिन घर जाने से पहले उंगलियो में स्याही जरूर लगा लेते थे, बल्कि पैंट पर भी छिड़क लेते थे ताकि घरवालों को देख के लगे कि बच्चा स्कूल में बहुत मेहनत करता है।भूली हुइ यादें....।

अभ्यास हेतु रचनात्मक लेखन :-

• बारिश की वह सुबह	• मसूरी के रास्ते बस का ख़राब होना
• मेरे बगीचे में खिला गुलाब	• नदी के किनारे बरसात में घिर जाना
• विद्यालय में मेरा प्रिय कोना	• अगर मैं फिल्म बनाता

• प्रातःकाल योग करते लोग • दुर्घटना से देर भली • जिन्हें जल्दी थी, वे चले गए • अक्ल बड़ी या भैंस • गाँव लौटते मजदूर • मैंने हारना नहीं सीखा • अचानक जब हमारी मेट्रो रुक गई	• प्रदूषण मुक्त प्रकृति का स्वप्न • घर से विद्यालय का सफ़र • काश! मैं उड़ पाता • जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि • चाँदनी रात और मैं • पॉलिथीन मुक्त भारत • राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका

प्रश्न-5 (2) औपचारिक पत्र-लेखन

विचारों, भावों, संदेशों एवं सूचनाओं के संप्रेषण के लिए पत्र सहज, सरल तथा पारंपरिक माध्यम है। पत्र अनेक प्रकार के हो सकते हैं, पर प्राय: परीक्षाओं में शिकायती-पत्र, आवेदन-पत्र तथा संपादक के नाम पत्र पूछे जाते हैं। इन पत्रों को लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

- ❖ पत्र के स्वरूप (फ़ॉर्मेट) का ध्यान रखें।
- ❖ पत्र-प्रेषक, दिनांक, प्रेषती, विषय, संबोधन, विषय-सामग्री, समापन, स्व-निर्देश व हस्ताक्षरके क्रम में लिखा जानाचाहिए।
- ❖ भाषा शुद्ध, सरल, स्पष्ट, विषयानुरूप तथा प्रभावकारी होनी चाहिए।
- ❖ औपचारिक पत्र सरकारी कार्यालयों अथवा गैर सरकारी कार्यालयों, संगठनों आदि को लिखे जाते हैं-
- ❖ औपचारिक पत्र को नए पृष्ठ से लिखना शुरू करना चाहिए और एक पृष्ठ में पूर्ण कर देना चाहिए।
- ❖ औपचारिक पत्र में ऊपर दाईं तरफ कोने में दिनांक लिखनी चाहिए-
- ❖ औपचारिक पत्र में ऊपर बाईं तरफ (सेवा में,) लिखने के बाद अल्पविराम लगाते हुए एक पंक्ति छोड़कर सम्बंधित अधिकारी पद(प्राचार्य महोदय, थानाध्यक्ष, बैंक प्रबंधक और संपादक महोदय) और कार्यालय आदि का पूर्ण पता लिखना चाहिए
- ❖ उसके बाद विषय को लिखना चाहिए, विषय संक्षिप्त तथा एक पंक्ति में पूर्ण कर देना चाहिए-
- ❖ विषय के ठीक बाद एक पंक्ति छोड़कर आदरसूचक शब्द (महोदय) लिखना चाहिए-
- ❖ मुख्य भाग को दो भागों में बाँट देना चाहिए, प्रथम भाग की शुरूआत (उपर्युक्त विषयान्तर्गत विनय निवेदन है कि.....) से तथा दूसरे भाग की शुरुआत (अतः आपसे अनुरोध है कि.....) से करनी चाहिए-
- ❖ पत्र का दूसरा भाग समाप्त होने के ठीक बाद (धन्यवाद/सधन्यवाद) लिखना चाहिए-
- ❖ प्रेषक (भेजने वाले) का जिक्र होना चाहिए-
- ❖ इस बात का विशेष ध्यान रखें कि प्रश्न पत्र में भेजने वाले तथा जिसको भेजा जाना है के नाम पते का अकसर जिक्र होता है यदि ना हो तो आप भेजने वाले में (अ,ब,स आदि का उल्लेख करें)-

औपचारिक पत्र के प्रकार

1.प्रार्थना पत्र

2.शिकायती पत्र

3.संपादक के नाम पत्र

4.कार्यालयी पत्र

प्रार्थना पत्र

(1) अवकाश प्राप्ति हेतु प्रार्थना पत्र।

परीक्षा भवन,
का ख ग
दिनांक:10 नवम्बर, 2022

सेवा में,
प्राचार्य महोदय
केंद्र विद्यालय मंडोर,
जोधपुर (राज.)

विषय: अवकाश प्राप्ति हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा आठ का छात्र हूं। कल दिनांक 10 नवम्बर, 2022 को विद्यालय से वापस आने के बाद मुझे तेज तीव्र ज्वर आ गया। डॉक्टर ने मुझे 5 दिन का विश्राम करने की सलाह दी है। मैं अगले 5 दिनों तक विद्यालय में अनुपस्थित रहूंगा।

अतः महोदय से निवेदन है कि आप मुझे दिनांक 10-11-2022 से 15/11/2022 तक अवकाश प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य
प्रमोद शुक्ल
कक्षा-11
रोल नंबर-10

(2) छोटी बहन के विवाह हेतु 5 दिनों के अवकाश के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र लिखिए?

परीक्षा भवन
अ ब स
दिनांक: 8/9/2022

सेवा में
प्रधानाचार्य,
राज उच्च माध्यमिक विद्यालय
अजमेर रोड,
जयपुर।

विषय – बहन की शादी के लिए अवकाश प्रदान हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय के कक्षा 12वीं का विद्यार्थी हूँ। मेरे घर में मेरी बड़ी बहन की शादी है, जिसकी शादी दिनांक 8/9/2022 और 9/9/2022 को निश्चित हुई है। मैं अपने घर में सबसे बड़ा लड़का हूँ। अतः शादी में बहुत से ऐसे कार्य है, जिसमें मेरा होना बहुत आवश्यक है। इस कारण मुझे 8/9/2022 और 9/9/2022 तक का अवकाश चाहिए।
अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि आप मुझे अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। मैं आपका आभारी रहूँगा।
धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य
नाम-पंकज कुमार
दिनांक: 8/11/2022

शिकायती पत्र

(3) नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को अपने मोहल्ले में गंदगी के विषय में पत्र

सेवा में,
श्रीमान् मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी,
नगर निगम,
जोधपुर।

दिनांक : .....

विषय : मौहल्ले में व्याप्त गंदगी के विषय में।

महोदय,

उपर्युक्त विषय के अंतर्गत यह दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि पिछले कुछ दिनों से हमारे मौहल्ले में चारों ओर गंदगी का साम्राज्य फैला हुआ है, जिसके कारण मौहल्लेवासियों का जीना दूभर हो गया है। मौहल्ले में फैंके गए कूड़े-कचरे के ढेर पर पशुओं का जमावड़ा लगा रहता है। चारों ओर फैली गंदगी के कारण पूरे मौहल्ले में मक्खियों और मच्छरों का साम्राज्य फैला है। जिससे तरह-तरह की बीमारियों के फैलने का डर बना रहता है।
अतः आपसे नम्र निवेदन है कि हमारे मौहल्ले में जल्द से जल्द साफ़-सफाई करवाई जाए, जिससे मौहल्ले के लोगों को नरक का जीवन गुजारने से मुक्ति मिल सके।
धन्यवाद।

प्रार्थी
अमित यादव
मंडोर बाग
जोधपुर

(4) क्षेत्र में चोरी की बढ़ती हुई घटनाओं पर स्थानीय समाचार-पत्र के संपादक को पत्र-

संपादक के नाम पत्र

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक भास्कर,

जयपुर।

दिनांक.....

विषय – जनकपुरी में चोरी की बढ़ती हुई घटनाओं मंबंध में।

महोदय,
उपर्युक्त विषय के अंतर्गत निवेदन है कि मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों का ध्यान जनकपुरी क्षेत्र में चोरी और लूटपाट की बढ़ती घटनाओं के प्रति आकृष्ट करना चाहता हूँ। विगत कुछ माह से हमारे क्षेत्र में असामाजिक तत्त्वों का जमावड़ा हो गया है। रात्रिकाल में घर में चोरी के अलावा रास्ते में दिन-दहाड़े लूटपाट की घटनाएँ आम हो गई हैं। हर कोई स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रहा है। लड़कियों और महिलाओं का घर से बाहर निकलना दूभर हो गया है कोई अपने घर को सूना छोड़कर जा नहीं सकते है।
अतः आपसे अनुरोध है कि आप संबंधित अधिकारियों को अपने समाचार पत्र के माध्यम से इस समस्या पर तत्काल ध्यान आकर्षित करवाकर उचित कार्रवाई करवाने की कृपा करें।
सधन्यवाद

भवदीय
महेश वर्मा
जनकपुरी
जयपुर-10

(5) रचना (कविता) को प्रकाशित कराने हेतु पत्र।

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक भास्कर समाचार पत्र,

अजमेर, राजस्थान।

विषय – अपनी रचना (कविता) को प्रकाशित कराने हेतु पत्र।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं मुरली व्यास, अजमेर के आदर्श बाज़ार रोड स्थित संयम क्षेत्र का निवासी हूं। मैं आपके समाचार पत्र का नियमित पाठक हूं। मुझे आपके समाचार पत्र द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले प्रत्येक लेख, समाचार तथा अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां पढना अच्छा लगता है।

महोदय, मैं बचपन से ही विभिन्न कविता लेखन का प्रयास करता आया हूं। विद्यालय स्तर पर मैंने विभिन्न कविता लेखन प्रतियोगिताओं में भाग लिया। तथा संभाग एवं राज्य स्तर पर विशेष पुरस्कार प्राप्त किया। इन्हीं प्रतियोगताओं के माध्यम से मेरी कविता लेखन में रुचि निरंतर अधिक बढ़ती गई।मेरी लिखित कविताओं का अब तक तक विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, मैगजीन तथा लेखों में प्रकाशन किया जा चुका है। परंतु मेरी इच्छा है कि मेरी नव रचित "प्रगति पथ" नामक कविता आपके समाचार पत्र में भी प्रकाशित हो।
अतः मेरा आपसे अनुरोध है कि अपने प्रतिष्ठित समाचार पत्र के अन्तर्गत मेरी कविता को प्रकाशित करने का कष्ट करें। मैं उम्मीद करता हूं कि आप मुझे निराश नहीं करेंगे। इसके लिए मैं आपका आभारी रहूंगा।
सधन्यवाद।

भवदीय

मुरली व्यास,
लेखक।
संयम क्षेत्र,
आदर्श क्षेत्र, अजमेर।
दिनांक.....

(6) पेट्रोल और डीजल की बढती कीमतों पर चिंता जाहिर करते हुए पत्र

महेश नगर,
जयपुर।
दिनांक:10-11-2022

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक भास्कर,

जयपुर।

विषय:पेट्रोल और डीजल की बढती कीमतों पर चिंता जाहिर करते हुए पत्र।

महोदय,

मैं एक लंबे समय से आपके अखबार का पाठक हूं। आपके अखबार में आम आदमी से जुड़े मुद्दों को काफी गंभीरता के साथ उठाया जाता है। बीते काफी महीनों से पेट्रोल और डीजल की बढ़ती कीमतों ने आम आदमी की जेब को खासा प्रभावित किया है। जिसके चलते उन पर अतिरिक्त भार पड़ रहा है। वर्तमान समय में, फिर चाहे वह पेट्रोल हो या डीजल, दोनों की ही कीमतें आसमान छू रहीं हैं। जिससे हर किसी का बजट तक प्रभावित हुआ है।

बात करें, पिछले वर्षों की तो साल 2020-तक पेट्रोल 66 रुपए और डीजल 50 रुपए प्रति लीटर हुआ करता था। लेकिन वर्तमान 2021-22 में पेट्रोल और डीजल 100 के पार पहुंच गया है। ऐसे में आम आदमी जो कि पहले से ही महंगाई की मार झेल रहा है। अब पेट्रोल और डीजल की बढ़ती कीमतों ने उसके लिए आग में घी डालने का काम किया है तो वहीं कोरोना काल में लोगों की आमदनी के जरिए वैसे भी कम हो गए हैं, ऊपर से पेट्रोल और डीजल के बढ़े हुए दामों से आम आदमी की आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गई है।

ऐसे में मेरा आपसे अनुरोध है कि आप अपने अखबार के माध्यम से वर्तमान सरकार का ध्यान पेट्रोल और डीजल की बढ़ती कीमतों की ओर आकर्षित करें। ताकि सरकार द्वारा इनकी कीमतों को पटरी पर लाने की कोशिश की जा सके। साथ ही केंद्र और राज्य की सरकारें देश भर की जनता को पेट्रोल और डीजल की बढ़ती कीमतों से निजात दिलाने के लिए उस पर लगने वाले कर को कम करें और जनता को उचित कीमत पर इसकी उपलब्धता कराई जाए।

आशा है कि आपके अखबार में जनता से जुड़ी उपरोक्त खबर को प्राथमिकता से प्रकाशित किया जाएगा। जिसके लिए आपका तहे दिल से शुक्रिया।

सधन्यवाद

प्रार्थी

रमेश चंद्र,

निवासी पुराना शहर, जयपुर।

(7) मोहल्ले में देर रात तक लाउडस्पीकर बजने के कारण सभासद को शिकायती पत्र।

सेवा में,

आदरणीय सभासद महोदय,

गुलाबनगर मोहल्ला,

जयपुर।

विषय – देर रात तक लाउडस्पीकर बजने के कारण शिकायती पत्र।

महोदय,

मेरा नाम संजीव तिवारी है। मैं शास्त्री नगर के गुलाब नगर मोहल्ले का निवासी हूं। मैं इस पत्र के माध्यम से आपको बताना चाहूंगा कि मेरे घर के सामने अनावश्यक तौर पर प्रतिदिन जोर-जोर से लाउडस्पीकर बजाया जा रहे हैं। इन लाउडस्पीकरों की आवाज से मोहल्ले की समस्त निवासियों को अत्यधिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

मान्यवर, हम समझते हैं कि किसी विशेष अवसर पर या त्योहार पर लोग अपनी खुशी तथा उत्साह के लिए लाउडस्पीकर बजाते हैं लेकिन यह समय ना किसी त्योहार का है ना ही किसी विशेष अवसर का। परंतु फिर भी इस समय हमारे घर के सामने तेज आवाज में लाउडस्पीकर बजाए जाते हैं। जिसके कारण मोहल्ले में रहने वाले छात्र-छात्राओं को पढ़ने में परेशानी होती है। घर के आस-पास जो कोचिंग संस्थान है उनके बच्चों को पढ़ाना मुश्किल हो जाता है। मोहल्ले के कई निवासियों ने उनसे इस बात की शिकायत की लेकिन उन कथित व्यक्तियों ने हमारी किसी परेशानी को नहीं समझा।

अतः हमारा आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप मोहल्ले में अनावश्यक तौर पर बजाए जा रहे हैं लाउडस्पीकरों को जल्दी ही बंद कराने के लिए कोई ठोस कदम ले।

सधन्यवाद।

भवदीय
संजीव तिवारी
मोहल्ले के अन्य सभी सदस्य
दिनांक.....

अभ्यास हेतु संभावित विषय –

1. अपने नगर के जलदाय विभाग के मुख्य अधिकारी को पर्याप्त एवं नियमित रूप से जल आपूर्ति न मिलाने की शिकायत करते हुए पत्र लिखिए
2. आप राधा रमण अग्रवाल है अपनी रचना 'उज्जवल भविष्य' को राजस्थान पत्रिका में प्रकाशन करने का आग्रह करते हुए संपादक के नाम पत्र लिखिए।
3. युवाओं में नैतिक मूल्यों के प्रति संवेदनहीनता पर चिंता प्रकट करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
4. चेक बुक गुम हो जाने की शिकायत करते हुए भारतीय स्टेट बैंक अलवर के प्रबंधक को एक पत्र लिखिए।
5. अपने क्षेत्र की नालियों और सडकों आदि की समुचित सफ़ाई न होने पर स्वास्थ्य अधिकारी को एक शिकायती पत्र लिखिए
6. यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने तथा अन्य सुझाव देते हुए यातायात पुलिस आयुक्त को पत्र लिखिए।
7. आपके साथी छोटे विद्यार्थियों को बहुत सताते हैं उनकी शिकायत करते हुए प्राचार्य को पत्र लिखिए

प्रश्न-5(3) डायरी लेखन लेखन, कथा-पटकथा विषय पर लेखन

डायरी लेखन

डायरी वह नितांत निजी स्तर पर घटित घटनाओं और तत्संबंधी बौद्धिक-भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का लेखा-जोखा है। इन्हें हम किसी और के लिए नहीं, स्वयं अपने लिए शब्दबद्ध करते हैं। जिन बातों को हम दुनिया में किसी और व्यक्ति के सामने नहीं कह सकते, उन्हें भी डायरी के पन्नों पर शब्दबद्ध करके खुद को सुना डालते हैं। ऐसा करके हम पहले खुद को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं, दूसरे अपने अंदर अनजाने इकट्ठा होते भार से मुक्त होते हैं और विस्मृति के अंधेरे में खोते अपने ही व्यक्तित्त्व के पहलुओं को इस तरह रिकॉर्ड कर लेते हैं कि उन्हें पलट कर कभी भी छुआ जा सकता है। डायरी लिखना अपने साथ एक अच्छी दोस्ती कायम करने का बेहतरीन जरिया है। डायरी लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों को ध्यान मे रखना चाहिए-

- डायरी या तो किसी नोटबुक में या पुराने साल की डायरी में लिखी जानी चाहिए। पुराने साल की डायरी में पहले की पड़ी हुई तिथियों की जगह अपने हाथ से तिथि डालें। यह सुझाव इसलिए दिया जा रहा है कि आप कहीं मौजूदा साल की डायरी में तिथियों के अनुसार बने हुए सीमित स्थान से अपने को बंधा हुआ न महसूस करें। ऐसा भी हो सकता है कि हम किसी दिन दो-तीन पंक्तियाँ ही लिखना चाहें और किसी दिन हमारी बात पाँच पन्नों में पूरी हो। कहा भी गया है, सभी दिन एक समान नहीं होते। ऐसे में डायरी का किसी निश्चित तिथि के साथ दिया गया सीमित स्थान हमारे लिए बंधन बन जाएगा। इसीलिए नोटबुक या पुराने साल की डायरी अधिक उपयोगी साबित हो सकती है। उसमें अपनी सुविधा के अुनसार तिथियाँ डाली जा सकती हैं और स्थान का उपयोग किया जा सकता है।
- लेखन करते हुए आप स्वयं तय करें कि आप क्या सोचते हैं और खुद को क्या कहना चाहते हैं। यह तय करते हुए आपको यथासंभव सभी तरह के बाहरी दबावों से मुक्त होना चाहिए। अपनी दिनभर की घटनाओं, मुलाकातों, खयालातों इत्यादि में से कौन-कौन सी आपको दर्ज करने लायक लगती हैं, किन्हें आप किन-किन वजहों से भविष्य में भी याद करना चाहेंगे। यह विचार कर लेने के बाद ही उन्हें शब्दबद्ध करने की ओर बढ़ें।
- डायरी बिलकुल निजी वस्तु है और यह मान कर ही उसे लिखा जाना चाहिए कि वह किसी और के द्वारा पढ़ी नहीं जाएगी। अगर आप किसी और को पढ़वाने की बात सोच कर डायरी लिखते हैं, तो उसका आपकी लेखन-शैली, विषय-वस्तु के चयन और बातों के बेबाकपन पर पूरा असर पड़ेगा। इसलिए यह मानते हुए डायरी लिखें कि उसका पाठक आपके अलावा कोई और नहीं है।
- यह कतई जरूरी नहीं कि डायरी परिष्कृत और मानक भाषा-शैली में लिखी जाए। परिष्कार और मानकता का दबाव कथ्य के स्तर पर कई तरह के समझौतों के लिए आपको बाध्य कर सकता है। डायरी-लेखन में इस समझौता परस्ती के लिए कोई जगह नहीं है। डायरी का डायरीपन इसी में है कि आप जो कुछ दर्ज

करना चाहते हैं और जिस तरीके से दर्ज करना चाहते हैं, करें। इस सिलसिले में भाषाई शुद्धता कितनी बरकरार रहती है और शैली-सौंदर्य कितना सध पाता है, इसकी चिंता न करें। आपके अंदर के स्वाभाविक वेग से शैली जो रूप ग्रहण करती है, वही डायरी की उचित शैली है।

- आखिरी, पर बहुत अहम बात ये कि डायरी नितांत निजी स्तर की घटनाओं और भावनाओं का लेखा-जोखा होने के साथ-साथ, आपके मन के आईने में आपके दौर का अक्स भी है। आप अपने जिन अनुभवों को वहाँ दर्ज करते हैं, उनमें आपकी नजर से देखा-परखा गया समकालीन इतिहास किसी-न-किसी मात्र में मौजूद रहता है। डायरी लिखते हुए अगर यह बात हमारे जेहन में रहे, तो अपने काम के महत्त्व को लेकर हम अधिक आश्वस्त हो सकते हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्न-

प्रश्न-1-डायरी लेखन क्या है?

उत्तर-डायरी वह नितांत निजी स्तर पर घटित घटनाओं और तत्संबंधी बौद्धिक-भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का लेखा-जोखा है। इन्हें हम किसी और के लिए नहीं, स्वयं अपने लिए शब्दबद्ध करते हैं। जिन बातों को हम दुनिया में किसी और व्यक्ति के सामने नहीं कह सकते, उन्हें भी डायरी के पन्नों पर शब्दबद्ध करके खुद को सुना डालते हैं। ऐसा करके हम पहले खुद को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं, दूसरे अपने अंदर अनजाने इकट्ठा होते भार से मुक्त होते हैं और विस्मृति के अंधेरे में खोते अपने ही व्यक्तित्त्व के पहलुओं को इस तरह रिकॉर्ड कर लेते हैं कि उन्हें पलट कर कभी भी छुआ जा सकता है। डायरी लिखना अपने साथ एक अच्छी दोस्ती कायम करने का बेहतरीन जरिया है।

प्रश्न-2-डायरी लिखते समय हमें किन-किन बातों को ध्यान मे रखना चाहिए?

उत्तर-डायरी लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों को ध्यान मे रखना चाहिए-

1. डायरी या तो किसी नोटबुक में या पुराने साल की डायरी में लिखी जानी चाहिए। डायरी लिखते समय पृष्ठ में सबसे ऊपर तिथि (तारीख) का उल्लेख किया जाना चाहिए। यदि उसमें तिथियाँ पहले से अंकित हैं तो उन्हें अपने हाथ से संशोधित कर लेना चाहिए।
2. लेखन करते हुए बाहरी दबावों से मुक्त होकर अपनी दिनभर की घटनाओं, मुलाकातों, खयालातों इत्यादि में से जो बातें आपको दर्ज करने लायक लगती हैं, जिन्हें आप भविष्य में भी याद रखना चाहते हैं, उन्हें लिखा जाना चाहिए।
3. डायरी बिलकुल निजी वस्तु है और यह मान कर ही उसे लिखा जाना चाहिए कि वह किसी और के द्वारा पढ़ी नहीं जाएगी। इस से डायरी में आपके विचार स्वतंत्र, निर्भीक और प्रभाव से मुक्त होते हैं।
4. डायरी लिखते समय भाषा का प्रवाह स्वाभाविक होना चाहिए अर्थात् जैसी भाषा आप स्वाभाविक रूप से प्रयोग करते हैं उसी भाषा में डायरी लिखी जानी चाहिए।

प्रश्न-3. डायरी बिलकुल निजी वस्तु है और वह किसी और के द्वारा नहीं पढ़ी जाएगी-ऐसा मान कर ही डायरी क्यों लिखी जानी चाहिए?

उत्तर-यह मान कर ही डायरी लिखी जानी चाहिए कि वह किसी और के द्वारा पढ़ी नहीं जाएगी क्योंकि यदि हम किसी और को पढ़वाने की बात सोच कर डायरी लिखते हैं, तो इस से लेखन-शैली, विषय-वस्तु के चयन और बातों के बेबाकपन पर असर पड़ता है जिससे हम बिल्कुल निडर होकर और प्राकृतिक रूप से नहीं लिख पाते। तब हम कुछ बातों को छुपाने लगते हैं तो कुछ बातों को बढ़ा-चढ़ा कर बताने लगते हैं।

डायरी लेखन-प्रारूप एवं उदाहरण

(1)

दिनांक-20 जून, 2022

दिन-सोमवार

आज का दिन उत्साह और उत्सुकता का रहा। 50 दिन की छुट्टी के बाद आज पुनः स्कूल खुला है। आज मैं उन सभी दोस्तों से मिला जिनसे मैं दो महीने दूर रहा। उन दोस्तों से मिलकर पुरानी यादें ताजा हो गई और एक अपार खुशी का संचार हुआ। दोस्तों के बिना दो महीने कितना बोरियत रहा यह मैं अच्छे से समझ सकता हूं। आज हम सभी दोस्त एक-दूसरे की पसंद का नाश्ता घर से बनवा कर लाए थे। सभी ने एक साथ बैठकर खाना खाया तो बेहद आनंद की अनुभूति हुई। सभी अध्यापक और अध्यापिकाए भी प्रसन्न प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। सचमुच आज का दिन मेरे बहुत ही अच्छा रहा।

(2)

दिनांक-08 नवम्बर, 2022

दिन-मंगलवार

आज मैं बहुत उदास हूँ क्योंकि मेरा सबसे अच्छा दोस्त रमेश जयपुर छोड़कर भोपाल जा रहा है। उसके पिता जी भारतीय रेल विभाग में कार्य करते हैं और उनका तबादला हो गया है। आज यह बात उसने मुझे स्कूल में बताई। मैंने जब से यह बात उसके मुँह से सुनी तब से मेरा मन बेचैन-सा हो गया। शाम को वह मुझसे मिलने मेरे घर पर भी आया था। वह भी बहुत दुखी था, परंतु उसने मुझसे वादा किया है कि वह फोन और पत्रों द्वारा मुझसे संपर्क बनाए रखेगा। रमेश जैसा दोस्त मिलना किस्मत की बात है। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमेशा खुश रहे और हमारी दोस्ती हमेशा बनी रहे।

कथा-पटकथा विषय पर लेखन

पटकथा का आशय :-

शब्द 'पटकथा' दो शब्दों के मेल से बना है-'पट' और 'कथा'। कथा का मतलब हम सभी जानते हैं-कहानी। और पट का अर्थ होता है-परदा; अर्थात ऐसी कथा जो परदे पर दिखाई जाए। चाहे वो परदा बड़ा हो या छोटा।

सिनेमा और टेलीविजन दोनों ही माध्यमों के लिए बनने वाली फ़िल्मों, धारावाहिकों आदि का मूल आधार पटकथा ही होती है। इसी के अनुसार निर्देशक अपनी शूटिंग की योजना बनाता है, अभिनेताओं को अपनी भूमिका की बारीकियाँ और संवादों की जानकारी मिलती है तथा कैमरे के पीछे काम करने वाले तकनीशियनों और सहायकों को अपने-अपने विभागों के लिए महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। कथानक तो इसका एक अभिन्न हिस्सा होता ही है। फ़िल्म या टी-वी-की पटकथा की संरचना नाटक की संरचना से बहुत मिलती है। अंग्रेजी में तो इसे कहते ही 'स्क्रीनप्ले' हैं। नाटक की तरह ही यहाँ भी पात्र-चरित्र होते हैं, नायक-प्रतिनायक होते हैं, अलग-अलग घटनास्थल होते हैं, दृश्य होते हैं, कहानी का क्रमिक विकास होता है, द्वंद्व-टकराहट और फिर समाधान। ये सब कुछ पटकथा के भी आवश्यक अंग होते हैं।

नाटक और पटकथा में अंतर-

मंच के नाटक और फ़िल्म की पटकथा में कुछ मूलभूत अंतर भी होते हैं। पहली चीज है दृश्य की लंबाई, नाटक के दृश्य अकसर अधिक लंबे होते हैं और फ़िल्मों में छोटे-छोटे। इसी प्रकार नाटक में आमतौर पर सीमित घटनास्थल होते हैं, जबकि फ़िल्म में इसकी कोई सीमा नहीं, हर दृश्य किसी नए स्थान पर घटित हो सकता है। इसकी वजह है दोनों माध्यमों में मूलभूत अंतर-नाटक एक सजीव कला माध्यम है, जहाँ अभिनेता अपने ही जैसे जीवंत दर्शकों के सामने, अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। सब कुछ वहीं, उसी वक्त घट रहा होता है। जबकि सिनेमा या टेलीविजन में पूर्व रिकॉर्डेड छवियाँ एवं ध्वनियाँ होती हैं।

नाटक का पूरा कार्य-व्यापार एक ही मंच पर घटित होता है एक निश्चित अवधि के दौरान। जबकि फ़िल्म या टेलीविजन की शूटिंग अलग-अलग सेटों या लोकेशनों पर दो दिन से लेकर दो साल तक की अवधि

में की जा सकती है इसीलिए नाटक का कार्य-व्यापार, दृश्यों की संरचना और चरित्रों की संख्या आदि को सीमित रखना पड़ता है, लेकिन सिनेमा या टेलीविजन में ऐसा कोई बंधन नहीं होता। सबसे बड़ी बात नाटक की कथा का विकास 'लीनियर' मतलब एक-रेखीय होता है, जो एक ही दिशा में आगे बढ़ता है। जबकि सिनेमा में फ़्लैशबैक या फ़्लैशफ़ॉरवर्ड तकनीकों का इस्तेमाल करके आप घटनाक्रम को किसी भी रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

फ्लैश बैक और फ्लेशफॉरवर्ड-

फ़्लैशबैक वो तकनीक होती है, जिसमें आप अतीत में घटी किसी घटना को दिखाते हैं और फ़्लैशफ़ॉरवर्ड में आप भविष्य में होने वाले किसी हादसे को पहले दिखा देते हैं। इन दोनों तकनीकों को हम एक-एक उदाहरण से समझने की कोशिश करते हैं। मान लीजिए हम रांगेय-राघव की कहानी गूँगे पर फ़िल्म बना रहे हैं, और हमारी फ़िल्म शुरू होती है सड़क के दृश्य से (जहाँ कुछ किशोर लड़के मिलकर एक दुबले-पतले लड़के को पीट रहे हैं। मार खा रहा लड़का भाग कर एक घर के दरवाजे पर पहुँचता है। घर के भीतर से भाग कर चमेली आती है, उसके साथ उसके छोटे-छोटे बच्चे शकुंतला और बसंता भी हैं। चमेली घर की दहलीज पर सर रखे, खून से लथपथ गूँगे को देखती है, जो अपनी व्यथा को व्यक्त करने में असमर्थ है और चमेली को वो दिन याद आता है, जिस दिन अनाथालय में पहली बार उसकी मुलाकात गूँगे से हुई थी। अब हम पागलखाने का वो दृश्य दिखाते हैं, जहाँ कुछ दिन पहले चमेली अपनी सहेलियों के साथ गई थी और जहाँ पहली बार उसकी गूँगे से मुलाकात हुई थी।) यही, वर्तमान से अतीत में जाना, फ़्लैशबैक की तकनीक कहलाता है। यहाँ एक तथ्य गौर करने लायक है, वो यह कि फ़्लैशबैक या फ़्लैशफ़ॉरवर्ड दोनों ही युक्तियों का इस्तेमाल करने के पश्चात हमें वापस वर्तमान में आना जरूरी है। ताकि दर्शकों के मन में किसी किस्म का असमंजस न रहे। फ़िल्म या टेलीविजन माध्यम में एक सुविधा यह भी है कि एक ही समय-खंड में अलग-अलग स्थानों पर क्या घटित हो रहा है, दिखाया जा सकता है।

पटकथा लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें-

पटकथा की मूल इकाई होती है दृश्य। एक स्थान पर, एक ही समय में लगातार चल रहे कार्य व्यापार के आधार पर एक दृश्य निर्मित होता है। इन तीनों में से किसी भी एक के बदलने से दृश्य भी बदल जाता है। दूसरी गौर करने लायक बात है, पटकथा लिखने का विशिष्ट ढंग। हमेशा दृश्य संख्या के साथ दृश्य की लोकेशन या घटनास्थल लिखा जाता है-वो कमरा है, पार्क है, रेलवेस्टेशन है या शेर की माँद। उसके बाद लिखा जाता है घटना का समय-दिन/रात/सुबह/शाम। तीसरी जानकारी जो दृश्य के शुरू में दी जानी जरूरी होती है वो ये कि घटना खुले में घट रही है या किसी बंद जगह में, अंदर या बाहर? आमतौर पर ये सूचनाएँ अंग्रेजी में लिखी जाती हैं और अंदर या बाहर के लिए अंग्रेजी शब्दों इंटीरियर या एक्सटीरियर के तीन शुरुआती अक्षरों का इस्तेमाल किया जाता है, मतलब INT. या EXT. ये पटकथा लिखने का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत प्रारूप है।

महत्वपूर्ण प्रश्न-

प्रश्न-1 पटकथा या 'स्क्रीनप्ले' क्या है, समझाइए।

उत्तर-शब्द 'पटकथा' दो शब्दों के मेल से बना है-'पट' और 'कथा'। कथा का मतलब है-कहानी और पट का अर्थ होता है-परदा; अर्थात ऐसी कथा जो परदे पर दिखाई जाए। चाहे वो परदा बड़ा हो या छोटा। सिनेमाघर आदि में पर्दे का प्रयोग किया जाता है। पटकथा को ही अंग्रेजी में 'स्क्रीनप्ले' कहा जाता है।

प्रश्न-2 पटकथा के आवश्यक अंग (स्रोत या तत्व) क्या हैं?

उत्तर-नाटक की तरह ही पटकथा में भी कथानक, पात्र-चरित्र होते हैं, नायक-प्रतिनायक होते हैं, अलग-अलग घटनास्थल होते हैं, दृश्य होते हैं, कहानी का क्रमिक विकास होता है, द्वंद्व-टकराहट और फिर समाधान। ये सब कुछ पटकथा के भी आवश्यक अंग हैं।

प्रश्न-3 'फ्लैशबैक' क्या है?

उत्तर-फ्लैशबैक तकनीक का प्रयोग सिनेमा आदि में किया जाता है। इस तकनीक के माध्यम से अतीत की घटनाओं को प्रदर्शित किया जाता है। अतीत में घटी हुई घटनाओं को दर्शकों के समक्ष चित्रित किया जाता है। वर्तमान से अतीत में जाना, फ़्लैशबैक की तकनीक कहलाता है। यहाँ एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि फ़्लैशबैक का इस्तेमाल करने के पश्चात हमें वापस वर्तमान में आना जरूरी होता है।

प्रश्न-4 'फ्लेशफॉरवर्ड' क्या है?

उत्तर-फ्लैशबैक तकनीक की तरह ही 'फ्लेशफॉरवर्ड' भी पटकथा की या सिनेमा की एक तकनीक होती है जिसमें भविष्य में होने वाले किसी हादसे या घटना को पहले दिखाया जाता है। फ्लैशबैक तकनीक की तरह इसमें भी यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि फ्लेशफॉरवर्ड के बाद वर्तमान में आ जाना चाहिए।

प्रश्न-5 पटकथा लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है और क्यों?

उत्तर-पटकथा लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

- प्रत्येक दृश्य के साथ होने वाली घटना के समय का संकेत भी दिया जाना चाहिए।
- पात्रों की गतिविधियों के संकेत भी प्रत्येक दृश्य के प्रारंभ में देने चाहिए। जैसे-रजनी चपरासी को घूर रही है, चपरासी मज़े से स्टूल पर बैठा है। साहब मेज़ पर पेपरवेट घुमा रहा है। फिर घड़ी देखता है।
- किसी भी दृश्य का बँटवारा करते समय यह ध्यान रखा जाए कि किन आधारों पर हम दृश्य का बँटवारा कर रहे हैं।
- प्रत्येक दृश्य के साथ होने की सूचना देनी चाहिए।
- प्रत्येक दृश्य के साथ उस दृश्य के घटनास्थल का उललेख अवश्य करना चाहिए; जैसे-कमरा, बरामदा, पार्क, बस स्टैंड, हवाई अड्डा, सड़क आदि।
- पात्रों के संवाद बोलने के ढंग के निर्देश भी दिए जाने चाहिए; जैसे-रजनी (अपने में ही भुनभुनाते हुए)।
- प्रत्येक दृश्य के अंत में डिज़ॉल्व, फ़ेड आउट, कट टू जैसी जानकारी आवश्य देनी चाहिए। इससे निर्देशक, अडीटर आदि निर्माण कार्य में लगे हुए व्यक्तियों को बहुत सहायता मिलती है।

प्रश्न-6 नाटक और पटकथा में क्या अंतर है?

उत्तर-नाटक और पटकथा में मुख्य अंतर इस प्रकार हैं-

- नाटक के दृश्य लंबे होते हैं, पटकथा के छोटे।
- नाटक के घटनास्थल सीमित होते हैं, पटकथा के असीमित।
- नाटक की कथा का विकास 'लीनियर' मतलब एक-रेखीय होता है, जो एक ही दिशा में आगे बढ़ता है। जबकि सिनेमा में फ़्लैशबैक या फ़्लैशफ़ॉरवर्ड तकनीकों का इस्तेमाल करके आप घटनाक्रम को किसी भी रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।
- नाटक एक सजीव कला माध्यम है, जहाँ अभिनेता अपने ही जैसे जीवंत दर्शकों के सामने, अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। सब कुछ वहीं, उसी वक्त घट रहा होता है। जबकि सिनेमा या टेलीविजन में पूर्व रिकॉर्डेड छवियाँ एवं ध्वनियाँ होती हैं।
- नाटक का पूरा कार्य-व्यापार एक ही मंच पर एक निश्चित अवधि के दौरान घटित होता है जबकि फ़िल्म या टेलीविजन की शूटिंग अलग-अलग सेटों या लोकेशनों पर दो दिन से लेकर दो साल तक की

अवधि में की जा सकती है इसीलिए नाटक का कार्य-व्यापार, दृश्यों की संरचना और चरित्रों की संख्या आदि को सीमित रखना पड़ता है, लेकिन सिनेमा या टेलीविजन में ऐसा कोई बंधन नहीं होता।

प्रश्न-5 (4) स्ववृत लेखन और रोजगार संबंधी लेखन एवं शब्दकोश, सन्दर्भ ग्रंथो की उपयोगी विधि व परिचय पर आधारित प्रश्न

स्ववृत लेखन और रोजगार संबंधी लेखन

स्ववृत्त

स्ववृत्त-लेखन को अंग्रेज़ी में Bio-Data अथवा Resume भी कहा जाता है। 'स्व' का अर्थ है— अपने बारे में और 'वृत्त' संस्कृत शब्द है, यह विशेषण है तथा इसके अनेक अर्थों में से प्रमुख हैं-जिसका अस्तित्व रहा हो, घटित, पूरा किया हुआ आदि। वृत्त को गोलाकार भी कहा जाता है। अपने बारे में वर्तुलाकार अर्थात पूरी जानकारी देना ही स्ववृत्त-लेखन का अर्थ कहा जा सकता है। पारिभाषिक शब्दों में-

किसी व्यक्ति के बारे में किसी विशेष कारण, उद्देश्य या प्रयोजन को ध्यान में रखकर एक निश्चित, रोचक और व्यवस्थित क्रम में सूचनाओं को प्रस्तुत करना ही स्ववृत्त-लेखन कहा जाता है।

1. स्ववृत्त-लेखन का उद्देश्य

स्ववृत्त-लेखन विशेष प्रकार का लेखन है। इसका अलग ही प्रारूप होता है। इसमें व्यक्ति अपने बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएँ, आँकड़े, डाटा और अब तक किए गए कार्यों का सिलसिलेवार ढंग से ब्योरा प्रस्तुत करता है। इसकी आवश्यकता हर उस व्यक्ति को पड़ती है, जो किसी संस्था में नौकरी करना चाहता है या आवेदन करना चाहता है। बॉस, संस्था या पढ़ने वाला स्ववृत्त को देखकर यह निर्णय लेता है कि अमुक व्यक्ति उसके यहाँ काम करने लायक है या नहीं, उसकी शिक्षा-दीक्षा उस काम की गुणवत्ता को बढ़ाएगी या नहीं, संस्था को लाभ होगा या नहीं। इन सब बातों का निर्णय 'स्ववृत्त' से पचास प्रतिशत तो हो ही जाता है, बाकी साक्षात्कार पर निर्णय होता है।

स्ववृत्त की आवश्यकता केवल नौकरी पाने के लिए ही नहीं होती बल्कि संस्था का सदस्य बनने, चुनाव लड़ने, विधायक, M.P., प्राइवेट NGO के लिए, टिकट पाने या कहीं चयनित होने के लिए भी इसकी आवश्यकता पड़ती है। यहाँ तक कि पुरस्कार पाने, सम्मानित होने के लिए भी अपना स्ववृत्त देना होता है। पदमश्री, पद्मविभूषण सरीखे पुरस्कार, साहित्यिक पुरस्कार आदि के लिए भी स्ववृत्त देना पड़ता है। अधिकतर

स्ववृत्त पद-प्राप्ति हेतु 'आवेदन-पत्र' के साथ संलग्न किया जाता है। इसमें अब तक किए गए सभी कार्यों का विवरण होता है; जैसे-स्किल्स (कौशल) की सूची, अब तक किए गए काम (जॉब्स) , पद (पोज़िशन) , डिग्री, उपलब्धियाँ, पुरस्कार आदि। कक्षा दस में अति विस्तार की अपेक्षा तो नहीं है, परंतु इसके प्रारूप को जानना, लिखे जाने वाले महत्वपूर्ण बिंदु और भाषा प्रयोग की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

2. स्ववृत्त--लेखन के मुख्य बिंदु

नियोक्ता (नौकरी देने वाला) पर सकारात्मक प्रभाव डालने हेतु निम्न बिंदुओं का ध्यान रखना आवश्यक है

1. स्ववृत्त में सत्यता और ईमानदारी झलकनी चाहिए अर्थात कुछ भी झूठ नहीं लिखना चाहिए।

2. ज़रूरत से ज़्यादा बड़ा या बहुत छोटा नहीं होना चाहिए।

3. अपने बारे में बढ़ा-चढ़ाकर, बनावटी तथ्य नहीं देने चाहिए।

4.अपने कैरियर के विषय में सटीक एवं तथ्यात्मक सूचनाएँ देनी चाहिए।

5. प्रत्येक नौकरी के लिए अलग-अलग शैक्षणिक योग्यताकी ज़रूरत होती है, अतः नौकरी की अपेक्षाओं के आधार पर ही स्ववृत्त तैयार करना चाहिए। जैसे— डॉक्टर के पद के लिए अध्यापक या इंजीनियर का स्ववृत्त नहीं भेजा जा सकता।

3. स्ववृत्त की भाषा

1. भाषा शैली सटीक, सरल, स्पष्ट और समझ में आने वाली हो। कठिन शब्दों का प्रयोग न हो।

2. भाषा साहित्यिक, आलंकारिक, लच्छेदार, मुहावरेदार, घुमावदार नहीं होनी चाहिए।

3.कठोर, तीखे शब्दों का प्रयोग न करें। शब्द-चयन आपके दृष्टिकोण को भी स्पष्ट करता है।

4. व्याकरणिक त्रुटियाँ नहीं होनी चाहिए।

5. छोटे-छोटे वाक्य होने चाहिए।

6. विरामचिह्नों का यथायोग्य प्रयोग किया जाना चाहिए।

7. भाषा में वैयक्तिक स्पर्श नहीं होना चाहिए। तथ्य प्रधान सूचना होना आवश्यक है।

4. स्ववृत्त के मुख्य तत्व-

(i) **व्यक्तिगत परिचय**

आरंभ में अपना पूरा नाम, जन्म तिथि, पिता-माता का नाम, ई-मेल, दूरभाष, मोबाइल नंबर, निवास स्थान / शहर, राज्य, पिन कोड आदि का उल्लेख करना चाहिए।-

(ii) **शैक्षणिक योग्यता**

इसके अंतर्गत स्कूल से लेकर कॉलेज तक की गई पढ़ाई का क्रमवार विवरण दिया जाना चाहिए। विशेष योग्यता, प्रशिक्षण, अनुभव, उपलब्धियाँ, कीर्तिमान आदि का उल्लेख होना चाहिए।

(iii) **कार्येतर गतिविधियाँ/योग्यता/अभिरुचियाँ, पाठ्येत्तर क्रियाकलाप**

नियोक्ता आपकी रुचियों के विषय में भी जानना चाहता है, अतः पढ़ाई-लिखाई के अतिरिक्त बागबानी, संगीत, नृत्य, खेल आदि में उपलब्धियों के विषय में भी लिखा जाना चाहिए।

(iv) **संदर्भ**

प्रतिष्ठित, सम्मानित, ख्यात व्यक्तियों के संदर्भ देने चाहिए, जो आपके सगे-संबंधी, मित्र या परिचित हों। ये सभी आपकी योग्यता और क्षमताओं से परिचित होने चाहिए। नियोक्ता इनसे जानकारी लेते हैं। आवेदनकर्ता के व्यक्तित्व निर्धारण में ये संदर्भ बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं।

(v) **शैली**

स्ववृत्त को लिखने के बहुत तरीके हो सकते हैं। इसकी शैली अलग-अलग हो सकती है, परंतु शैक्षणिक योग्यता को सारणी (Table Format) में ही दिया जाना चाहिए। इसका प्रतिदर्श (Sample) आगे दिया जा रहा है।

(vi) **आत्मकथ्य**

उम्मीदवार संस्था के लिए क्यों उपयोगी हो सकता है, कैसे संस्था के विकास में अपना योगदान दे सकता है; अपनी उपयोगिता, सार्थकता, समर्पण, लगन आदि का उल्लेख अंत में 5-6 पंक्तियों में करना चाहिए।

स्ववृत्त का प्रारूप

दसवीं से बारहवीं कक्षा के छात्रों को बहुत विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है। नीचे प्रारूप दिया जा रहा है। बोर्ड के निर्देशानुसार परीक्षा में लिखते समय गोपनीयता का निर्वाह करना आवश्यक है; जैसे-पत्र में अपने नाम के स्थान पर क, ख, ग आदि लिखा जाता है, उसी प्रकार स्ववृत्त में भी किया जाना चाहिए। अध्यापक के पद हेतु भेजे जाने वाले स्ववृत्त का प्रारूप देखिए।

स्ववृत्त

व्यक्तिगत परिचय

नाम - क, ख, ग

जन्मतिथि - ×× 1995, आयु 27 वर्ष

घर का पता - 12/34, अ ब स गली, सीकर, राजस्थान-332027

पिता का नाम - श्री नरेन्द्र सिंह (माता का नाम भी दिया जा सकता है।)

दूरभाष - ×××××34 (मोबाइल)

ई-मेल - xyz@gmail.com

आधार - 123445677890

शैक्षणिक योग्यता

क्रम संख्या	परीक्षा का नाम	स्कूल / महाविद्यालय / विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	10 वीं	सुबोध स्कूल, सीकर	अंग्रेज़ी, हिंदी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान	प्रथम	90%
2.	12 वीं	गुरुकृपा उ. मा. वि., सीकर	अंग्रेज़ी, हिंदी, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र	प्रथम	95%
3.	बी.ए./बी.एससी/ बी. कॉम	राजस्थान विश्वविद्यालय	अंग्रेज़ी, अर्थशास्त्र, हिंदी	द्वितीय	70%
4.	एम.ए./एम.कॉम/ एम. एस. सी	राजस्थान विश्वविद्यालय	अर्थशास्त्र	प्रथम	80%
5.	बी.एड.	एम डी एस विश्वविद्यालय, अजमेर	अर्थशास्त्र, हिंदी	प्रथम	82%

अन्य संबंधित योग्यताएँ

1. अग्रेंजी, हिंदी, बोलने-लिखने-पढ़ने में निपुणता।

2. कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान। एम. एस. ऑफ़िस, नेट आदि।

3. फ्रेंच भाषा में डिप्लोमा।

अभिरुचियाँ

1. हिंदी-अंग्रेज़ी में सामाजिक, भाषिक, आर्थिक विषयों पर लेख अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित

2. प्रकृति से प्रेम, बागबानी, पर्यावरण, स्वच्छता के प्रति रुचि

3. क्रिकेट व बेडमिन्टन खेलना

उपलब्धियाँ-सम्मान

1. हिंदी अकादमी द्वारा 'सुवक्ता सम्मान' – 2017

2. महाविद्यालय बेडमिन्टन ट्रॉफ़ी-2019

3. राज्य सरकार द्वारा 'स्वच्छता सम्मान' – 2022

संदर्भ

1. डॉ.रवि फगेड़िया, सहायक प्राध्यापक, श्री कल्याण कला महाविद्यालय, सीकर

2. प्रो० पवन अहलुवालिया, प्रख्यात अर्थशास्त्री, जोधपुर

मैं विज्ञापित पद के लिए स्वयं को उपयोगी मानता हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि पूर्ण समर्पित भाव से काम करूँगा और संस्था की उन्नति के लिए सतत प्रयास करता रहूँगा।

धन्यवाद सहित

क ख ग

सीकर (राज.)

06-11-2022

ध्यातव्य-

1. A4 Sheet जैसा Border (बार्डर) अवश्य बनवाएँ। Box के अंदर ही लिखा जाए।

2. Box के ऊपर स्ववृत्त अवश्य लिखें।

3. अंत में धन्यवाद सहित नाम और तिथि अवश्य लिखें।

4. शैक्षणिक योग्यता में सारणी (तालिका) अवश्य लिखें।

5. पद की आवश्यकताओं के अनुरूप शैक्षणिक योग्यताओं का अध्ययन कर लें।

प्रश्न 1. स्ववृत से आप क्या समझते हैं? इसके कितने पक्ष होते हैं?

उत्तर-स्ववृत व्यक्ति के पहचान का एक माध्यम है। यह किसी नौकरी, पद आदि के आवेदन के साथ प्रस्तुत किया जाता है जिसमें व्यक्तिगत जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इसमें आवेदक का जन्म, शैक्षणिक योग्यता, कार्य-अनुभव आदि सभी समाहित होते हैं। इसके दो पक्ष होते हैं-

1. स्ववृत के पहले पक्ष में वह उम्मीदवार होता है, जिसको केंद्र में रखकर सूचनाएं संकलित की जाती है।

2. स्ववृत के दूसरे पक्ष में नियोक्ता या संस्था होती है, जिसके प्रयोजन को ध्यान में रखकर सूचनाएं एकत्रित की जाती हैं।

प्रश्न 2. उम्मीदवारों के चयन में स्ववृत किस प्रकार सहायक होता है?

उत्तर-उम्मीदवारों के चयन में स्ववृत की अहम भूमिका होती है। इसके माध्यम से उम्मीदवारों की गुणवत्ता का मूल्यांकन आसानी से किया जा सकता है। व्यक्ति के संक्षिप्त मूल्यांकन के आधार पर यह पता लगाया जा सकता है कि वह उस पद के लिए कितना योग्य है।

प्रश्न 3. एक अच्छे स्ववृत में क्या-क्या विशेषताएँ होती है?

उत्तर-एक अच्छे स्ववृत की निम्न विशेषताएँ होती हैं-

1. स्ववृत्त में सत्यता और ईमानदारी झलकनी चाहिए अर्थात कुछ भी झूठ नहीं लिखना चाहिए।

2. ज़रूरत से ज़्यादा बड़ा या बहुत छोटा नहीं होना चाहिए।

3.अपनी व्यक्तिगत जानकारी, शैक्षणिक योग्यता, कार्य-अनुभव के संबंध में में सटीक (To the Point) तथ्यात्मक सूचनाएँ (Factual Information) देनी चाहिए।

4. स्ववृत्त लिखते समय शुद्धता एवं स्पष्टता का ध्यान रखा जाना चाहिए।

प्रश्न 4. स्ववृत्त में अन्य योग्यताओं के अतिरिक्त कार्येत्तर गतिविधियों की चर्चा करना क्यों आवश्यक है?

उत्तर-जब एक ही पद के लिए अनेक आवेदन प्राप्त होते हैं, तब कार्येत्तर गतिविधियों का महत्त्व बढ़ जाता है। जिस उम्मीदवार के पास कार्येत्तर गतिविधियों का अनुभव अधिक होता है,उसके चयन की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिए स्ववृत्त लिखते समय कार्यकुशलता, कार्येत्तर गतिविधियों का उल्लेख किया जाना चाहिए।

प्रश्न 5. स्ववृत्त निर्माण कला में निपुण होना क्यों आवश्यक है?

उत्तर-स्ववृत्त निर्माण कला में निपुण होना आवश्यक है क्योंकि इससे व्यक्ति का मूल्यांकन होता है। जो व्यक्ति अपना मूल्यांकन अच्छे से करवाना चाहता है, अपनी अहमियत को प्रकट करना चाहता है उसे स्ववृत निर्माण में निपुण होना आवश्यक है।

आवेदन पत्र

आवेदक किसी पद हेतु जिस प्रारूप में आवेदन करता है, उसे 'आवेदन-पत्र' कहते हैं। सरकारी नौकरियों, यथा-लोक सेवा आयोग, बैंकिंग भर्ती बोर्ड, रेलवे भर्ती बोर्ड आदि में प्रपत्र का स्वरूप निर्धारित रहता है। आवेदक इसे निर्धारित शुल्क के साथ भरकर भेज देते हैं। आवेदन पत्र हमेशा उपयुक्त अधिकारी को ही भेजना चाहिए।

लेखन हेतु आवश्यक निर्देश-

आवेदन पत्र लिखते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान रखना चाहिए

1.**प्रारंभ**-सर्वप्रथम बाँई ओर सेवा में/प्रति लिखकर ठीक उसके नीचे अगली पंक्ति में प्राप्तकर्ता का नाम और पूरा विभागीय पता लिखा जाना चाहिए।

2.**दिनांक एवं विषय**-पता लिखने के पश्चात् दिनांक का उल्लेख किया जाना चाहिए तथा इसके बाद विषय के अंतर्गत अत्यंत संक्षेप में विषय का उल्लेख करना चाहिए।

3. **संबोधन**-तदनंतर 'महोदय / महोदया' संबोधन सूचक शब्द लिखकर अल्प विराम लगाना चाहिए।

4.**शिष्टाचार द्योतक शब्द**-अल्प विराम के ठीक नीचे अगली पंक्ति से मुख्य विषय प्रारंभ किया जाना चाहिए, लेकिन मुख्य विषय के प्रारंभ में 'प्रार्थना है', 'सविनय निवेदन है', 'विनम्र निवेदन है' आदि शिष्टाचार द्योतक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

5.**मुख्य विषय विस्तार**-आवेदन पत्र के मुख्य विषय के पूर्वार्द्ध में अपनी वर्तमान स्थिति या समस्या आदि का विवरण दिया जाना चाहिए और उत्तरार्द्ध में कार्य-संपादन हेतु आवश्यक कार्यवाही या आदेश दिए जाने के विषय में निवेदन किया जाना चाहिए। मुख्य विषय को सरल, स्पष्ट और प्रभावी भाषा में संक्षिप्त रूप में लिखना चाहिए।

6. **पत्र का समापन**-पत्र समापन नए अनुच्छेदों से किया जाना चाहिए; जैसे-'अतः आपसे प्रार्थना है कि मेरे निवेदन पर ध्यान देने की असीम अनुकंपा करेंगे', 'अतएव विनम्रतापूर्वक अनुरोध है कि मेरी प्रार्थना स्वीकार कर अनुगृहीत करेंगे, आदि वाक्यों के साथ सारांश सहित आवेदन को दुहरा दिया जाना चाहिए। पत्र समाप्ति पर सधन्यवाद, सम्मान सहित आदि शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

7. समापन सूचक शब्द-पत्र समाप्ति पर बाँयीं ओर भवदीय / भवदीया, प्रार्थी / प्रार्थिनी आदि समापन सूचक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

8.नाम और पता-समापन सूचक शब्द के नीचे आवेदनकर्ता को अपना स्पष्ट हस्ताक्षर करना चाहिए और हस्ताक्षर के नीचे कोष्ठक में पूरा नाम लिखकर, पदनाम और स्थाई पता लिखना चाहिए।

9.संलग्न-यदि आवेदन पत्र के साथ प्रमाण पत्र की कोई प्रति या प्रतियाँ संलग्न की गई हों, तो अंत में संलग्न या संलग्नक लिखकर संख्यावार उनका उल्लेख कर देना चाहिए।

आवेदन पत्र प्रारूप

प्रश्न-शिक्षा निदेशालय, राजस्थान को विभिन्न विषयों के प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों की आवश्यकता है। इस पद के लिए शिक्षा निदेशक को एक आवेदन पत्र लिखिए।

प्रति,

शिक्षा निदेशक,

शिक्षा निदेशालय,

राजस्थान।

विषय-प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों की भर्ती हेतु आवेदन पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मुझे 07 नवम्बर 2022 को प्रकाशित राजस्थान पत्रिका समाचार पत्र से ज्ञात हुआ कि शिक्षा निदेशालय को विभिन्न विषयों के स्नातकोत्तर अध्यापकों की आवश्यकता है। प्रार्थी भी स्वयं को एक उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत कर रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है

नाम - मनोज कुमार

पिता का नाम - श्री राम स्वरूप

जन्मतिथि - 25 दिसंबर, 1988

पता - सी/ 125 पिपराली रोड, सीकर (राज.)।

शैक्षणिक योग्यताएँ -

क्रम संख्या	परीक्षा का नाम	स्कूल / महाविद्यालय / विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	10 वीं	सुबोध स्कूल, सीकर	अंग्रेज़ी, हिंदी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान	प्रथम	90%
2.	12 वीं	गुरुकृपा उ. मा. वि., सीकर	अंग्रेज़ी, हिंदी, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र	प्रथम	95%
3.	बी.ए./बी.एससी/ बी. कॉम	राजस्थान विश्वविद्यालय	अंग्रेज़ी, अर्थशास्त्र, हिंदी	द्वितीय	70%

4.	एम.ए./एम.कॉम/ एम. एस. सी	राजस्थान विश्वविद्यालय	हिंदी	प्रथम	80%
5.	बी.एड.	एम डी एस विश्वविद्यालय, अजमेर	अर्थशास्त्र, हिंदी	प्रथम	82%

अनुभव-अभिनव पब्लिक स्कूल, सीकर में हिंदी स्नातकोत्तर शिक्षक पद पर एक साल अंशकालिक।

घोषणा-मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सेवा का अवसर मिलने पर पूरी निष्ठा एव ईमानदारी से कार्य करूँगा।

धन्यवाद

भवदीय

मनोज कुमार

दिनांक 07 नवम्बर 2022

संलग्न-शैक्षणिक एवं अनुभव प्रमाण पत्रों की छायांकित प्रति।

प्रश्न 1. आवेदन-पत्र से क्या आशय है? इसके उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-स्ववृत्त के साथ एक आवेदन-पत्र भी लिखा जाता है। आवेदन पत्र के साथ उम्मीदवार अपना स्ववृत्त लगाता है और उसे नियोक्ता के पास प्रेषित कर देता है। स्ववृत्त में सारी जानकारियाँ दे दी जाती हैं लेकिन फिर भी अलग से आवेदन-पत्र लिखने की आवश्यकता होती है, क्योंकि स्ववृत्त तो बना-बनाया रखा होता है जबकि आवेदन-पत्र विज्ञापन, पद एवं संबंधित संस्थान को लेकर लिखा जाता है।

आवेदन-पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लिखा जाता है

(i) आवेदन-पत्र से व्यक्ति अपनी नियुक्ति की इच्छा को प्रकट करता है, स्ववृत्त से नहीं।

(ii) वैयक्तिक स्पर्श के लिए।

(iii) भाषा ज्ञान एवं अभिव्यक्ति क्षमता का परिचय।

(iv) पद व संस्थान के प्रति गंभीरता का विश्वास जगाना।

(v) प्रत्येक विज्ञापन के लिए अलग।

प्रश्न 2. आवेदन-पत्र की विषय-वस्तु पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-आवेदन-पत्र की विषय-वस्तु में मुख्यत: चार भाग होते हैं-

1. **भूमिका**-पहले खंड में उम्मीदवार विज्ञापन तथा विज्ञापित पद पर अपनी उम्मीदवारी की इच्छा प्रकट करता है।

2. सक्षमता-दूसरे खंड में उम्मीदवार यह बताता है कि वह विज्ञापन में वर्णित योग्यताओं और आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। इससे उम्मीदवार की भाषा-शैली तथा अभिव्यक्ति की क्षमता का भी परिचय मिल जाता है।

3. पद एवं संस्थान के प्रति गंभीरता एवं अभिरुचि-तीसरे खंड में उम्मीदवार पद और संस्थान के प्रति अपनी गंभीरता और अभिरुचि को अभिव्यक्त करता है।

4. उपसंहार-आवेदन-पत्र का चौथा खंड उपसंहार होता है। इसमें आवेदन-पत्र की विषय-वस्तु का औपचारिक समापन होता है। एक व्यक्ति (उम्मीदवार/आवेदक) किसी संस्था में नौकरी पाने के लिए स्ववृत्त तैयार करता है। इसमें वह ईमानदारी से अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और अनुभवों को सीधी, सरल व सटीक भाषा में कंप्यूटर से मुद्रित कर सूचनाओं का अनुशासित प्रवाह बनाता है, लेकिन फिर भी संस्थान से बुलावा-पत्र

न आने पर सामान्यतः आवेदन-पत्र की कमी महसूस की जाती है। अतः उम्मीदवार को स्ववृत्त के साथ एक आवेदन-पत्र लिखना भी आवश्यक होता है।

शब्दकोश, सन्दर्भ ग्रंथों की उपयोग विधि

शब्दकोश का अर्थ एवं परिभाषा

शब्दकोश शब्दों का ऐसा संग्रह होता है जिसमें शब्दों की वर्तनी, उनकी व्युत्पत्ति, व्याकरण निर्देश, अर्थ, परिभाषा, प्रयोग और पदार्थ आदि का उल्लेख किया जाता है।

इसके लिए अंग्रेज़ी में 'डिक्शनरी' शब्द का प्रयोग किया जाता है। शब्दकोश को परिभाषित करते हुए भोलानाथ तिवारी कहते हैं, "कोश" ऐसे सन्दर्भ ग्रंथ को कहते हैं, जिसमें भाषा विशेष के शब्दादि का संग्रह हो या संग्रह के साथ उनके उसी या दूसरी या दोनों भाषाओं में अर्थ, पर्याय या विलोम हो या विशिष्ट अथवा विभिन्न विषयों की प्रविष्टियों की व्याख्या, नामों (स्थान, व्यक्ति) आदि का परिचय या कथनों आदि का संकलन क्रमबद्ध रूप में हो।"

इस प्रकार शब्दकोश वह ग्रन्थ है जिसमें शब्दों के व्याकरणिक निर्देश देने के साथ-साथ उनके अर्थ को भी स्पष्ट किया जाता है।

शब्दकोश की प्रयोग पद्धति

शब्दकोश में शब्दों का संकलन इस प्रकार किया जाता है कि पाठक उसका प्रयोग सहजतापूर्वक कर सकें। शब्दकोश प्रयोग के सामान्य नियम निम्नलिखित हैं

अक्षर क्रम शब्दकोश में शब्दों का संचयन भाषा के वर्णों के अनुक्रम में किया जाता है, इसलिए पाठक को उक्त भाषा की वर्णमाला का ज्ञान होना आवश्यक है। उदाहरणस्वरूप हिन्दी भाषा की वर्णमाला में स्वरों को व्यंजनों से पहले रखा जाता है, इसलिए शब्दकोश में भी उनका स्थान व्यंजनों से पूर्व होता है; यथा

स्वर-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ अं अः।

व्यंजन-क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य र,ल, व, श, ष, स, ह

हिन्दी में नव विकसित ध्वनियों 'ड़' व 'ढ़' तथा आगत ध्वनियों 'ख़', 'ज़', 'फ़' को क्रमशः 'ड' व 'ढ' तथा 'ख', 'ज', 'फ' के साथ रखा जाता है।

संयुक्त व्यंजन-'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ', 'श्र' को शब्दकोश में क्रमश: 'क', 'त', 'ज' तथा 'श' के साथ रखा जाता है।

'ङ', 'ञ' व 'ण' से कोई शब्द आरम्भ न होने के कारण इनका शब्दकोश में अलग से कोई अध्याय नहीं होता है। इसके अतिरिक्त अनुस्वार (अं) व अनुनासिक (अँ) ध्वनियों को शब्दकोश में वर्णों से पहले रखा जाता है। शब्दकोश में शब्दों को वर्णानुक्रम में संकलित करने के साथ-साथ शब्दों की संरचना में स्वाभाविक रूप से विद्यमान मात्राओं के क्रम का भी अनुपालन किया जाता है। मात्राओं का यह अनुक्रम प्रथम वर्ण के सन्दर्भ में ही नहीं, बल्कि दूसरे, तीसरे, चौथे आदि वर्णों के साथ भी बनाए रखा जाता है।

व्याकरणिक कोटि संबंधी संकेत-शब्दकोश में प्रत्येक शब्द की व्याकरणिक कोटि (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण आदि) से संबंधित संकेत दिए जाते हैं, जैसे

पु.	पुल्लिंग	प्रवि.	प्रविशेषण	स.क्रि.	सकर्मक क्रिया	बहु.	बहुवचन
स्त्री.	स्त्रीलिंग	प्र.	प्रत्यय	अ. क्रि.	अकर्मक क्रिया	अ.	अव्यय
उभय.	उभयलिंग	उप.	उपसर्ग	. क्रि.वि	क्रिया विशेषण	संबो.	संबोधन कारक
सर्व.	सर्वनाम	नि.	निपात	विस्म.	विस्मयादिबोधक	बो.	बोलचाल
वि.	विशेषण	यो.	योजक	पर.	परसर्ग		

व्याकरणिक कोटि सम्बन्धी संकेत

भाषिक स्रोत सम्बन्धी संकेत-इस संकेतों द्वारा शब्दकोश में संकलित किए गए शब्दों के विषय में बताया जाता है कि वे कहाँ से ग्रहण किए गए हैं; यथा

भाषिक स्रोत सम्बन्धी संकेत

तु .	तुर्की	फ्रां.	फ्रांसीसी	रु.	रूसी	सं	संस्कृत
अ.	अरबी	अं.	अंग्रेजी	पु .	पुर्तगाली	फा .	फारसी

शब्दकोश का महत्त्व

वर्तमान समय में शब्दकोश का अत्यन्त महत्त्व है। इसके माध्यम से हमें अनेक शब्दों के अर्थ, सरलता से ज्ञात हो जाते हैं। साथ ही ये हमें किसी भी शब्द के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। इसका सबसे अधिक महत्त्व यह है कि सभी शब्द हमें एक ही कोश (पुस्तक) में मिल जाते हैं और हमें जगह-जगह नहीं भटकना पड़ता।

महत्वपूर्ण प्रश्न

1. शब्दकोश क्या है?

उत्तर-शब्दकोश के अंदर किसी एक भाषा में प्रयोग होने वाले सभी शब्दों को इकट्ठा करके प्रस्तुत किया जाता है। शब्दकोश में शब्दों की व्युत्पत्ति, स्रोत, लिंग के साथ-साथ उसके शब्द रूपों और विभिन्न संदर्भपरक अर्थों की जानकारी होती है। हिंदी शब्दकोश में शब्द हिंदी वर्णमाला के अनुसार दिए होते हैं। शब्दकोश का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें किसी भी प्रकार के शब्द का विस्तृत विश्लेषण आसानी से मिल जाता है।

2. संदर्भ ग्रंथ क्या है?

उत्तर-जिस प्रकार शब्दों के अर्थ शब्दकोश में दिए होते हैं, उसी प्रकार संदर्भ ग्रंथ में मानव द्वारा संचित ज्ञान को संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किया जाता है। संदर्भ ग्रंथों से किसी भी विषय की जानकारी तुरंत प्राप्त की जा सकती है। संदर्भ ग्रंथों में जानकारियों का क्रम भी शब्दकोश' के नियमों के अनुसार ही होता है। जब भी किसी विषय पर हमें तुरंत जानकारी चाहिए होती है, तब ये ग्रंथ हमारे काम आते हैं।

3. विश्वज्ञान कोश व साहित्य कोश को समझाइए।

उत्तर-विश्वज्ञान कोश-इसमें पूरे विश्व की जानकारियों का संग्रह होता है। मनुष्य के ज्ञान व रुचि से संबंधित सभी रचनाएँ व जानकारियाँ विश्वज्ञान कोश से संक्षिप्त रूप में सहजता से प्राप्त की जा सकती हैं। विश्वज्ञान कोश में भी शब्दकोश के नियमों को अपनाया जाता है।

साहित्य कोश-साहित्य कोश में साहित्यिक विषयों से संबंधित सभी जानकारियाँ उपलब्ध होती हैं। इसमें सभी साहित्यिक रचनाओं के साथ-साथ उनके लेखकों आदि के नाम क्रमानुसार लिखे होते हैं।

4. चरित्र कोश किसे कहते हैं?

उत्तर-जिस कोश में साहित्य, संस्कृति, विज्ञान आदि क्षेत्रों के महान व्यक्तियों के व्यक्तित्व व कृतित्व की जानकारी उपलब्ध होती है, उसे ही चरित्र कोश कहते हैं। इसमें सभी विचारकों, साहित्यकारों, वैज्ञानिकों आदि का संक्षिप्त परिचय व उपलब्धियाँ, क्रमानुसार दिया होता है। चरित्र कोश को 'व्यक्ति कोश' भी कहते हैं। इसमें भी शब्दकोश के नियमों का ही पालन किया जाता है।

5. नीचे दिए गए शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखिए-

परीक्षण, परिक्रमण, परिक्रम, विश्वामित्र, हिमाश्रया, हृदयंगम, ग्वालिन, घंटा, योगासन, घटक, इच्छित, इक्षु, अंत:, अंत, अकंपित, उदाहरण, उद्योग, जिज्ञासु।

उत्तर-इन शब्दों का शब्दकोशीय क्रम इस प्रकार है

अंतः, अंत, अंकपित, इक्षु इच्छित, उदाहरण, उद्योग, ग्वालिन, घंटा, घटक, जिज्ञासु, परिक्रम, परिक्रमण, परीक्षण, योगासन, विश्वामित्र, हिमाश्रया, हृदयंगम।

6. नीचे दिए गए शब्दों को शब्दकोश के अनुसार क्रम में लिखिए।

कैलाश, निरंजन, अंगद, अतः, पैर, क्षत्रिय, मनसिज, वंदना, वाणी, खंजन, गरिष्ठ, वरिष्ठ सान्निध्य, कैवल्य, क्षमा, दीपक, उत्तिष्ठ। "

उत्तर-इन शब्दों का शब्दकोशीय क्रम इस प्रकार है

अंगद, अतः, उत्तिष्ठ, कैलाश, कैवल्य, क्षत्रिय, क्षमा, खंजन, गरिष्ठ, दीपक, निरंजन, पैर, मनसिज, वंदना, वरिष्ठ, वाणी, सान्निध्य

प्रश्न-6 (1) काव्य खंड पर आधारित लघूत्तर प्रश्न

1. कबीर

प्रस्तुत काव्यांश पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 1 से लिया गया है। यह जयदेव सिंह एवं वासुदेव सिंह द्वारा संकलित संपादित कबीर वांग्मय खंड 2 से लिया गया है।जिसके रचयिता कबीरदास जी हैं। प्रस्तुत पद में कबीरदास जगत और ब्रह्म दोनों को अलग न मानते हुए उन्हें एक ही परम तत्व अर्थात परमात्मा की सत्ता के अंतर्गत स्वीकार करते हैं। इसके लिए वे कई उदाहरण देते हैं। कबीर कहते हैं कि उन्होंने तो यह जान लिया है कि ईश्वर एक ही है। उन्होंने ईश्वर के अद्वैत रूप को पहचान लिया है। जो लोग उस परम तत्त्व के आत्मा-परमात्मा, जीव-ब्रह्म आदि अलग-अलग अस्तित्वों को मानते हैं उन्होंने वास्तव में, परमात्मा के मर्म को नहीं जाना है ऐसे लोगों के लिए यह संसार नरक के समान है। कबीर ईश्वर की अद्वैतता का प्रमाण देते हुए कहते हैं कि संसार में एक जैसी हवा बहती है एक जैसा पानी है तथा एक ही ज्योति अर्थात् प्राणतत्त्व सब में समाया हुआ है। वे कहते हैं जिस प्रकार कुम्हार एक ही तरह की मिट्टी से सभी बर्तन बनाता है चाहे उनका आकार प्रकार भिन्न-भिन्न हो, उसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्य के शरीर का निर्माण भी एक जैसे तत्त्वों से ही किया है भले ही उनके आकार-प्रकार या स्वरूप भिन्न-भिन्न दिखाई देते हों। कबीर अपने मत की पुष्टि करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार एक बढ़ई लकड़ी को तो काट सकता है लेकिन उस लकड़ी में निहित अग्नि अर्थात् प्राणतत्त्व को वह नहीं काट सकता, उसी प्रकार परमात्मा के सभी मनुष्यों में समाये होने के कारण आत्मा अमर एवं अकाट्य है। कबीर कहते हैं कि मनुष्य संसार के माया-जाल में फँसा हुआ है। वे उसे समझाते हुए कहते हैं कि हे मनुष्य! तू इस झूठी माया पर क्यों अहंकार करता है? तुम्हें किसी बात पर अहंकार नहीं करना चाहिए, यह अहंकार निरर्थक है। अंत में, प्रभु के प्रेम से सराबोर कबीर कहते हैं कि जो मनुष्य इस माया अर्थात् सांसारिक आकर्षणों के भ्रम से मुक्त हो जाते हैं वे निर्भय रहते हैं।उन्हें किसी प्रकार का कोई भय नहीं सताता है। ठीक, इसी प्रकार कबीर भी अब निर्भय हो गए हैं, उन्हें अब कोई भय या डर नहीं है, क्योंकि उनके हृदय में प्रभु के लिए प्रेम पूर्ण रूप से है। कबीर ने तात्विक रूप से आत्मा और परमात्मा को एक ही माना है।एक-एक में यमक अलंकार है (एक का अर्थ परमात्मा, एक का अर्थ – एक) कबीर ने उदाहरणों का सुंदर प्रयोग किया है। पद की भाषा सधुक्कड़ी है।

प्रश्न 1. कबीर परमात्मा के किस स्वरूप में आस्था रखते है और वह स्वरूप किस प्रकार का है?

उत्तर-कबीर परमात्मा के अद्वैत स्वारूप में आस्था रखते है और वह स्वरूप निर्गुण निराकार ईश्वर का है।

प्रश्न 2.कबीर ने किन लोगों को नरक का अधिकारी माना है?

उत्तर-कबीर ने उन लोगों को नरक का अधिकारी माना है जो लोग परमात्मा को एक नहीं, दो मानते है।

प्रश्न-3. कबीर ने किस प्रकार सिद्ध किया है कि ईश्वर एक है?

उत्तर-कबीर ने कहा कि जिस प्रकार विश्व में एक ही वायु और जल है उसी प्रकार संपूर्ण संसार में एक ही परम ज्योति व्याप्त है.सभी मानव एक ही मिट्टी से ब्रह्मा द्वारा निर्मित है।

प्रश्न-4. कबीर के अनुसार प्रभु को जानने के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर-कबीर के अनुसार प्रभु को जानने के लिए मिथ्या दंभ,माया –मोह अर्थात सुखों को त्यागना आवश्यक है।

प्रश्न-5. "कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कबीर का मानना है कि परमात्मा एक है क्योंकि-

- सब जगह एक ही पवन और एक ही जल है।
- सारा जगत एक ही ज्योति से प्रकाशित है।
- वह परमात्मा लकड़ी में अग्नि की तरह रहता है,जोकि मूलत: एक है। सारे रूपों में उसी एक का निवास है।

प्रश्न-6. कबीर के अनुसार मानव शरीर का निर्माण किन पाँच तत्वों से हुआ है?

उत्तर-मानव शरीर का निर्माण अग्नि,आकाश,जल, वायु और पृथ्वी नामक पाँच तत्वों से बना हुआ है।

प्रश्न-7. कबीर ने किन-किन पाखंडों का उल्लेख किया है?

उत्तर-कबीर ने मूर्ति पूजने,माला पहनने,छापा –तिलक धारण करने,कब्र-पूजने,साखी-सबद गाने,धार्मिक ग्रंथों का पाठ करने, यात्रा करने आदि पाखंडों का उल्लेख किया है।

प्रश्न 8."जैसे बाढी काष्ठ ही काटे, अगिनि न काटै कोई।

सब घटि अंतर तूही, व्यापक धरै सरूपै सोई।।"

इस कथन के आधार पर बताइए कि कबीर के दृष्टि में ईश्वर का क्या स्वरूप है?

उत्तर: कबीर की दृष्टि में ईश्वर, अविनाशी रूप में विद्यमान है। कबीर के अनुसार, सभी जीवो के अंदर, परमात्मा का वास, आत्मा के स्वरूप में है। उदाहरण स्वरूप, जैसे लकड़ी के अंदर अग्नि होती है। ईश्वर सर्वव्यापक, अजर-अमर और अविनाशी है। बढ़ई, लकड़ी को अनेक भागों में चीर सकता है परंतु उस में व्याप्त अग्नि को नष्ट नहीं कर सकता है। ठीक इसी प्रकार, शरीर नश्वर है परंतु आत्मा अमर है।

प्रश्न 9. कबीर ने खुद को दीवाना क्यों कहा है?

उत्तर: इस संदर्भ में दीवाना का अर्थ, "पागल" है। कबीर ने ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को प्राप्त कर लिया है और कबीर ईश्वर की भक्ति में लीन है। जहाँ तक बाहरी दुनिया को देखा जाए, वह अभी भी ईश्वर को ढूंढ ही रहे हैं। कबीर की भक्ति आम विचारधारा से भिन्न है अत: कबीर स्वयं को दीवाना कहते हैं।

प्रश्न 10. कबीर ने संसार को बौराया हुआ क्यों कहा है?

उत्तर. कबीर, इस संसार को पागल (बौराया हुआ) कहते हैं। वह ऐसा इसलिए कहते हैं, क्योंकि इस संसार में सत्य बोलने वालों को लोग मारते हैं और झूठ बोलने वालों की तारीफ करते हैं। कबीर, राम-रहीम की श्रेष्ठता को एक मुद्दा बनाकर लड़ने वाले लोगों की निंदा करते हैं। कबीर की दृष्टि में, भगवान वही है, जो सहज रूप से भक्ति स्वीकार करता है। भगवान को पाने के लिए आडंबर की जरूरत नहीं है। कबीर की इन्हीं बातों को

सुनकर, समाज उनकी निंदा करता है। समाज पाखंडियों के पाखंड को ही सत्य मानता है। इन्हीं सब कारणों से, कबीर को यह संसार पागल लगता है।

2. मीरा

- ✓ **जन्म:** सन् 1498, कुड़की गाँव (मारवाड़ रियासत) **मृत्यु**: सन् 1546
- ✓ **प्रमुख रचनाएँ:-**'मीरापदावली', 'नरसीजी-रो-माहेरो'
- ✓ **साहित्यिक विशेषताएँ:**

मीरा सगुण धारा की महत्वपूर्ण भक्त कवयित्री थीं। कृष्ण की उपासिका होने के कारण उनकी कविता में सगुण भक्ति मुख्य रूप से मौजूद है, लेकिन निर्गुण भक्ति का प्रभाव भी मिलता है। संत कवि रैदास उनके गुरु माने जाते हैं। बचपन से ही उनके मन में कृष्ण-भक्ति की भावना जन्म ले चुकी थी। इसलिए वे कृष्ण को ही अपना आराध्य और पति मानती रहीं।

मीरा ने देश में दूर-दूर तक यात्राएँ कीं। चित्तौड़ राजघराने में अनेक कष्ट उठाने के बाद मीरा वापस मेड़ता आ गई। यहाँ से उन्होंने कृष्ण की लीला भूमि वृंदावन की यात्रा की। जीवन के अंतिम दिनों में वे द्वारका चली गई। माना जाता है कि वहीं रणछोड़ दास जी की मंदिर की मूर्ति में वे समाहित हो गई।

उन्होंने लोकलाज और कुल की मर्यादा के नाम पर लगाए गए सामाजिक और वैचारिक बंधनों का हमेशा विरोध किया। पर्दा प्रथा का भी पालन नहीं किया तथा मंदिर में सार्वजनिक रूप से नाचने-गाने में कभी हिचक महसूस नहीं की। मीरा सत्संग (महापुरुषों के साथ संवाद) को ज्ञान प्राप्ति का माध्यम मानती थीं और ज्ञान को मुक्ति का साधन। निंदा से वे कभी विचलित नहीं हुई। वे उस युग के रूढ़िग्रस्त समाज में स्त्री-मुक्ति की आवाज बनकर उभरी।

भाषा-शैली-मीरा की कविता में प्रेम की गंभीर अभिव्यंजना है। उसमें विरह की वेदना है और मिलन का उल्लास भी। इनकी कविता में सादगी व सरलता है। इन्होंने मुक्तक गेय पदों की रचना की। उनके पद लोक व शास्त्रीय संगीत दोनों क्षेत्रों में आज भी लोकप्रिय हैं। इनकी भाषा मूलत: राजस्थानी है तथा कहीं-कहीं ब्रजभाषा का प्रभाव है। कृष्ण के प्रेम की दीवानी मीरा पर सूफियों के प्रभाव को भी देखा जा सकता है। मीरा की कविता के मूल में दर्द है।

पाठ का सारांश-पहले पद में मीरा ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्यता व्यक्त की है। वह भक्ति में लगे लोगों को देखकर खुश होती है तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों को देखकर दुखी होती है। वे कहती हैं कि मोर मुकुटधारी गिरिधर कृष्ण ही उसके स्वामी हैं। कृष्ण-भक्ति में उसने अपने कुल की मर्यादा भी भुला दी है। संतों के पास बैठकर उसने लोकलाज खो दी है। आँसुओं से सींचकर उसने कृष्ण प्रेम रूपी बेल बोयी है। अब इसमें आनंद के फल लगने लगे हैं। उसने दही से घी निकालकर छाछ छोड़ दिया। संसार की लोलुपता देखकर मीरा रो पड़ती हैं और कृष्ण से अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं। प्रस्तुत पद नरोत्तम दास स्वामी द्वारा संकलित-संपादित मीराँ मुक्तावली से हैं।

प्रश्न 1: मीरा कृष्ण की उपासना किस रूप में करती हैं? वह रूप कैसा है?

उत्तर-मीरा कृष्ण की उपासना पति के रूप में करती हैं। उसका रूप मन मोहने वाला है। वे पर्वत को धारण करने वाले हैं। उनके सिर पर मोरपंखी मुकुट है। इस रूप को अपना मानकर वे सारे संसार से विमुख हो गई हैं।

प्रश्न 2: भाव व शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) अंसुवन जल सींचि-सीचि, प्रेम-बेलि बोयी
अब त बेलि फैलि गई आणंद-फल होयी

(ख) दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी

उत्तर-(क) भाव-सौंदर्य : इस पद में भक्ति की चरम सीमा है। विरह के आँसुओं से मीरा ने कृष्ण-प्रेम की बेल बोयी है। अब यह बेल बड़ी हो गई है और आनंद-रूपी फल मिलने का समय आ गया है।

शिल्प-सौंदर्य:

1. 'सींचि-सींचि' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।
2. रूपक अलंकार है-प्रेम-बेलि, आणंद-फल, अंसुवन जल
3. राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है।
4. अनुप्रास अलंकार है-बेलि बोयी।
5. संगीतात्मकता है।

(ख) भाव-सौंदर्य: इन काव्य पंक्तियों में कवयित्री ने दूध की मथानी से भक्ति रूपी घी निकाल लिया तथा सांसारिक सुखों को छाछ के समान छोड़ दिया। इस प्रकार उन्होंने भक्ति की महिमा को व्यक्त किया है।

शिल्प-सौंदर्य:

1. अन्योक्ति अलंकार है।
2. राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है।
3. प्रतीकात्मकता है-'घी' भक्ति का तथा 'छाछ" सांसारिकता का प्रतीक है।
4. दधि, घृत आदि तत्सम शब्द हैं।
5. संगीतात्मकता है।
6. गेयता है।

प्रश्न 3: मीरा जगत को देखकर रोती क्यों हैं?

उत्तर-संसार के सभी लोग संसारी मायाजाल में फंसकर ईश्वर (कृष्ण) से दूर हो गए हैं। उनका सारा जीवन व्यर्थ जा रहा है। इस सारहीन जीवन-शैली को देखकर मीरा को रोना आता है। लोग दुर्लभ मानव जन्म को ईश्वर भक्ति में नहीं लगाते। इसलिए संसार की दुर्दशा पर मीरा को रोना आ रहा है।

प्रश्न 4: 'मेरे तो गिरधर गोपाल'-पद का भाव स्पष्ट करें।

उत्तर-इस पद में मीरा ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्यता व्यक्त की है तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों के प्रति दुख प्रकट किया है। वे कहती हैं कि मोर मुकुटधारी गिरिधर कृष्ण ही उसके स्वामी हैं। कृष्ण-भक्ति में उसने अपने कुल की मर्यादा भी भुला दी है। संतों के पास बैठकर उसने लोकलाज खो दी है। आँसुओं से सींचकर उसने कृष्ण प्रेम रूपी बेल बोयी है। अब इसमें आनंद के फल लगने लगे हैं। उसने दही से घी निकालकर छाछ छोड़ दी। संसार की लोलुपता देखकर मीरा रो पड़ती हैं। वे कृष्ण से अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं।

प्रश्न 5: मीरा अपना सर्वस्व किसे मानती है?

उत्तर-मीरा अपना सर्वस्व कृष्ण को मानती है।

प्रश्न 6: मीरा कृष्ण प्रेम के बारे में क्या बताती है?

उत्तर-मीरा ने विरह के आँसुओं से कृष्ण-प्रेम की बेल बोयी है। अब यह बेल बड़ी हो गई है और आनंद-रूपी फल मिलने का समय आ गया है।

प्रश्न 7: मीरा की ख़ुशी और गम का क्या कारण है?

उत्तर-वह भक्ति में लगे लोगों को देखकर खुश होती है तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों को देखकर दुखी होती है।

प्रश्न 8: कृष्ण को अपनाने के लिए मीरा ने क्या-क्या किया?

उत्तर-कृष्ण को पाने के लिए मीरा ने कृष्ण के प्रति अपने आपको पूर्णतया समर्पित कर दिया। वह सांसारिकता को त्याग देती है। लोगों के अनुसार उसने परिवार की मर्यादाएं तथा लो(क) लाज का लिहाज नहीं रखा।

3. घर की याद-भवानीप्रसाद मिश्र

जीवन परिचय-जन्म 1913 ई. से मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गाँव में। मृत्यु-सन् 1985 में।

पुरस्कार-इन्हें साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश शासन का शिखर सम्मान, दिल्ली प्रशासन का गालिब पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनकी साहित्य व समाज सेवा के मद्देनजर भारत सरकार ने इन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया।

प्रमुख रचनाएँ-सतपुड़ा के जंगल, सन्नाटा, गीतफरोश, चकित है दुख, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, अनाम तुम आते हो, इदं न मम् आदि।

काव्यगत विशेषताएँ-भवानी प्रसाद मिश्र के साहित्य में सहजता सर्वत्र विद्यमान है। साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन में इनकी भागीदारी महत्वपूर्ण है। गाँधीवाद में इनका अखंड विश्वास था। इन्होंने गांधी वांगमय के हिंदी खंडों का संपादन कर कविता और गांधी जी के बीच सेतु का काम किया। इनकी कविता हिंदी की सहज लय की कविता है। इस सहजता का संबंध गांधी के चरखे की लय से भी जुड़ता है इसलिए इन्हें कविता का गाँधी भी कहा गया है। इनमें बोलचाल के गद्यात्मक से लगते वाक्य विन्यास को ही कविता में बदल देने की अद्‌भुत क्षमता है। इसी कारण इनकी कविता सहज और लोक के करीब है।

सारांश-इस कविता में घर के सदस्यों की आत्मीयता का मार्मिक चित्रण किया गया है। कवि को जेल प्रवास के दौरान विस्थापन की पीड़ा सालती है। कवि के स्मृति-संसार में उसके परिजन एकएक कर शामिल होते चले जाते हैं। घर की अवधारणा की सार्थक और मार्मिक याद कविता की केंद्रीय संवेदना है। वह घर के सभी सदस्यों को याद करता है। उसे अपने भाइयों व बहनों की याद आती है। कवि को अपनी अनपढ़, व्याकुल, परंतु स्नेहमयी माँ की याद आती है।

कवि को अपने पिता की याद आती है जिनमें बुढ़ापे का कोई लक्षण नहीं है। वे अभी भी दौड़ सकते हैं। मौत या शेर का सामना करने से नहीं डरते। उनकी वाणी में जोश है। वे प्रतिदिन गीता का पाठ और व्यायाम करते हैं। जब वे पाँचवें बेटे को न पाकर रो पड़े होंगे तो माँ ने उन्हें समझाया होगा। कवि सावन के महीने से निवेदन करता है कि तुम खूब बरसो, लेकिन मेरे माता-पिता को मेरे लिए दुखी न होने देना। उन्हें मेरा संदेश देना कि मैं जेल में भी खुश हूँ। मुझे खाने-पीने की दिक्कत नहीं है। मैं यहाँ स्वस्थ हूँ। उन्हें मेरी सच्चाई मत बताना कि मैं निराश, दुखी व असमंजस में हूँ। हे सावन! तुम उन्हें मेरा संदेश देकर धैर्य बँधाना। इस प्रकार कवि ने अपने घर की अवधारणा का चित्र प्रस्तुत किया है।

विशेष-सावन महीने की घनघोर बारिश में कवि की भावुकता का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। पारिवारिक सदस्यों के प्रति कवि का लगाव व्यक्त हुआ है। जेल में बंद होने के कारण उसकी विवशता प्रकट हुई है। माता-पिता और भाई-बहन का सहज स्नेह उसे व्याकुल कर देता है। कविता में संयुक्त परिवार का आदर्श रूप प्रस्तुत है। अनुप्रास, यमक, उपमा व पुनरुक्ति प्रकाश अलंकारों की छटा दर्शनीय है। वात्सल्य, वीर एवं शांत रस का प्रयोग। दृश्य बिंब है। बोलचाल के शब्दों से युक्त खड़ीबोली का प्रयोग हुआ है।

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 पानी के रात भर गिरने और प्राण-मन के घिरने में परस्पर क्या संबंध है?

उत्तर-'घर की याद' का आरंभ इसी पंक्ति से होता है कि 'आज पानी गिर रहा है'। इसी बात को कवि कई बार अलग-अलग ढंग से कहता है 'बहुत पानी गिर रहा है, रात भर गिरता रहा है'। भाव यह है कि सावन की झड़ी के साथ-साथ 'घर की यादों' के कारण कवि का मन भर आया है। प्राणों से प्यारे अपने घर को, एक-एक परिजन को, माता-पिता को याद करके उसकी आँखों से भी पानी गिर रहा है। वह कहता है कि "घर नजर में तिर रहा है'। बादलों से वर्षा हो रही है और घर की यादों से घिरे मन का बोझ कवि की आँखों से अश्रुओ के रूप में बरस रहा है।

प्रश्न-2 मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को परिताप का घर क्यों कहा है?

उत्तर-कवि ने बहन के लिए घर को परिताप का घर कहा है। मायके में बहन का आना ही बहन के मन में उत्साह एवं खुशी भर देता है। वह खुशी से अपने परिवार वालों से मिलने के लिए आती है। वह भाई-बहनों के साथ बिताए हुए क्षणों को याद करती है। लेकिन कवि के अनुसार जब घर पहुँचकर बहन को पता चलता

है कि उसका एक भाई जेल में है तो वह बहुत दुखी होती है। इस कारण कवि ने घर को परिताप का घर अर्थात दुखों का घर कहा है।

प्रश्न-3 कविता में पिता के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को उकेरा गया है?

उत्तर-कवि अपने पिता के विषय में बताता है कि उनमें वृद्धावस्था का कोई लक्षण दिखाई नहीं देता है। वे आज भी बहुत फुर्तीले हैं और दौड़ लगा सकते हैं। खिलखिलाकर हँसते हैं। वे इतने निडर है कि मौत के सामने भी नहीं हिचकिचाते। उनमें इतना साहस है कि वे शेर के सामने भी भयभीत नहीं होगे। उनकी आवाज बादलों की गर्जना के समान है। हर काम को तूफान की रफ़्तार से करने की उनमें अदभुत क्षमता है। वे नियमित गीता का पाठ और व्यायाम करते हैं। वे बहुत ही भावुक एवं संवेदनशील हैं। उनमें राष्ट्र-प्रेम की भावना है।

प्रश्न-4 निम्नलिखित पंक्तियों में 'बस' शब्द के प्रयोग की विशेषता बताइए

मैं मजे में हूँ सही है
घर नहीं हूँ बस यही है।
किंतु यह बस बड़ा बस है।
इसी बस से सब विरस है।

उत्तर-कवि ने इस शब्द का लाक्षणिक प्रयोग किया है। पहली बार के प्रयोग का अर्थ है कि वह केवल घर पर ही नहीं है। दूसरे प्रयोग का अर्थ है कि वह घर से दूर रहने के लिए विवश है। तीसरा प्रयोग उसकी लाचारी व विवशता को दर्शाता है। चौथे बस से कवि के मन की व्यथा प्रकट होती है जिसके कारण उसके सारे सुख छिन गए हैं।

प्रश्न-5 कवि अपने परिजनों से क्या छिपाना चाहता है?

उत्तर-कवि स्वाधीनता आंदोलन का वह सेनानी है जो जेल में दी जाने वाली यातनाओं की जानकारी अपने परिवार के लोगों को नहीं देना चाहता है क्योंकि इससे वे दुखी होंगे। कवि कहता है कि हे सावन! उन्हें मत बताना कि मैं उदास रहता हूँ, मैं ठीक से सो भी नहीं पाता और मनुष्य से भागता हूँ। उन्हें यह सब मत बताना कि जेल की यातनाओं से में मौन हो गया हूँ और कुछ नहीं बोलता। मैं स्वयं यह नहीं समझ पा रहा कि मैं कौन हूँ?

प्रश्न-6 "हाय रे, ऐसा ना कहना.....पांचवे को वे न तरसें।" इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-प्रस्तुत पंक्तियों में कवि सावन से विनती करते हैं कि वह उसकी जेल की वास्तविक स्थिति को उसके परिवारजनों को न बताए तथा ऐसा कुछ न कहें जिससे उनको कुछ शक हो जाए। उनको यह न बताए कि कवि रात भर जागता है, आदमी से डरने लग गया है, अब वह किसी के खिलाफ़ आवाज नहीं उठाता है तथा चुपचाप कष्ट सहन कर लेता है। वह हर समय दुखों में खोया रहता है तथा खुद को नहीं पहचानता है। अंत में वे सावन से कहते हैं कि वह अपना कार्य करे, जैसे अपनी वर्षा से इस धरती को सींच कर प्रसन्न करना उसका दायित्व है वैसे ही उनके घर को भी प्रसन्नता से भर दे तथा उन्हें कवि की कमी का एहसास न होने दे।

प्रश्न-7 कवि द्वारा सावन के माध्यम से झूठा संदेश भिजवाना क्या दर्शाता है?

उत्तर-कवि द्वारा सावन को दूत बनाकर अपने माता-पिता को झूठा संदेश भिजवाना यह दर्शाता है कि कवि अपने माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों को दुखी नहीं करना चाहता। उसके माता-पिता दुखी न हो, इसीलिए वह अपने दुख और संताप को छिपाने के लिए तैयार है।

प्रश्न-8 कविता पढ़ने के पश्चात् कवि की माँ के बारे में क्या छवि उभरती है?

उत्तर-कविता पढ़ने के पश्चात् हमें यह पता चलता है कि कवि की माँ भले ही अनपढ़ है, लेकिन उनकी सोच बहुत ऊँची है। उन्हें इस बात का दुख अवश्य हो रहा है कि उनका एक बेटा उनसे दूर कारावास में है, परंतु उन्हें इस बात पर गर्व भी है कि उनके बेटे ने देशहित में स्वयं को समर्पित कर दिया है। यदि कवि ऐसा न करता, तो उसे लज्जित होना पड़ता। मुश्किल समय में जब कवि के पिता भावुक होकर रो पड़ते हैं, तब वही

उन्हें धीरज बंधाती हैं और पूरे परिवार को संभालने का प्रयास करती हैं। इससे कवि की माँ की सहनशीलता, धैर्यता व एक सच्ची देशभक्त की छवि उभरती है।

4. चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती-त्रिलोचन

जीवन परिचय-जन्म उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले के चिरानी पट्टी में सन् 1917 में।मृत्यु-9 दिसंबर, 2007 में।

इनका मूल नाम वासुदेव सिंह था। ये हिंदी साहित्य में प्रगतिशील काव्यधारा के प्रमुख कवि के रूप में प्रतिष्ठित रहे। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में साहित्य रचना की। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों के आधार पर इन्हें साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार ने इन्हें महात्मा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित किया। शलाका सम्मान भी इनकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

रचनाएँ-धरती. गुलाब और बुलबुल, दिगंत, ताप के ताये हुए दिन, शब्द, उस जनपद का कवि हूँ, अरघान, तुम्हें सौंपता हूँ, चैती, अमोला, मेरा घर, जीने की कला (काव्य) ; देशकाल, रोजनामचा, काव्य और अर्थबोध, मुक्तिबोध की कविताएँ (गद्य) ; इसके अलावा हिंदी के अनेक कोशों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान।

काव्यगत विशेषताएँ-त्रिलोचन बहुभाषाविज्ञ थे। ये रागात्मक संयम व लयात्मक अनुशासन वाले कवि थे। इसी कारण इनके नाम के साथी शास्त्री' जुड़ गया, लेकिन यह शास्त्रीयता इनकी कविता के लिए बोझ नहीं बनी। ये जीवन में निहित मंद लय के कवि थे। प्रबल आवेग और त्वरा की अपेक्षा इनके यहाँ काफी कुछ स्थिर है। इनकी भाषा छायावादी रूमानियत से मुक्त है तथा इनका काव्य ठाठ ठेठ गाँव की जमीन से जुड़ा हुआ है। ये हिंदी में सॉनेट (अंग्रेजी छद) को स्थापित करने वाले कवि के रूप में भी जाने जाते हैं। कवि बोलचाल की भाषा को चुटीला और नाटकीय बनाकर कविताओं को नया आयाम देता है। कविता की प्रस्तुति का अंदाज कुछ ऐसा है कि वस्तु रूप की प्रस्तुति का भेद नहीं रहता।

सारांश-'चम्पा काले-काले अच्छर नहीं चीन्हती' कविता धरती संग्रह में संकलित है। यह पलायन के लोक अनुभवों को मार्मिकता से अभिव्यक्त करती है। इससे अक्षरों के लिए काले-काले विशेषण का प्रयोग किया गया है जो एक और शिक्षा-व्यवस्था के अंतर्विरोधों को उजागर करता है तो दूसरी ओर उस दारुण यथार्थ से भी हमारा परिचय कराता है जहाँ आर्थिक मजबूरियों के चलते घर टूटते हैं। काव्य नायिका चंपा अनजाने ही उस शोषक व्यवस्था के प्रतिपक्ष में खड़ी हो जाती है जहाँ भविष्य को लेकर उसके मन में अनजान खतरा है।

काव्य की नायिका चंपा अक्षरों को नहीं पहचानती। जब कवि पढ़ता है तो वह चुपचाप पास खड़ी होकर आश्चर्य से सुनती है। वह सुंदर ग्वाले की एक लड़की है तथा पशु चराने का काम करती है। वह अच्छी व चंचल है। कभी वह कवि की कलम चुरा लेती है तो कभी कागज। इससे कवि परेशान हो जाता है। चंपा कहती है कि दिन भर कागज पर कुछ लिखते रहते हो क्या यह काम अच्छा है? कवि हँस देता है। एक दिन कवि ने चम्पा से पढ़ने-लिखने के लिए कहा। उन्होंने इसे गाँधी बाबा की इच्छा बताया। तब चंपा ने कहा कि वह नहीं पढ़ेगी। गाँधी जी बहुत अच्छे हैं, वे बच्चों को पढ़ाई की बात कैसे कहेंगे? कवि ने कहा कि पढ़ना अच्छा है। शादी के बाद तुम ससुराल जाओगी। तुम्हारा पति काम के लिए कलकता जाएगा। अगर तुम नहीं पढ़ी तो उसके पत्र कैसे पढ़ोगी या अपना संदेशा उसे कैसे भेजोगी? इस पर चम्पा ने कहा कि तुम पढ़े-लिखे झूठे हो। वह शादी नहीं करेगी। यदि शादी करेगी तो अपने पति को कभी कलकत्ता नहीं जाने देगी। वह कलकत्ता पर भारी विपदा आने की कामना करेगी।

विशेष-इस कविता में कवि ने पलायन के लोक अनुभवों का बड़ी ही मार्मिकता से चित्रण किया है। गाँव में साक्षारता के प्रति उदासीनता को चंपा के माध्यम से मुखरित किया गया है। ग्रामीण जीवन का चित्रण है। देशज शब्दावली युक्त सहज व सरल खड़ी बोली है। अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश एवं प्रश्नालंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। लाक्षणिक एवं व्यंग्य प्रधान संवाद शैली का मनोरम प्रयोग किया गया है।

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 चंपा ने ऐसा क्यों कहा कि कलकता पर बजर गिरे?

उत्तर-चंपा नहीं चाहती कि उसका पति उसे छोड़कर कहीं दूर महानगर में पैसा कमाने के लिए जाए। कवि ने उसे बताया कि कलकता बहुत दूर है यहाँ लोग धन कमाने जाते हैं। चंपा पति से बिछड़ना नहीं चाहती है इसलिए वह कलकते का अस्तित्व ही समाप्त कर देना चाहती है ताकि उसका पति उसके पास रहे। इसलिए यह कहती है कि कलकते पर बजर गिरे।

प्रश्न-2 चंपा को इस पर क्यों विश्वास नहीं होता कि गाँधी बाबा ने पढ़ने-लिखने की बात कही होगी?

उत्तर-चम्पा के मन में यह बात बैठी हुई है कि शिक्षित व्यक्ति रोजगार की तलाश में अपना घर-बार छोड़कर शहरों में चला जाता है। इस कारण से परिवार टूटते हैं। गांधी जी ग्रामीण जीवन को उन्नत बनाना चाहते थे। ये लोगों को भलाई की बात करते थे। अतः वह गाँधी जी द्वारा पढ़ने-लिखने की बात कहने पर विश्वास नहीं करती। इससे लोगों का भला नहीं होता। यह गांधी जी के विश्वास के विपरीत है।

प्रश्न-3 कवि ने चंपा की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर-चम्पा एक छोटी बालिका है जो काले-काले अक्षरों को नहीं पहचानती। कवि के अनुसार वह चंचल और नटखट है। दिनभर पशुओं को चराने का काम करती है। वह बहुत शरारत करती है। उसे पढ़ना पसंद नहीं है। वह नहीं चाहती कि उसका पति रोजगार कि तलाश में उससे दूर जाए। वह नगरीय संस्कृति को नष्ट कर देना चाहती है।

प्रश्न-4 आपके विचार में चंपा में ऐसा क्यों कहा होगा कि मैं तो नहीं पढ़ूँगी?

उत्तर-चम्पा का विश्वास है कि पढ़-लिखकर व्यक्ति अपने परिवार को छोड़कर परदेश जाकर रहने लगता है। इससे घर बिखर जाते हैं। शिक्षित होकर लोग चालाक, घमंडी व कपटी हो जाते हैं। वे परिवार को भूल जाते हैं। महानगरों में जाने वाले लोगों के परिवार बिछोह की पीड़ा सहते हैं। इसलिए उसने कहा होगा कि वह नहीं पढ़ेगी।

प्रश्न-5. इस कविता में पूर्वी प्रदेशों की स्त्रियों की किस विडंबनात्मक स्थिति का वर्णन हुआ है

उत्तर-इस कविता में पूर्वी प्रदेशों की स्त्रियों की व्यथा को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। रोजगार की तलाश में युवक कलकत्ता जैसे बड़े शहरों में जाते हैं और वहीं के होकर रह जाते हैं। पीछे उनकी स्त्रियाँ व परिवार के लोग अकेले रह जाते हैं। स्त्रियाँ अनपढ़ होती हैं, अतः वे पति की चिट्ठी भी नहीं पढ़ पाती और न अपना संदेश भेज पाती हैं। उनका जीवन पिछड़ा रहता है तथा वे पति का वियोग सहन करने को विवश रहती हैं।

प्रश्न-6 चंपा को क्या अचरज होता है तथा क्यों?

उत्तर-चम्पा पढ़ना-लिखना नहीं जानती है। जब कवि पढ़ना शुरू करता है तो चम्पा को हैरानी होती है कि इन अक्षरों से स्वर कैसे निकलते हैं। वह अक्षर व ध्वनि के संबंध को समझ नहीं पाती। उसे नहीं पता कि लिखे अक्षर ध्वनि को व्यक्त करने का ही एक रूप है। निरक्षर होने के कारण वह यह बात समझ नहीं पाती।

प्रश्न-7 चंपा लेखक के पढ़ने-लिखने को 'कागद गोदना' क्यों कहती है?

उत्तर-चंपा निरक्षर है। वह पढ़ने-लिखने को व्यर्थ का कार्य समझती है, इसलिए उसे लेखक का हमेशा पढ़ते-लिखते रहना अच्छा नहीं लगता। अपनी इसी मानसिकता के कारण वह लेखक के पढ़ने-लिखने को 'कागद गोदना' कहती है।

प्रश्न-8 'तुम पढ़-लिखकर इतने झूठे हो' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 'तुम पढ़-लिखकर इतने झूठे हो' प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि त्रिलोचन ने शिक्षित लोगों पर व्यंग्य किया है। कवि ने इस पंक्ति के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है आधुनिक दौर में शिक्षित लोगों में छल-कपट, वैर-भाव तथा शोषण की मानसिकता पैदा हो गई है। अपने निहित स्वार्थों को पूरा करने के लिए शिक्षित लोग हर प्रकार की नीति अपनाते हैं।

प्रश्न-9 कविता की नायिका चंपा किसका प्रतिनिधित्व करती है?

उत्तर-कविता की नायिका चंपा देश की ग्रामीण निरक्षर लड़कियों का प्रतिनिधित्व करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियाँ प्रायः उपेक्षा की शिकार होती हैं। उनकी पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान नहीं दिया जाता है। लड़कियाँ पढ़ाई-लिखाई को निरर्थक समझकर पढ़ने का अवसर त्याग देती हैं। वे अपना पूरा जीवन घर-गृहस्थी के कामों में लगा देती हैं।

प्रश्न-10 लेखक चंपा को पढ़ने के लिए किस प्रकार प्रेरित करता है?

उत्तर-लेखक चंपा को पढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए कहता है कि पढ़ाई कठिन समय में काम आती है। गांधी बाबा की भी यही इच्छा है कि सभी लोग पढ़े-लिखें। साथ ही कवि चंपा को समझाता है कि एक न एक दिन तुम्हारी शादी होगी और तुम्हारा पति रोज़गार की तलाश में कलकत्ता जाएगा। तब उस समय वह पत्र के माध्यम से ही अपना संदेश भेज सकेगी और पति के पत्र पढ़ सकेगी, लेकिन ऐसा तो तभी होगा, जब वह पढ़ना सीख लेगी।

5. गज़ल-दुष्यंत कुमार

यह उनके गज़ल संग्रह साये में धूप से ली गई है। गज़ल एक ऐसी विधा है, जिसमें सभी शेर अपने-आप में मुकम्मिल और स्वतंत्र होते हैं। उन्हें किसी क्रम-व्यवस्था के तहत पढ़े जाने की दरकार नहीं रहती। इसके बावजूद दो चीजें ऐसी हैं, जो इन शेरों को आपस में गूँथकर एक रचना की शक्ल देती हैं-एक, रूप के स्तर पर तुक का निर्वाह और दो, अंतर्वस्तु के स्तर पर मिजाज का निर्वाह। जैसा कि आप देखेंगे, यहाँ पहले शेर की दोनों पंक्तियों का तुक मिलता है और उसके बाद सभी शेरों की दूसरी पंक्ति में उस तुक का निर्वाह होता है। आम तौर पर गज़ल के शेरों में केंद्रीय भाव का होना जरूरी नहीं है लेकिन यहाँ पूरी गज़ल एक खास मनःस्थिति में लिखी गई जान पड़ती है। राजनीति और समाज में जो कुछ चल रहा है, उसे खारिज करने और विकल्प की तलाश को मान्यता देने का भाव एक तरह से इस गज़ल का केंद्रीय सूत्र बन गया है। इस प्रकार दुष्यंत की यह गज़ल हिंदी गज़ल का सुंदर नमूना प्रस्तुत करती है।

कविता का भावार्थ या सारांश-कवि राजनेताओं के झूठे वायदों पर व्यंग्य करता है कि जब चुनाव का दौर आता है तो नेतागण हर घर को सुविधाओं से परिपूर्ण कर देने का वायदा करते हैं, परतु स्थिति यह है कि पूरे शहर के लिए एक भी सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाती है। कवि का मानना है कि बड़े-बड़े पेड़ों के साये में भी धूप लगती है अर्थात् बड़ी-बड़ी योजनाओं के बाद भी वंचित वर्ग वंचित ही रह जाता है। कवि इस तरह की व्यवस्था को हमेशा के लिए छोड़कर जाना ही ठीक समझता है। वह उन लोगों के जिंदगी के सफर को आसान बताता है जो परिस्थिति के अनुसार स्वयं को बदल लेते हैं, जो हमेशा संतोष धारण किए हुए रहते हैं और कभी भी अपने हक के लिए आवाज़ नहीं उठाते। मनुष्य को खुदा न मिले तो कोई बात नहीं पर उसे अपना सपना नहीं छोड़ना चाहिए। सत्ता में बैठे लोगों को विश्वास है कि आम आदमी कभी भी अपने अधिकारों के लिए आंदोलन करने वाला या आवाज़ उठाने वाला नहीं है। लेकिन कवि कवि चाहता है कि उसकी आवाज़ में असर पैदा हो और ये लोग अपने हक के लिए लड़ने के लिए आगे बढ़ें। शासक या सत्ता में बैठे लोग कवि (शायर) की आवाज़ को दबाने की कोशिश करते हैं, क्योंकि वह उसकी सत्ता को चुनौती देता है। कवि गज़ल के अंत में कहता है कि या तो हम अपने अधिकारों या सुविधाओं को प्राप्त करते हुए सुखपूर्वक रहें या फिर इन अधिकारों को प्राप्त करने के लिए लड़ाई करते हुए मार जाएं।

यहाँ गज़ल में चिराग, कमीज़, खुदा, गुलमोहर आदि शब्द अपने अधिकार और सुख-सुविधाओं के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

प्रश्न-1 गज़ल के आखिरी शेर में गुलमोहर की चर्चा हुई है। क्या उसका आशय एक खास तरह के फूलदार वृक्ष से है या उसमें कोई सांकेतिक अर्थ निहित है?

उत्तर-गज़ल के अंतिम शेर में गुलमोहर का शाब्दिक अर्थ तो एक खास फूलदार वृक्ष ही है, परन्तु सांकेतिक अर्थ उस स्थिति से है जहाँ सभी लोगों को उनके अधिकार या हिस्से के सुख एवं सुविधाएं प्राप्त होते हैं और बगीचे से भी तात्पर्य ऐसी व्यवस्था से है जो प्रत्येक व्यक्ति को उसके हिस्से के सुख और सुविधाएं देने में सक्षम हो।

प्रश्न-2 पहले शेर में 'चिराग' शब्द एक बार बहवचन में आया है और दूसरी बार एकवचन में। अर्थ एवं काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से इसका क्या महत्व है?

उत्तर-पहले शेर में पहले 'चिराग' शब्द का बहवचन 'चिरागाँ' का प्रयोग हआ है। इसका प्रतीकात्मक अर्थ है, ढेर सारी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाना। दूसरी बार यह एकवचन में प्रयुक्त हआ है। इसमें इसका अर्थ है- थोड़ी सी भी सुविधाएँ मिलना। दोनों का अपना महत्व है। बहवचन के रूप में यह नेताओं के झूठे वादों की ओर संकेत करता है, जबकि दूसरा रूप यथार्थ को दर्शाता है। यहाँ यह भाव है कि पूरी सुख-सुविधाएं तो मिलना दूर की बात है यहाँ तो थोड़ी भी प्राप्त नहीं हो पा रही हैं।

प्रश्न-3 "ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिए"-यहाँ दुष्यंत का इशारा किस तरह के लोगों की ओर है?

उत्तर-इस शेर में उन लोगों की ओर इशारा किया गया है जो अभावग्रस्त है वे अपने अधिकारों के लिए आवाज़ नहीं उठाते और अपने हिस्से की सुख-सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए वर्तमान व्यवस्था का विरोध नहीं करते। जो कुछ इन्हें मिल जाए, ये लोग उसी में संतुष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार की गूंगी-बाहरी व्यवस्थाओं के लिए ये लोग बहुत अच्छे होते हैं क्योंकि इनसे उन्हें कोई खतरा नहीं होता।

प्रश्न-4 आशय स्पष्ट करें –

तेरा निजाम है सिल दे जबान शायर की,
ये एहतियात जरूरी है इस बहर के लिए।

उत्तर-इसमें कवि ने रचनाकारों और शासकों के संबंध के बारे में बताया है। शायर सत्ता के खिलाफ लोगों को जागरूक करता है। इससे सत्ता में बैठे शासकों को क्रांति का खतरा रहता है। वे स्वयं को बचाने के लिए शायरों की जबान अर्थात् कविताओं पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। जैसे छंद के लिए बंधन की सावधानी जरूरी होती है, उसी तरह शासकों को भी अपनी सत्ता कायम रखने के लिए रचनाकारों की आवाज़ दबाना जरूरी है। अप्रत्यक्ष रूप से कवि सत्ता में बैठे लोगों को चुनौती दे रहा है।

5. हे भूख! मत मचल, हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर-अक्क महादेवी

जीवन परिचय - अक्क महादेवी शैव आंदोलन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण कवयित्री थीं। इनका जन्म कर्नाटक के उडुतरी गाँव जिला-शिवमोगा में 12वीं सदी में हुआ। इनके आराध्य चन्नमल्लिकार्जुन देव अर्थात् भगवान शिव थे। अक्क के साथ बड़ी संख्या में स्त्रियाँ शैव आदोलन से जुड़ीं जिनमें अधिकतर निचले तबकों से थीं और अपने संघर्ष व यातना को कविता के रूप में अभिव्यक्ति दी। इस प्रकार अक्क महादेवी की कविता पूरे भारतीय साहित्य में क्रांतिकारी चेतना का पहला सर्जनात्मक दस्तावेज हैं और संपूर्ण स्त्रीवादी आंदोलन के लिए एक अजस्व प्रेरणास्रोत भी।

रचनाएँ- इनकी रचना हिंदी में 'वचन- सौरभ' के नाम से तथा अंग्रेजी में स्पीकिंग ऑफ शिवा (सं.- ए. के. रामानुजन) के नाम से है।

सारांश-अक्क महादेवी द्वारा रचित दो वचन पाठ्यक्रम में लिए गए हैं। दोनों वचनों का अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद केदारनाथ सिंह ने किया है।

प्रथम वचन में इंद्रियों पर नियंत्रण का संदेश दिया गया है। यह उपदेशात्मक न होकर प्रेम-भरा मनुहार है। वे चाहती कि मनुष्य को अपनी भूख प्यास, नींद आदि वृत्तियों व क्रोध, मोह, लोभ, अहम, ईर्ष्या आदि भावों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। वह लोगों को समझाती हैं कि इंद्रियों को वश में करने से ही शिव की प्राप्ति संभव है।

दूसरे वचन में एक भक्त का ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण है। चन्नमल्लिकार्जुन की अनन्य भक्त अक्क महादेवी उनकी अनुकंपा के लिए हर भौतिक वस्तु से अपनी झोली खाली रखना चाहती हैं। वे ऐसी निस्पृह स्थिति की कामना करती हैं जिससे उनका स्व या अहंकार पूरी तरह से नष्ट हो जाए। वह ईश्वर को जूही के फूल के समान बताती हैं और कामना करती हैं कि ईश्वर उनसे ऐसे काम करवाए जिनसे उसका अहंकार समाप्त

हो जाए। जब कोई उसे कुछ देना चाहे तो वह गिर जाए और उसे कोई कुत्ता छीनकर ले जाए। कवयित्री का एकमात्र लक्ष्य अपने परमात्मा की प्राप्ति है।

विशेष-कवयित्री ने प्रभु-भक्ति के लिए इंद्रियों के नियंत्रण पर बल दिया है। भावों एवं वृत्तियों को मानवीय पात्रों के समान प्रस्तुत किया गया है। शांत रस एवं भक्ति रस का परिपाक हुआ है। अनुप्रास, मानवीकरण, उपमा एवं उदाहरण अलंकारों की छटा दर्शनीय है। पदों की रचना मूलतः कन्नड़ भाषा में है। किन्तु यहाँ इसका हिन्दी अनुवाद है। पदों में संबोधन एवं उपदेशात्मकता शैली का प्रयोग किया गया है। प्रसाद गुण संपन्न खड़ीबोली के माध्यम से सहज अभिव्यक्ति हुई है।

प्रश्न-1 'लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती हैं इसके संदर्भ में अपने तर्क दीजिए।

उत्तर-ज्ञानेंद्रियाँ मानव शरीर का महत्त्वपूर्ण अंग हैं जो अनुभव का साधन हैं। यदि हमारा लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति है तो यह एक ऐसी साधना के समान है जिसमें इंद्रियाँ बाधक हैं। इस समय भूख, प्यास, लालसा, कामना, प्रेम आदि का अनुभव हमें लक्ष्य से भटका देता है। इन सबका अनुभव इंद्रियाँ करवाती हैं।

प्रश्न-2 'ओ चराचर! मत चूक अवसर' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-इस पंक्ति में अक्क महादेवी का कहना है कि प्राणियों ने जो जीवन प्राप्त किया है, उसे यदि वे शिव की भक्ति में लगाएँ तो उनका कल्याण हो जाएगा। समय बीत जाने के बाद कुछ नहीं मिलता। जीव इंद्रियों के वश में होकर सांसारिक मोह-माया में उलझा रहता है। वह इन चक्करों में उलझा रहा तो ईश्वर प्राप्ति का अवसर चूक जाएगा।

प्रश्न-3 ईश्वर के लिए किस दृष्टांत का प्रयोग किया गया है? ईश्वर और उसके साम्य का आधार बताइए।

उत्तर-अक्क महादेवी ने दूसरे वचन में ईश्वर को जूही के फूल के समान बताया है। इन दोनों में साम्य का आधार यह है कि जिस प्रकार जूही का फूल श्वेत, सात्विक, कोमल और सुगंधयुक्त है, उसी प्रकार ईश्वर भी सात्विक और कोमल हृदय वाला है। जिस प्रकार जूही का पुष्प अपनी सुगंध बिखेरने में भेदभाव नहीं करता, उसी प्रकार ईश्वर भी सब पर अपनी कृपा समान रूप से बरसाते हैं।

प्रश्न-4 अपना घर से क्या तात्पर्य है? इसे भूलने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर-'अपना घर' से तात्पर्य है-मोहमाया से युक्त जीवन। व्यक्ति इस घर में सभी से लगाव महसूस करता है। वह इसे बनाने व बचाने के लिए निन्यानवे के फेर में पड़ा रहता है। कवयित्री इसे भूलने की बात कहती है, क्योंकि घर की मोह-ममता के साथ ईश्वर भक्ति नहीं की जा सकती। घर का मोह छूटने के बाद हर संबंध समाप्त हो जाता है और मनुष्य एकाग्रचित होकर भगवान में ध्यान लगा सकता है।

प्रश्न-5 दूसरे वचन में ईश्वर से क्या कामना की गई है और क्यों?

उत्तर-दूसरे वचन में अक्क महादेवी ईश्वर से कहती हैं कि मुझसे भीख मँगवाओ। मेरी यह दशा कर दो कि भीख में मिली वस्तु भी हाथ से गिर जाए और कुत्ता उसे झपट कर खा जाए। यह सब कामना करने के पीछे कवयित्री की स्वयं के अहंकार को शून्य बनाने की बात छिपी है। संसार द्वारा उपेक्षित और तिरस्कृत व्यवहार से हम ईश्वर की अनन्य भक्ति की ओर प्रवृत्त होते हैं।

प्रश्न 6 'झोली फैलाऊँ और न मिले भीख' पंक्ति के माध्यम से कवयित्री क्या कहना चाहती है?

उत्तर – इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री ईश्वर से यह प्रार्थना करती है कि यदि वह अपना अहं त्यागकर भीख माँग रही हो और अगर उसमें अहंकार का थोड़ा-सा भी अंश शेष हो तो उसे भीख न मिले। कवयित्री इसके माध्यम से यह कहना चाहती है कि जब तक मेरे भीतर से अहंकार का भाव पूर्णरूप से समाप्त नहीं हो जाता, तब तक तुम ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना जिनमें मेरा अहं समाप्त हो।

8. सबसे खतरनाक-अवतार सिंह संधू 'पाश'

जीवन परिचय - कवि 'पाश' का मूल नाम अवतार सिंह संधू है। इनका जन्म 1950 ई. में पंजाब राज्य के जालंधर जिले के तलवंडी सलेम गाँव में हुआ। इनका संबंध मध्यवर्गीय किसान परिवार से था। इस कारण इनकी स्नातक तक की शिक्षा अनियमित तरीके से हुई। इन्होंने जनचेतना फैलाने के लिए अनेक साहित्यिकसांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया और सिआड़ हेमज्योति, हॉक, एंटी-47 जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। ये कुछ समय तक अमेरिका में रहे। इनकी मृत्यु 1988 ई. में हुई।

रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-लौह कथा, उड़दें बाजां मगर, साडै समिया बिच, लड़ेंगे साथी (पंजाबी) बीच का रास्ता नहीं होता, लहू है कि तब भी गाता है (हिंदी अनुवाद)

सारांश-सबसे खतरनाक कविता पंजाबी भाषा से अनूदित है। यह दिनोंदिन अधिकाधिक नृशंस और क्रूर होती जा रही दुनिया की विद्रूपताओं के चित्रण के साथ उस खौफनाक स्थिति की ओर इशारा करती है जहाँ प्रतिकूलताओं से जूझने के संकल्प क्षीण पड़ते जा रहे हैं। पथरायी आँखों-सी तटस्थता से कवि की असहमति है। कवि इस प्रतिकूलता की तरफ विशेष संकेत करता है जहाँ आत्मा के सवाल बेमानी हो जाते हैं। जड़ स्थितियों को बदलने की प्यास के मर जाने और बेहतर भविष्य के सपनों के गुम हो जाने को कवि सबसे खतरनाक स्थिति मानता है।

कवि का मानना है कि मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ की मुट्ठी इत्यादि खतरनाक स्थितियाँ तो हैं, परंतु अन्य बातों से कम खतरनाक हैं। बिना कारण पकड़े जाना, कपट के वातावरण में सच्ची बात का गुम होना या विवशतावश समय गुजार लेना या गरीबी में दिन काटना आदि बुरी दशाएँ हैं, परंतु खतरनाक नहीं हैं। कवि कहता है कि सबसे खतरनाक वह स्थिति है जब व्यक्ति में मुर्दों जैसी शांति भर जाती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति की विरोध-शक्ति समाप्त हो जाती है। जब व्यक्ति बँधे-बँधाए ढर्रे पर चलता है तो उसके सपने समाप्त हो जाते हैं। समय की गति का रुकना भी खतरनाक दशा है, क्योंकि व्यक्ति समय के अनुसार बदल नहीं पाता है।

मनुष्य की संवेदनशून्यता भी खतरनाक है। अन्याय के प्रति विद्रोह की भावना समाप्त होना भी गलत है। जब गीत भी मरसिए पढ़कर सुनाया जाने लगे और गुंडे आतंकित व्यक्तियों के दरवाजों पर अकड़ दिखाए तो वह भी खतरनाक होता है। उल्लू व गीदड़ों की आवाज युक्त रात भी खतरनाक है। कवि कहता है कि जब मनुष्य आत्मा की आवाज को अनसुना कर देता है और वह संवेदनशून्य हो जाता है तब सबसे खतरनाक स्थिति होती है। उक्त स्थितियों की तुलना में मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी व लोभ की दशा अधिक खतरनाक नहीं है।

विशेष-कवि ने 'सबसे खतरनाक' स्थिति को स्पष्ट करने के लिए विशेष रीति का निर्वाह किया है। संवेदनहीनता, निराशा एवं निष्क्रियता को सबसे खतरनाक बताया गया है। परिस्थितियों की भयावहता के सहारे सबसे खतरनाक दशाओं को स्पष्ट किया गया है। प्रतीकात्मक एवं बिम्बात्मक शब्दों के प्रयोग में नवीनता है। अनुप्रास, उपमा, रूपक एवं मानवीकरण अलंकारों का प्रयोग दर्शनीय है। कथन में जोश व आवेश होने के कारण ओज गुण विद्यमान है। छंद मुक्त काव्य-शैली में भावों की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। तत्सम-तद्भव शब्दों से युक्त प्रवाहपूर्ण सहज सरल खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 1 'सबसे खतरनाक' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर – प्रस्तुत कविता प्रतिदिन क्रूर व निर्दयी होती जा रही दुनिया की विद्रूपताओं के चित्रण के साथ उस खतरनाक स्थिति की ओर संकेत करती है, जहाँ विपरीत परिस्थितियों से जूझने के संकल्प क्षीण पड़ते जा रहे हैं। कवि ऐसी ही परिस्थितियों की तरफ विशेष संकेत करता है,जहाँ आत्मा के सवाल बेमानी हो जाते हैं। जड़ स्थितियों को बदलने की प्यास के मर जाने और बेहतर भविष्य के सपनों के खो जाने को कवि ने सबसे खतरनाक स्थिति माना है।

प्रश्न-2 मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी-लोभ को कवि ने सबसे खतरनाक क्यों नहीं माना?

उत्तर-कवि ने मेहनत की लूट, पुलिस की मार, गद्दारी लोभ को सबसे खतरनाक नहीं माना क्योंकि इन सब स्थितियों में आशा व उम्मीद की किरण बची रहती है। इनका प्रभाव सीमित होता है। इन क्रियाओं में प्रतिरोधक क्षमता बनी रहती है। इन स्थितियों को कभी भी बदला जा सकता है।

प्रश्न-3 'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार दोहराए जाने से कविता में क्या असर पैदा हुआ?

उत्तर-'सबसे खतरनाक' शब्द के बार-बार दोहराए जाने से पाठकों का ध्यान खतरनाक बातों की तरफ अधिक आकर्षित होता है। वे समाज की स्थितियों पर गंभीरता से विचार करते हैं। यह शब्द उस भयंकरता की ओर संकेत करता है जो समाज को निर्जीव बना रही है। इसके बार-बार प्रयोग से कथ्य प्रभावशाली ढंग से व्यक्त हुआ है।

प्रश्न-4 कवि ने कविता में कई बातों को 'बुरा है' न कहकर 'बुरा तो है' कहा है। 'तो' के प्रयोग से कथन की भंगिमा में क्या बदलाव आया है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कवि ने बैठे बिठाए पकड़े जाना, सहमी चुप में जकडे जाने, कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाने आदि को बुरा तो है कहा है। 'बुरा' शब्द प्रत्यक्ष आरोप लगाता है, परंतु 'तो' लगाने से सारा जोर 'तो' पर चला जाता है। इसका अर्थ है कि स्थितियाँ खराब अवश्य है, परंतु उनमें सुधार की गुंजाइश है। साथ ही, यह चेतावनी भी देता है कि अगर इन्हें नहीं सुधारा गया तो भविष्य में हालात और बिगड़ेंगे।

प्रश्न-5 'मुर्दा शांति से भर जाना और हमारे सपनों का मर जाना इनको सबसे खतरनाक माना गया है। आपकी दृष्टि में इन बातों में परस्पर क्या संगति है और ये क्यों सबसे खतरनाक है?

उत्तर-'मुर्दा शांति से भर जाना ' का अर्थ है-निष्क्रिय होना, जड़ हो जाना या प्रतिक्रिया शून्य हो जाना। ऐसी स्थिति बहुत खतरनाक है। ऐसा व्यक्ति सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष नहीं कर पाता। उसके मन में किसी तरह की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। वह जीवित होते हुए भी मृत के समान होता है। हमारे सपनों का मर जाना' का अर्थ है-कुछ करने की इच्छा समाप्त होना। मनुष्य कल्पना करके ही नए-नए कार्य करता है तथा विकसित होता है। सपनों के मर जाने से हम यथास्थिति को स्वीकार करके स्थिर एवं विचारशून्य हो जाते हैं।

प्रश्न-6 सबसे खतरनाक वह घड़ी होती है / अपनी कलाई पर चलती हुई भी जो आपकी निगाह में रुकी होती है। इन पंक्तियों में 'घड़ी' शब्द की व्यंजना से अवगत कराइए।

उत्तर-'घड़ी' शब्द के दो अर्थ मिलते हैं। पहला अर्थ जीवन से जुड़ा हुआ है। जीवन घड़ी की तरह चलता रहता है। वह कभी नहीं रुकता। मनुष्य की चाह समाप्त होने पर ही वह जड़ हो जाता है। दूसरा अर्थ है-दिनचर्या यदि व्यक्ति समय के अनुसार स्वयं को बाँध लेता है तो वह यांत्रिक हो जाता है। वह ढर्रे पर चलता है। उसके जीवन में नया कुछ करने का अवकाश नहीं होता।

प्रश्न-7 वह चाँद सबसे खतरनाक क्यों होता है, जो हर हत्याकांड के बाद आपकी आँखों में मिर्चों की तरह नहीं गड़ता है?

उत्तर-'चाँद' सौंदर्य का प्रतीक है, परंतु हत्याकांड के बाद कोई प्राणी सौंदर्य की कल्पना नहीं कर सकता। हत्या होने पर आम व्यक्ति के मन में आक्रोश उत्पन्न होता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य को चाँद आनंद प्रदान करने वाला नहीं लगता। यदि लोग ऐसी स्थिति में आनंद लेने की कोशिश करते हैं तो यह संवेदनशून्यता वास्तव में खतरनाक है।

प्रश्न-8 कवि ने 'मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती', से कविता का आरंभ करके फिर इसी से अंत क्यों किया होगा?

उत्तर-कवि ने 'मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती ' से कविता का आरंभ करके इसी पर अंत किया क्योंकि कवि का ध्येय 'खतरनाक' व 'सबसे खतरनाक' स्थितियों में अंतर बताना है। कुछ स्थितियाँ खतरनाक

होती हैं, परंतु उन्हें सुधारा जा सकता है कुछ दशाएँ कवि ने बताई हैं। यदि वे समाज में आ जाती हैं तो मानवता पर ही प्रश्न चिह्न लग जाता है। ऐसी स्थितियों से समाज को बचना चाहिए।

8. आओ मिलकर बचाएँ-निर्मला पुतुल

- **जन्म**: सन् 1972 में झारखंड राज्य के दुमका क्षेत्र में एक आदिवासी परिवार में।
- **रचनाएँ-**नगाड़े की तरह बजते शब्द, अपने घर की तलाश में।
- इनके पिता व चाचा शिक्षक थे, घर में शिक्षा का माहौल था इनका संथाली समाज और उसके रागबोध से गहरा जुड़ाव पहले से था, नर्सिंग की शिक्षा के समय बाहर की दुनिया से भी परिचय हुआ।
- **साहित्यिक परिचय**-कवयित्री ने आदिवासी समाज के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों को उजागर किया है। इनकी कविताओं का केंद्र बिंदु वे स्थितियाँ हैं, जिनमें कड़ी मेहनत के बावजूद खराब दशा, कुरीतियों के कारण बिगड़ती पीढ़ी, थोड़े लाभ के लिए बड़े समझौते, पुरुष वर्चस्व, स्वार्थ के लिए पर्यावरण की हानि, शिक्षित समाज का दिक्कुओं और व्यवसायियों के हाथों की कठपुतली बनना आदि है।

कविता का सारांश

वे आदिवासी जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं से कलात्मकता के साथ हमारा परिचय कराती हैं और संथाली समाज के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पहलुओं को बेबाकी से सामने रखती हैं। संथाली समाज में जहाँ एक ओर सादगी, भोलापन, प्रकृति से जुड़ाव और कठोर परिश्रम करने की क्षमता जैसे सकारात्मक तत्व हैं, वहीं दूसरी ओर उसमें अशिक्षा, कुरीतियाँ और शराब की ओर बढ़ता झुकाव जैसे नकारात्मक पक्ष भी हैं। यह कविता समाज में उन चीजों को बचाने की बात करती है जिनका होना स्वस्थ सामाजिक प्राकृतिक परिवेश के लिए जरूरी है। प्रकृति के विनाश और विस्थापन के कारण आज आदिवासी समाज संकट में है, जो कविता का मूल स्वरूप है। कवयित्री को लगता है कि हम अपनी पारंपरिक भाषा, भावुकता, भोलेपन, ग्रामीण संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। प्राकृतिक नदियाँ, पहाड़, मैदान, मिट्टी, फसल, हवाएँ-ये सब आधुनिकता के शिकार हो रहे हैं। आज के परिवेश, में विकार बढ़ रहे हैं, जिन्हें हमें मिटाना है। हमें प्राचीन संस्कारों और प्राकृतिक उपादानों को बचाना है। कवयित्री कहती है कि निराश होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि अभी भी बचाने के लिए बहुत कुछ शेष है।

प्रश्न 1: 'माटी का रंग' प्रयोग करते हुए किस बात की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर –संथाल क्षेत्र के लोगों को अपनी मूल पहचान को नहीं भूलना चाहिए। वह इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विशेषताएँ बचाए रखना चाहती है।

प्रश्न2: भाषा में झारखंडीपन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर –इसका अभिप्राय है-झारखंड की भाषा की स्वाभाविक बोली, उनका विशिष्ट उच्चारण। संथाली भाषा की स्वाभाविक विशेषताओं का बोली में प्रभाव।

प्रश्न3:दिल के भोलेपन के साथ-साथ अक्खड़पन और जुझारूपन को भी बचाने की आवश्यकता पर क्यों बल दिया गया है?

उत्तर – अक्खड़पन-इसलिए कि आदिवासियों का शोषण न हो सके।

- **जुझारूपन-**इसलिए कि विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला कर सकें। हिम्मत न हारें।

प्रश्न 4:प्रस्तुत कविता आदिवासी समाज की किन बुराइयों की ओर संकेत करती है?

उत्तर – यह कविता अशिक्षा, कुरीतियाँ और शराब की ओर बढ़ता झुकाव आदि बुराइयों की ओर संकेत करती है।

प्रश्न5:'इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है'-से क्या आशय है?

उत्तर – कवयित्री कहती है कि हमारी समृद्ध परंपरा में आज भी बहुत कुछ शेष है। आओ हम उसे मिलकर बचा लें। यही इस समय की माँग है। लोगों का विश्वास, उनकी टूटती उम्मीदों को जीवित करना, सपनों को पूरा करना आदि को सामूहिक प्रयासों से बचाया जा सकता है।

प्रश्न 6:निम्नलिखित पंक्तियों के काव्य-सौंदर्य को उद्घाटित कीजिए।

(क) ठंडी होती दिनचर्या में जीवन की गर्माहट

(ख) थोड़ा-सा विश्वास
थोडी-सी उम्मीद
थोड़े-से सपने
आओ, मिलकर बचाएँ।

उत्तर –

(क) इस पंक्ति में कवयित्री ने कहा है कि आदिवासी लोगों की दिनचर्या ठंडी पड़ गई है। आदिवासी लोगों में जीवन के प्रति उत्साह का अभाव हो गया है क्योंकि आदिवासी लोग आदिवासी जीवन के सकारात्मक पक्ष को भूलकर शहरी जीवन को ज्यादा महत्त्व का समझने लगा है। हम अपने प्रयासों से उनके जीवन में उत्साह जगा सकते हैं। यह काव्य पंक्ति लाक्षणिक है इसका अर्थ है-उत्साहहीन जीवन। 'गर्माहट' उमंग, उत्साह और क्रियाशीलता का प्रतीक है। इन प्रतीकों से अर्थ गांभीर्य आया है। शांत रस विद्यमान है। अतुकांत अभिव्यक्ति है।

(ख) इस अंश में कवयित्री अपने प्रयासों से लोगों की उम्मीदें, विश्वास व सपनों को जीवित रखना चाहती है। वह सभी लोगों से मिलकर प्रयास करने का आह्वान करती है। उसका स्वर आशावादी है। 'थोड़ा-सा' ; 'थोड़ी-सी' व 'थोड़े-से' तीनों प्रयोग एक ही अर्थ के वाहक हैं। अत: अनुप्रास अलंकार है। उर्दू (उम्मीद) , संस्कृत (विश्वास) तथा तद्भव (सपने) शब्दों का मिला-जुला प्रयोग किया गया है। तुक, छद और संगीत विहीन होते हुए कथ्य में आकर्षण है। खड़ी बोली का प्रयोग दर्शनीय है।

प्रश्न 7:बस्तियों को शहर की किस आबो-हवा से बचाने की आवश्यकता है?

उत्तर –शहरों में भावनात्मक जुड़ाव, सादगी, भोलापन, विश्वास और खिलखिलाती हुई हँसी नहीं है। इन कमियों से बस्तियों को बचाना बहुत जरूरी है। शहरों के प्रभाव में आकर ही दिनचर्या ठंडी होती जा रही है और जीवन की गर्माहट घट रही है। जंगल कट रहे हैं और आदिवासी लोग भी शहरी जीवन को अपना रहे हैं। बस्ती के आँगन भी सिकुड़ रहे हैं। नाचना-गाना, मस्ती भरी जिंदगी को शहरी प्रभाव से बचाना ज़रूरी है।

प्रश्न 8:लेखिका के प्राकृतिक परिवेश के कौन-से सुखद अनुभव हैं?

उत्तर –लेखिका ने संथाल परगने के प्राकृतिक परिवेश में निम्नलिखित सुखद अनुभव बताए हैं-

1. जगल की ताजा हवा
2. नदियों का निर्मल जल
3. पहाडीं की शांति
4. गीतों की मधुर धुनें
5. मिट्टी की स्वाभाविक सुगंध
6. लहलहाती फसलें कीजिए

प्रश्न 9:'भीतर की आग' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – इसका तात्पर्य है-आतरिक जोश व संघर्ष करने की क्षमता।

प्रश्न10:कवयित्री ने आज के युग को कैसा बताया है?

उत्तर-कवयित्री ने आज के युग को अविश्वास से युक्त बताया है। आज कोई ए(क) दूसरे पर भरोसा नहीं करता।

प्रश्न11:कवयित्री का स्वर आशावादी है या निराशावादी?

उत्तर – कवयित्री का स्वर आशावादी है। वह जानती है कि आज घोर अविश्वास का युग है, फिर भी वह आस्था व सपनों के जीवित रखने की आशा रखे हुए है।

प्रश्न12:मन का हरापन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – 'मन का हरापन' से तात्पर्य है-मन की मधुरता, सरसता व उमंग।

प्रश्न-6 (1) गद्य-खंड पर आधारित लघुत्तर प्रश्न

1. नमक का दारोगा-मुंशी प्रेमचंद

लेखक परिचय-प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले (उत्तर प्रदेश) के लमही गाँव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी तथा पिता का नाम मुंशी अजायबराय था जो लमही में डाकमुंशी थे

पाठ का सार-नमक का दरोगा प्रेमचंद द्वारा रचित लघु कथा है। इसमें एक ईमानदार नमक निरीक्षक की कहानी को बताया गया है जिसने कालाबाजारी के विरुद्ध आवाज उठाई। यह कहानी धन के ऊपर धर्म के जीत की है। कहानी में मानव मूल्यों का आदर्श रूप दिखाया गया है और उसे सम्मानित भी किया गया है। सत्यनिष्ठा, धर्मनिष्ठा और कर्मपरायणता को विश्व के दुर्लभ गुणों में बताया गया है। अन्त में यह शिक्षा दी गयी है कि एक बेइमान स्वामी को भी एक ईमानदार कर्मचारी की तलाश रहती है।

कहानी आजादी से पहले की है। नमक का नया विभाग बना। विभाग में ऊपरी कमाई बहुत ज्यादा थी इसलिए सभी व्यक्ति इस विभाग में काम करने को उत्सुक थे। उस दौर में फारसी का बोलबाला था और उच्च ज्ञान के बजाय केवल फारसी में प्रेम की कथाएँ और शृंगार रस के काव्य पढ़कर ही लोग उच्च पदों पर पहुँच जाते थे। मुंशी वंशीधर ने भी फारसी पढ़ी और रोजगार की खोज में निकल पड़े। उनके घर की आर्थिक दशा खराब थी। उनके पिता ने घर से निकलते समय उन्हें बहुत समझाया, जिसका सार यह था कि ऐसी नौकरी करना जिसमें ऊपरी कमाई हो और आदमी तथा अवसर देखकर घूस जरूर लेना।वंशीधर पिता से आशीर्वाद लेकर नौकरी की तलाश में निकल जाते हैं। भाग्य से नमक विभाग के दारोग पद की नौकरी मिल जाती है जिसमें वेतन अच्छा था साथ ही ऊपरी कमाई भी ज्यादा थी। यह खबर जब पिता को पता चली तो वह बहुत खुश हुए। मुंशी वंशीधर ने छः महीने में अपनी कार्यकुशलता और अच्छे आचरण से सभी अधिकारियों को मोहित कर लिया।

जाड़े के समय एक रात वंशीधर अपने दफ़्तर में सो रहे थे। उनके दफ़्तर से एक मील पहले जमुना नदी थी जिसपर नावों का पुल बना हुआ था। गाड़ियों की आवाज़ और मल्लाहों की कोलाहल से उनकी नींद खुली। बंदूक जेब में रखा और घोड़े पर बैठकर पुल पर पहुँचे वहाँ गाड़ियों की एक लंबी कतार पुल पार कर रही थीं। उन्होंने पूछा किसकी गाड़ियाँ हैं तो पता चला, पंडित अलोपीदीन की हैं। मुंशी वंशीधर चौंक पड़े। पंडित अलोपीदीन इलाके के सबसे प्रतिष्ठित जमींदार थे। लाखों रुपयों का व्यापार था। वंशीधर ने जब जाँच किया तब पता चला कि गाड़ियों में नमक के ढेले के बोरे हैं। उन्होंने गाड़ियाँ रोक लीं। पंडितजी को यह बात पता चली तो वह अपने धन पर विश्वास किए वंशीधर के पास पहुँचे और उनसे गाड़ियों के रोकने के बारे में पूछा। पंडितजी ने वंशीधर को रिश्वत देकर गाड़ियों को छोड़ने को कहा परन्तु वंशीधर अपने कर्तव्य पर अडिग रहे और पंडितजी को गिरफ़्तार करने का हुक्म दे दिया। पंडितजी आश्चर्यचकित रह गए। पंडितजी ने रिश्वत को बढ़ाया भी परन्तु वंशीधर नहीं माने और पंडितजी को गिरफ्तार कर लिया गया।

अगले दिन यह खबर हर तरफ फैली गयी। पंडित अलोपीदीन के हाथों में हथकड़ियाँ डालकर अदालत में लाया गया। हृदय में ग्लानि और क्षोभ और लज्जा से उनकी गर्दन झुकी हुई थी। सभी लोग चकित थे कि पंडितजी कानून की पकड़ में कैसे आ गए। सारे वकील और गवाह पंडितजी के पक्ष में थे, वंशीधर के पास केवल सत्य का बल था। न्याय की अदालत में पक्षपात चल रहा था। मुकदमा तुरन्त समाप्त हो गया। पंडित अलोपीदीन को सबूत के अभाव में रिहा कर दिया गया। वंशीधर के उद्दण्डता और विचारहीनता के बर्ताव पर अदालत ने दुःख जताया जिसके कारण एक अच्छे व्यक्ति को कष्ट झेलना पड़ा। भविष्य में उसे अधिक होशियार रहने को कहा गया। पंडित अलोपीदीन मुस्कराते हुए बाहर निकले। रुपये बाँटे गए। वंशीधर को व्यंग्यबाणों को सहना पड़ा। एक सप्ताह के अंदर कर्तव्यनिष्ठा का दंड मिला और नौकरी से हटा दिया गया। पराजित हृदय, शोक और खेद से व्यथित अपने घर की ओर चल पड़े। घर पहुँचे तो पिताजी ने कड़वीं बातें सुनाई। वृद्धा माता को भी दुःख हुआ। पत्नी ने कई दिनों तक सीधे मुँह तक बात नहीं की। एक सप्ताह बीत गया। संध्या का समय था। वंशीधर के पिता राम-नाम की माला जप रहे थे। तभी वहाँ एक सजा हुआ एक रथ आकर रुका। पिता ने देखा पंडित अलोपीदीन हैं। झुककर उन्हें दंडवत किया और चापलूसी भरी बातें करने लगे, साथ ही अपने बेटे को कोसा भी। पंडितजी ने बताया कि उन्होंने कई रईसों और अधिकारियों को देखा और सबको अपने धनबल का गुलाम बनाया। ऐसा पहली बार हुआ जब कोई व्यक्ति ने अपनी कर्तव्यनिष्ठा द्वारा उन्हें हराया हो। वंशीधर ने जब पंडितजी को देखा तो स्वाभिमान सहित उनका सत्कार किया। उन्हें लगा की पंडितजी उन्हें लज्जित करने आए हैं। परन्तु पंडितजी की बातें सुनकर उनके मन का मैल मिट गया और पंडितजी की बातों को उनकी उदारता बताया। उन्होंने पंडितजी को कहा कि उनका जो हुक्म होगा वे करने को तैयार हैं। इस बात पर पंडितजी ने स्टाम्प लगा हुआ एक पत्र निकला और उसे प्रार्थना स्वीकार करने को बोला। वंशीधर ने जब कागज़ पढ़ा तो उसमें पंडितजी ने वंशीधर को अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त किया था। कृतज्ञता से वंशीधर की आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने कहा कि वे इस पद के योग्य नहीं हैं। इसपर पंडितजी ने मुस्कराते हुए कहा कि उन्हें अयोग्य व्यक्ति ही चाहिए। वंशीधर ने कहा कि उनमें इतनी बुद्धि नहीं की वह यह कार्य कर सकें। पंडितजी ने वंशीधर को कलम देते हुए कहा कि उन्हें विद्यवान नहीं चाहिए बल्कि धर्मनिष्ठ व्यक्ति चाहिए। वंशीधर ने काँपते हुए मैनेजरी की कागज़ पर दस्तखत कर दिए। पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर को ख़ुशी से गले लगा लिया।

1. 'पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया।' वृद्ध मुंशी जी ने यह वाक्य क्यों कहा?

उत्तर: मुंशी जी के पुत्र वंशीधर ने हजारों रुपए की रिश्वत लेने से इंकार करके पंडित अलोपीदीन को अपनी हिरासत में ले लिया था था। यह बात जब मुंशी जी को जान पड़ी तो उन्होंने अपने पुत्र को डांटने के लिए कहा कि ' पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया ' अर्थात पढ़ना और लिखना सब व्यर्थ चला गया।

2. "नौकरी में औहदे कि ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए।" यह बात किसके द्वारा कही गई है, तथा इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: यह वाक्य मुंशी जी अपने बेटे वंशीधर से कहते हैं। इस वाक्य का मतलब यह है कि नौकरी के पद से रिश्वत और उपहारों का मूल्य अधिक होता है। इसलिए पद से अधिक नौकरी ऐसी करनी चाहिए, जिसमें रिश्वत लेने के अत्यधिक मौके प्राप्त हों।

3. रात में पुल से गुजर रहे वाहनों की आवाज सुनकर वंशीधर के मन में क्या विचार आया?

उत्तर: रात को सोते वक्त वंशीधर को पुल से गुजर रहे वाहनों कि गड़गड़ाहट सुनाई दी तो उन्हें कुछ आभास हुआ। वंशीधर ने सोचा कि देर रात वाहन कौन ले जाएगा? ज़रूर कुछ गलत हो रहा है।

4. कहानी में वृद्ध मुंशी का पात्र कौन है और कैसा है?

उत्तर: कहानी में मुंशी जी का पात्र वंशीधर के पिता है। वह अपनी परिस्थिति से चिंतित है, तथा अपने पुत्र की नौकरी के सहारे अपने घर की परिस्थिति को सही दिशा दिखाना चाहते हैं। उनके अनुसार नौकरी पर रिश्वत लेने में कोई बुराई नहीं है। इसलिए वह अपने बेटे वंशीधर को बेईमान बनने की शिक्षा देते है।

5. वंशीधर ने जब पंडित अलोपीदीन को हिरासत में लिया तो आस-पास के क्षेत्रों के लोगों कि क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर: वंशीधर ने जब पंडित अलोपीदीन को हिरासत में लिया तो रातों-रात यह समाचार सारे क्षेत्र में फैल गई। सभी लोग पण्डित जी के इस व्यवहार पर अपने अपने अनुसार तंज कस रहे थे। पंडित जी के उपर हर तरफ से निंदा कि वर्षा हो रही थी। पानी को दूध के नाम से बेचने वाला ग्वाला, रिश्वत लेने वाले अधिकारी, रेल में बिना टिकट यात्रा करने वाले बाबु लोग, जाली दस्तावेज तैयार करने वाले सेठ और साहूकार। यह सब के सब पंडित जी को कोस रहे थे।

6. नमक विभाग के दारोगा पद के लिए बड़ों-बड़ों का जी ललचाता था। वर्तमान समाज में ऐसा कौन-सा पद होगा जिसे पाने के लिए लोग लालायित रहते होंगे और क्यों?

उत्तर: आज के समाज में भ्रष्टाचार के लिए तो सभी विभाग हैं यदि आप भ्रष्ट है तो हर विभाग में रिश्वत ले सकते हैं। वर्तमान समाज में सरकारी विभाग में कई ऐसे पद हैं जिन्हें पाने के लिए लोग लालायित रहते हैं जैसे आयकर, बिक्री कर, आयत निर्यात विभाग, आई.ए.एस., पी.सी.एस. आदि। यहां मासिक आमदनी से अधिक ऊपरी आमदनी का महत्व है। आमदनी के साथ-साथ पद का रोब भी मिलता है।

7. 'लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं।' वाक्य समाज में लड़कियों की स्थिति की किस वास्तविकता को प्रकट करता है?

उत्तर: यह कथन समाज में लड़कियों की उपेक्षित स्थिति को दर्शाता है। लड़कियों को समाज में बोझ समझा जाता है। उन्हें पढ़ाने के स्थान पर घर के कामों में लगा दिया जाता है और समाज में लड़कियों को जन्म लेना ही अभिशाप माना जाता है और इनके बड़े होते ही विवाह की चिंता सताने लगती हैं। उनकी उचित देखभाल नहीं की जाती।

8. इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करनेवाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। अपने आस-पास अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को देखकर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? उपर्युक्त टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए लिखें।

उत्तर: अलोपीदीन जैसे व्यक्ति आसानी से कानून से खिलवाड़ कर लेते हैं और यह समाज में भ्रष्टाचार फैलाने वाले होते हैं। ये ऐसे लोग होते हैं जो कानून और न्याय व्यवस्था को आसानी से अपने पक्ष में ले आते हैं। अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को देखकर मेरे मन में यह प्रतिक्रिया होती है कि समाज में सारे व्यक्ति वंशीधर जैसे चरित्रवान और साहसी क्यों नहीं होते, जो अलोपीदीन जैसे व्यक्तियों को उसके कुकर्मों की सजा दिला सके।

9. नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मज़ार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए।

उत्तर: इस कहानी में यह पंक्ति वंशीधर के वृद्ध पिता के द्वारा कही गई है। जो समाज के लोगों की सोच पर कटाक्ष का काम करती है। इसमें नौकरी के ओहदे और उससे जुड़े सम्मान से ज्यादा महत्व ऊपरी कमाई को दिया गया है और ऐसी नौकरी को करने के लिए कहा जा रहा है जहाँ ज्यादा से ज्यादा रिश्वत मिल सके।

10. इस विस्तृत संसार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुधि अपनी पथ-प्रदर्शक और आत्मावलंबन ही अपना सहायक था।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्ति कहानी के नायक दरोगा वंशीधर के लिए कही गई है। वंशीधर एक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति है जो समाज में ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की मिसाल कायम करता है। इस संसार की बुराइयों से अपने आप को दूर रखने के लिए वह धैर्य को अपना मित्र, बुद्धि को अपना पथ प्रदर्शक और आत्मावलंबन को ही अपना सहायक मानता है।

11. न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं, नचाती हैं।

उत्तर: प्रस्तुत पंक्ति में न्याय व्यवस्था में व्यापक भ्रष्टाचार को दर्शाया गया है। जहाँ एक व्यक्ति धन के बल से अपने आरोपों से आसानी से मुक्त हो जाता है जैसे धन लूटना वकीलों का काम बन गया है। वकील धन के लिए गलत व्यक्ति के पक्ष में लड़ते हैं। तब भी अलोपीदीन जैसे व्यक्ति न्याय और नीति को अपने वश में रखते हैं।

12.दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी।

उत्तर: यह तिखी टिप्पणी संसार के स्वभाव पर की गई है। संसार के लोगों में कितनी ही बुराइयां हो पर वे दूसरों की निंदा करने से बाज नहीं आते। जब अलोपीदीन रात को गिरफ्तार हुए, तब खबर पूरे शहर में फैल गई थी। दुनिया की जबान दिन हो या रात पर टीका टिप्पणी करने से रुकती नहीं है।

13. न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया।

उत्तर: यहां अदालतों की कार्यशैली पर व्यंग है। जहाँ धन और धर्म में युद्ध सा हो रहा था। अदालतों को न्याय का मंदिर कहा जाता है परंतु धन के कारण न्याय के सभी शास्त्र सत्य को असत्य सिद्ध करने में जुट गए थे। यहां धर्म से वंशीधर और धन से अलोपीदीन दोनों की हार जीत का फैसला न्याय के मैदान में होना था। जब अदालत में अलोपीदीन को दोषी के रूप में पेश किया गया तब वकिल आरोपी को गलतप्रमाणों द्वारा झूठ साबित किए जाने लगा। वंशीधर इमानदारी और सत्य के बल पर अदालत में खड़े थे। गवाहों को खरीद लिया गया धन के बल पर न्याय पक्षपाती हो गया और आखिर कर दोषी को निर्दोष करार दे दिया गया।

2. मियाँ नसीरुद्दीन-कृष्णा सोबती

जन्म: सन्1925, गुजरात (पश्चिमी पंजाब-वर्तमान में पाकिस्तान) , **मृत्यु**: 25 जनवरी, 2019

प्रमुख रचनाएँ:-जिंदगीनामा, दिलोदानिश, ऐ लड़की, समय सरगम (उपन्यास) ; डार से बिछुड़ी, मित्रों मरजानी, बादलों के घेरे, सूरजमुखी अँधेरे के (कहानी-संग्रह) ; हम-हशमत, शब्दों के आलोक में (शब्दचित्र, संस्मरण)।

प्रमुख सम्मान: साहित्य अकादमी सम्मान, हिंदी अकादमी का शलाकासम्मान, साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार, साहित्य अकादमी अवार्ड-2017।

भाषा: कृष्णा जी के भाषिक प्रयोग में विविधता है। उन्होंने हिंदी की कथा-भाषा को एक विलक्षण ताजगी दी है। संस्कृतनिष्ठ तत्समता, उर्दू का बाँकपन, पंजाबी की जिंदादिली, ये सब एक साथ उनकी रचनाओं में मौजूद हैं।

सारांश-मियाँ नसीरुद्दीन शब्दचित्र हम-हशमत नामक संग्रह से लिया गया है। इसमें खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व, रुचियों और स्वभाव का शब्दचित्र खींचा गया है। मियाँ नसीरुद्दीन अपने मसीहाई अंदाज से रोटी पकाने की कला और उसमें अपने खानदानी महारत को बताते हैं। वे ऐसे इंसान का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपने पेशे को कला का दर्जा देते हैं और करके सीखने को असली हुनर मानते हैं।

लेखिका बताती है कि एक दिन वह मटियामहल के गढ़ैया मुहल्ले की तरफ निकली तो एक अँधेरी व मामूली-सी दुकान पर आटे का ढेर सनते देखकर उसे कुछ जानने का मन हुआ। पूछताछ करने पर पता चला कि यह खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन की दुकान है। ये छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर हैं। मियाँ चारपाई पर बैठे बीड़ी पी रहे थे। उनके चेहरे पर अनुभव और आँखों में चुस्ती व माथे पर कारीगर के तेवर थे।

लेखिका के प्रश्न पूछने पर उन्होंने अखबारों पर व्यंग्य किया। वे अखबार बनाने वाले व पढ़ने वाले दोनों को निठल्ला समझते हैं। लेखिका ने प्रश्न पूछा कि आपने इतनी तरह की रोटियाँ बनाने का गुण कहाँ से सीखा? उन्होंने बेपरवाही से जवाब दिया कि यह उनका खानदानी पेशा है। इनके वालिद मियाँ बरकत शाही

नानबाई थे और उनके दादा आला नानबाई मियाँ कल्लन थे। उन्होंने खानदानी शान का अहसास करते हुए बताया कि उन्होंने यह काम अपने पिता से सीखा।

नसीरुद्दीन ने बताया कि हमने यह सब मेहनत से सीखा। जिस तरह बच्चा पहले अलिफ से शुरू होकर आगे बढ़ता है या फिर कच्ची, पक्की, दूसरी से होते हुए ऊँची जमात में पहुँच जाता है, उसी तरह हमने भी छोटे-छोटे काम-बर्तन धोना, भट्ठी बनाना, भट्ठी को आँच देना आदि करके यह हुनर पाया है। खानदान के नाम पर वे गर्व से फूल उठते हैं। वे बड़ाई करते हैं कि खानदानी नानबाई कुएँ में भी रोटी पका सकता है। लेखिका ने इस कहावत की सच्चाई पर प्रश्नचिहन लगाया तो वे भड़क उठे। लेखिका जानना चाहती थी कि उनके बुजुर्ग किस बादशाह के यहाँ काम करते थे। अब उनका स्वर बदल गया। वे बादशाह का नाम स्वयं भी नहीं जानते थे। वे इधर-उधर की बातें करने लगे। अंत में खीझकर बोले कि आपको कौन-सा उस बादशाह के नाम चिट्ठी-पत्री भेजनी है।

लेखिका से पीछा छुड़ाने की गरज से उन्होंने बब्बन मियाँ को भट्टी सुलगाने का आदेश दिया। लेखिका ने उनके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि वे उन्हें मजदूरी देते हैं। लेखिका ने रोटियों की किस्में जानने की इच्छा जताई तो उन्होंने फटाफट नाम गिनवा दिए। फिर वे यादों में खो गए और कहने लगे कि अब समय बदल गया है। अब खाने-पकाने का शौक पहले की तरह नहीं रह गया है और न अब कद्र करने वाले हैं। अब तो भारी और मोटी तंदूरी रोटी का बोलबाला है। हर व्यक्ति जल्दी में है।

प्रश्न. 1. मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा क्यों कहा गया है?

उत्तर: मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा कहा गया है, क्योंकि वे मसीही अंदाज में **रोटी पकाने की कला** का बखान करते हैं। वे स्वयं भी **छप्पन तरह की रोटियाँ** बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका खानदान वर्षों से इस काम में लगा हुआ है। **वे रोटी बनाने को कला मानते हैं तथा स्वयं को उस्ताद कहते** हैं। उनका बातचीत करने का ढंग भी महान कलाकारों जैसा है। अन्य नानबाई सिर्फ रोटी पकाते हैं। वे नया कुछ नहीं कर पाते।

प्रश्न. 2. लेखिका मियाँ नसीरुद्दीन के पास क्यों गई थीं?

उत्तर: लेखिका मियाँ नसीरुद्दीन के पास कुतूहलवश गई थी क्योंकि उस दूकान से पटापट की आवाज आ रही थी, लेखिका ने सोचा की यहाँ सेवइयां बन रही है।

शायद वह दूकान पर हो रहे कार्य की जानकारी हासिल करके दूसरे लोगों को कारीगरी का रहस्य बताना चाहती थी।

प्रश्न. 3. बादशाह के नाम का प्रसंग आते ही लेखिका की बातों में मियाँ नसीरुद्दीन की दिलचस्पी क्यों खत्म होने लगी?

उत्तर: लेखिका ने जब मियाँ नसीरुद्दीन से उनके खानदानी नानबाई होने का रहस्य पूछा तो उन्होंने बताया कि उनके बुजुर्ग बादशाह के लिए भी रोटियाँ बनाते थे। लेखिका ने उनसे बादशाह का नाम पूछा तो उनकी दिलचस्पी लेखिका की बातों में खत्म होने लगी। सच्चाई यह थी कि **वे किसी बादशाह का नाम नहीं जानते थे और हो सकता है उनके परिवार का किसी बादशाह से संबंध न रहा हो।** बादशाह का बावर्ची होने की बात उन्होंने अपने परिवार की तारीफ़ करने के लिए कह दी होगी। बादशाह का प्रसंग आते ही वे बेरुखी दिखाने लगे।

प्रश्न. 4. 'मियाँ नसीरुद्दीन के चेहरे पर किसी दबे हुए अंधड़ के आसार देख यह मज़मून न छेड़ने का फैसला किया'-इस कथन के पहले और बाद के प्रसंग का उल्लेख करते हुए इसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस कथन से पूर्व लेखिका ने मियाँ नसीरुद्दीन से पूछा था कि **उनके दादा और वालिद मरहूम किस बादशाह के शाही बावर्चीखाने में खिदमत करते थे?** इस पर मियाँ बिगड़ गए और उन्होंने खफा होकर कहा- क्या चिट्ठी भेजोगे? जो नाम पूछ रहे हो? इसी प्रश्न के बाद उनकी दिलचस्पी खत्म हो गई। अब उनके चेहरे पर ऐसा भाव उभर आया मानो वे किसी तूफान को दबाए हुए बैठे हैं। उसके बाद लेखिका के मन में आया कि पूछ लें कि आपके कितने बेटे-बेटियाँ हैं। किंतु लेखिका ने उनकी दशा देखकर यह प्रश्न नहीं किया। फिर लेखिका ने उनसे जानना चाहा कि कारीगर लोग आपकी शागिर्दी करते हैं? तो मियाँ ने गुस्से में उत्तर दिया कि खाली

शगिर्दी ही नहीं, दो रुपए मन आटा और चार रुपए मन मैदा के हिसाब से इन्हें मजूरी भी देता हूँ। लेखिका द्वारा रोटियों का नाम पूछने पर भी मियाँ ने पल्ला झाड़ते हुए उसे कुछ रोटियों के नाम गिना दिए। इस प्रकार मियाँ नसीरुद्दीन के गुस्से के कारण लेखिका उनसे व्यक्तिगत प्रश्न न कर सकी।

प्रश्न. 5. पाठ में मियाँ नसीरुददीन का शब्दचित्र लेखिका ने कैसे खींचा है?

उत्तर-पाठ में मियाँ नसीरुद्दीन का शब्दचित्र लेखिका ने इस प्रकार खींचा है-हमने जो अंदर झाँका तो पाया, मियाँ चारपाई पर बैठे बीड़ी का मज़ा ले रहे हैं। मौसमों की मार से पका चेहरा, आँखों में काइयाँ, भोलापन और पेशानी पर मैंजे हुए कारीगर के तेवर।

प्रश्न. 6. मियाँ नसीरुद्दीन के चरित्र पर अपनी टिप्पणी करें।

उत्तर: मियाँ नसीरुद्दीन का **चरित्र दिलचस्प** है। वे अपने **पारंपरिक पेशे में माहिर** हैं; वे ऐसे कलाकार हैं जिनकी कला उनके साथ ही लुप्त होने को है। उनका बात करने का **अंदाज बड़ा ही निराला** है। यदि उनसे कोई सवाल पूछा जाए तो उसके बदले में वे अनेक सवाल पूछना शुरू कर देते हैं। बड़े ही घुमा-फिराकर जवाब देने तक पहुँच पाते हैं। अपने क्षेत्र में वे स्वयं को सर्वोच्च मानते हैं। **दार्शनिकता में सुकरात से कम नहीं हैं।** बातूनी बहुत हैं, पर काम करने में उनकी जो आस्था और महारथ है वह अनुकरणीय है। वे आँखों में काइयाँ भोलापन, पेशानी पर मॅजे हुए कारीगर के तेवर लिए, चेहरे पर मौसमों की मार के साथ बात इस तरह करते मानो कविता; जैसे-वक्त से वक्त को मिला सका है कोई! तालीम की तालीम भी बड़ी चीज होती है आदि।

3. अपू के साथ ढाई साल-सत्यजित राय

'अपू के साथ ढाई साल' सत्यजित राय द्वारा लिखा गया एक संस्मरण है जो 'पथेर पांचाली' फिल्म के अनुभवों से संबंधित है जिसका निर्माण भारतीय फिल्म के इतिहास में एक बड़ी घटना के रूप में दर्ज है। इससे फिल्म के सृजन और उनके व्याकरण से संबंधित कई बारीकियों का पता चलता है। यही नहीं, जो फिल्मी दुनिया हमें अपने ग्लैमर से चुँधियाती हुई जान पड़ती है, उसका एक ऐसा सच हमारे सामने आता है, जिसमें साधनहीनता के बीच अपनी कलादृष्टि को साकार करने का संघर्ष भी है। यह पाठ मूल रूप से बांग्ला भाषा में लिखा गया है जिसका अनुवाद विलास गिते ने किया है।

पाठ का सारांश-संस्मरण में लेखक बताता है कि पथेर पांचाली फिल्म की शूटिंग ढाई साल तक चली। उस समय वह विज्ञापन कंपनी में काम करता था। काम से फुर्सत मिलते ही और पैसे होने पर शूटिंग की जाती थी। शूटिंग के दौरान लेखक को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा। उन सब समस्याओं का सामना करते हुए और उनके समाधान या विकल्प को खोजते हुए उन्होनें किस प्रकार यह शूटिंग पूरी की और उनकी यह फ़िल्म काफी प्रसिद्ध हुई। इस संस्मरण में लेखक ने जिन समस्याओं का जिक्र किया और किस प्रकार उनका समाधान ढूंढा, वे सब इस प्रकार हैं-

क्र. सं.	समस्या	समाधान
1	धन की कमी	जब पैसे इकट्ठे हो जाते थे, फिर से शूटिंग शुरू की जाती थी
2	अपू की भूमिका के लिए लड़के का नहीं मिलना	पड़ोस मे रहने वाला लड़का सुबीर बनर्जी ही अपू की भूमिका के लिए चुना गया
3	अपू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाले बच्चों के बड़े होने का डर	पर ऐसा हुआ नहीं
4	इंदिरा ठाकरुन की भूमिका निभाने वाली अस्सी साल उम्र की चुन्नीबाला देवी की समस्या	सौभाग्य से ढाई साल तक काम कर पाई।
5	काशफूलों के खेतों मे धन की कमी से आधी शूटिंग ही हो पाई और बाद में जाने पर काशफूल जानवरों द्वारा खा लिए गए।	अगले साल फिर से काशफूलों के मौसम में शूटिंग पूरी की गई।

6	भूलो नामक कुत्ते का दृश्य आधा फिल्माए जाने पर पैसे खत्म हो गए और शूटिंग रोकनी पड़ी। बाद में शूटिंग के लिए गाँव मे जाने पर पता चला कि वह कुत्ता तो मर चुका है।	वैसा ही दिखाई देने वाला दूसरा कुत्ता लाया गया और दृश्य पूरा किया गया।
7	मिठाई बेचने वाला श्रीनिवास आधे दृश्य की शूटिंग के बाद चल बसा।	शरीर मे श्रीनिवास जैसा ही दिखाई देने वाला दूसरा आदमी ढूंढा गया पर उसका चेहरा पहले वाले सज्जन जैसा नहीं था। ऐसे मे आधा दृश्य उसकी पीठ की तरफ कैमरा रखकर फिल्माया गया।
8	एक दृश्य में अपू और दुर्गा के पीछे कुत्ते का नहीं दौड़ना	दुर्गा के हाथ में थोड़ी मिठाई देकर दौड़ने के लिए कहा गया जिसे देखकर कुत्ता पीछे-पीछे दौड़ने लगा।
9	पैसे न होने के कारण बारिश वाला दृश्य वर्षा ऋतु में शूट नहीं हो पाया और जब पैसे आए तो बरसात का मौसम जा चुका था।	लेखक शरद ऋतु में बरसात की उम्मीद में अपनी पूरी टीम के साथ रोज देहात में जाकर बैठता और एक दिन बहुत अच्छी बरसात हुई और दृश्य की शूटिंग पूरी की गई।
10	गाँव के एक सज्जन 'सुबोध दा' फ़िल्म वालों के देखते ही 'मारो उनको लठियों से' ऐसा चिल्लाते।	बाद में लेखक और उनकी टीम की उनसे दोस्ती हो गई।
11	शूटिंग वाले घर के पास एक पागल धोबी रहता था जो जब चाहे भाषण देना शुरू कर देता था।	धोबी के रिश्तेदारों ने लेखक की मदद की।
12	शूटिंग के लिए घर की समस्या	गाँव में एक घर मिल जो जर्जर था और उसके मालिक कलकत्ता में रहते थे। उस घर को उन्होनें भाड़े पर लिया और मरम्मत कारवाई।

प्रश्न-1 पथेर पांचाली फिल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक क्यों चला?

उत्तर-'पथेर पांचाली' फ़िल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक चला। इसके कई कारण थे-लेखक के पास पैसों का अभाव था। पैसे इकट्ठे होने पर ही वह शूटिंग करता था। वह एक विज्ञापन कंपनी में काम करता था। इसलिए काम से फुर्सत होने पर ही लेखक तथा अन्य कलाकार फिल्म की शूटिंग का काम करते थे। पात्रों के मर जाने एवं तकनीकी पिछड़ेपन के कारण भी पात्र, स्थान, दृश्य आदि की समस्याएँ आ जाती थीं।

प्रश्न-2 अब अगर हम उस जगह बाकी आधे सीन की शूटिंग करते, तो पहले आधे सीन के साथ उसका मेल कैसे बैठता? उसमें से 'कंटिन्युइटी' नदारद हो जाती-इस कथन के पीछे क्या भाव है?

उत्तर-इसके पीछे भाव यह है कि कोई भी फिल्म हमें तभी प्रभावित कर पाती है जब उसमें निरंतरता हो। यदि एक दृश्य में ही एकरूपता नहीं होती तो फिल्म कैसे चल पाती। दर्शक भ्रमित हो जाता है। 'पथेर पांचाली' फ़िल्म में काशफूलों के साथ शूटिंग पूरी करनी थी, परंतु एक सप्ताह के अंतराल में पशु उन्हें खा गए। अत: उसी पृष्ठभूमि में दृश्य चित्रित करने के लिए एक वर्ष तक इंतजार करना पड़ा। यदि यह आधा दृश्य काशफूलों के बिना चित्रित किया जाता तो दृश्य में निरंतरता नहीं बन पाती।

प्रश्न-3 किन दो दृश्यों में दर्शक यह पहचान नहीं पाते कि उनकी शूटिंग में कोई तरकीब अपनाई गई है?

उत्तर-**प्रथम दृश्य-**इस दृश्य में 'भूलो' नामक कुत्ते को अपू की माँ द्वारा गमले में डाले गए भात को खाते हुए चित्रित करना था, परंतु सूर्य के अस्त होने तथा पैसे खत्म होने के कारण यह दृश्य चित्रित न हो सका। छह महीने बाद लेखक पुन: उस स्थान पर गया तब तक उस कुत्ते की मौत हो चुकी थी। काफी प्रयास के बाद उससे मिलता-जुलता कुत्ता मिला और उसी से भात खाते हुए दृश्य को फ़िल्माया गया। यह दृश्य इतना

स्वाभाविक था कि कोई भी दर्शक उसे पहचान नहीं पाया। **दूसरा दृश्य-**इस दृश्य में श्रीनिवास नामक व्यक्ति मिठाई वाले की भूमिका निभा रहा था। बीच में शूटिंग रोकनी पड़ी। दोबारा उस स्थान पर जाने से पता चला कि उस व्यक्ति का देहांत हो गया है, फिर लेखक ने उससे मिलते-जुलते व्यक्ति को लेकर बाकी दृश्य फ़िल्माया। पहला श्रीनिवास बाँस वन से बाहर आता है और दूसरा श्रीनिवास कैमरे की ओर पीठ करके मुखर्जी के घर के गेट के अंदर जाता है। इस प्रकार इस दृश्य में दर्शक अलग-अलग कलाकारों की पहचान नहीं पाते।

प्रश्न-4 'भूलो' की जगह दूसरा कुत्ता क्यों लाया गया? उसने फिल्म के किस दृश्य को पूरा किया?

उत्तर-भूलो की मृत्यु हो गई थी, इस कारण उससे मिलता-जुलता कुत्ता लाया गया। फ़िल्म का दृश्य इस प्रकार था कि अपू की माँ उसे भात खिला रही थी। अपू तीर-कमान से खेलने के लिए उतावला है। भात खाते-खाते वह तीर छोड़ता है तथा उसे लाने के लिए भाग जाता है। माँ भी उसके पीछे दौड़ती है। भूलो कुत्ता वहीं खड़ा सब कछ देख रहा है। उसका ध्यान भात की थाली की ओर है। यहाँ तक का दृश्य पहले कुत्ते पर फ़िल्माया गया था। इसके बाद के दृश्य में अपू की माँ बचा हुआ भात गमले में डाल देती है और भूलो वह भात खा जाता है। यह दृश्य दूसरे कुत्ते से पूरा करवाया गया।

प्रश्न-5 फिल्म में श्रीनिवास की क्या भूमिका थी और उनसे जुड़े बाकी दृश्यों को उनके गुजर जाने के बाद किस प्रकार फिल्माया गया?

उत्तर-फिल्म में श्रीनिवास की भूमिका मिठाई बेचने वाले की थी। उसके देहांत के बाद उसकी जैसी कद-काठी का व्यक्ति ढूँढ़ा गया। उसका चेहरा अलग था, परंतु शरीर श्रीनिवास जैसा ही था। ऐसे में फ़िल्मकार ने तरकीब लगाई। नया-आदमी कैमरे की तरफ पीठ करके मुखर्जी के घर के गेट के अंदर जाता है, उसका चेहरा कैमरे के सामने नहीं आता है। अतः कोई भी अनुमान नहीं लगा पाता कि यह अलग व्यक्ति है।

प्रश्न-6 बारिश का दृश्य चित्रित करने में क्या मुश्किल आई और उसका समाधान किस प्रकार हुआ?

उत्तर-फ़िल्मकार के पास पैसे का अभाव था, अत: बारिश के दिनों में शूटिंग नहीं कर सके। अक्टूबर माह तक। उनके पास पैसे इकट्ठे हुए तो बरसात के दिन समाप्त हो चुके थे। शरद ऋतु में बारिश होना भाग्य पर निर्भर था। शरद ऋतु में लेखक हर रोज अपनी टीम के साथ गाँव में जाकर बैठे रहते और बादलों की ओर टकटकी लगाकर देखते रहते। एक दिन उनकी इच्छा पूरी हो गई। अचानक बादल छा गए और धुआँधार बारिश होने लगी। फिल्मकार ने इस बारिश का पूरा फायदा उठाया और दुर्गा और अपू का बारिश में भीगने वाला दृश्य शूट कर लिया।

प्रश्न-7 किसी फिल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उन्हें सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर-'अपू के साथ ढाई साल' पाठ के आधार पर कहा जा सकता है कि किसी फ़िल्म की शूटिंग करते समय फिल्मकार को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है-

(क) धन की कमी
(ख) कलाकारों का चयन
(ग) कलाकारों के स्वास्थ्य, मृत्यु आदि की स्थिति
(घ) पशु-पात्रों के दृश्य की समस्या
(ङ) बाहरी दृश्यों हेतु लोकेशन (स्थान) ढूँढना
(च) प्राकृतिक दृश्यों के लिए मौसम पर निर्भरता
(छ) स्थानीय लोगों का हस्तक्षेप व असहयोग
(ज) संगीत
(झ) दृश्यों की निरंतरता हेतु भटकना

प्रश्न-8 पठित पाठ के आधार पर यह कह पाना कहाँ तक उचित है कि फिल्म को सत्यजित राय एक कला माध्यम के रूप में देखते हैं, व्यावसायिक-माध्यम के रूप में नहीं?

उत्तर-यह बात पूर्णतया उचित है कि फ़िल्म को सत्यजित राय एक कला-माध्यम के रूप में देखते हैं, व्यावसायिक-माध्यम के रूप में नहीं। वे फिल्मों के दृश्यों के संयोजन में कोई लापरवाही नहीं बरतते। वे दृश्य को पूरा करने के लिए समय का इंतजार करते हैं। काशफूल वाले दृश्य में उन्होंने साल भर इंतजार किया। पैसे की तंगी के कारण वे परेशान हुए, परंतु उन्होंने किसी से पैसा नहीं माँगा। वे स्टूडियो के दृश्य की बजाय प्राकृतिक दृश्य फिल्माते थे। वे कला को साधन मानते थे।

4. विदाई संभाषण-बालमुकुन्द गुप्त

जीवन परिचय-बालमुकुन्द गुप्त का जन्म 1865 ई. हरियाणा के रोहतक जिले में। **मृत्यु**-सन् 1907 ई. में

ये खड़ी बोली और आधुनिक हिंदी साहित्य को स्थापित करने वाले लेखकों में से एक इन्होंने उर्दू के दो पत्रों अखबार-ए-चुनार' तथा 'कोहेनूर' का संपादन किया। बाद में हिंदी के समाचार-पत्रों 'हिंदुस्तान', 'हिंदी बंगवासी', भारतमित्र' आदि का संपादन किया।

रचनाएँ-इनकी रचनाएँ पाँच संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं

शिवशंभु के चिट्ठे, चिट्ठे और खत, खेल तमाशा, गुप्त निबंधावली, स्फुट कविताएँ।

सारांश-वायसराय कर्जन जो 1899-1904 व 1904-1905 तक दो बार वायसराय रहे, के शासन में भारतीयों की स्थिति का खुलासा करता है। यह अध्याय शिवशंभु के चिट्ठे का अंश है। कर्जन के शासनकाल में विकास के बहुत कार्य हुए, नए-नए आयोग बनाए गए किंतु उन सबका उद्देश्य शासन में गौरों का वर्चस्व स्थापित करना तथा इस देश के संसाधनों का अंग्रेजों के हित में सर्वोत्तम उपयोग करना था। कर्जन ने हर स्तर पर अंग्रेजों का वर्चस्व स्थापित करने की चेष्टा की। वे सरकारी निरंकुशता के पक्षधर थे। लिहाजा प्रेस की स्वतंत्रता पर उन्होंने प्रतिबंध लगा दिया। अंततः कौंसिल में मनपसंद अंग्रेज सदस्य नियुक्त करवाने के मुद्दे पर उन्हें देश-विदेश दोनों जगह पर नीचा देखना पड़ा क्षुब्ध, होकर उन्होंने इस्तीफा दे दिया और वापस इंग्लैंड चले गए।

लेखक ने भारतीयों की बेबसी दुख एवं लाचारी को व्यंग्यात्मक ढंग से लॉर्ड कर्जन की लाचारी से जोड़ने की कोशिश की है। साथ ही यह बताने की कोशिश की है कि शासन के आततायी रूप से हर किसी को कष्ट होता है चाहे वह सामान्य जनता हो या फिर लॉर्ड कर्जन जैसा वायसराय। यह निबंध उस समय लिखा गया जब प्रेस पर पाबंदी का दौर चल रहा था।

लेखक कर्जन को संबोधित करते हुए कहता है कि आखिरकार आपके शासन का अंत हो ही गया, अन्यथा आप तो यहाँ के स्थाई वायसराय बनने की इच्छा रखते थे। इतनी जल्दी देश को छोड़ने की बात आपको व देशवासियों को पता नहीं था। आपके दूसरी बार आने पर भारतवासी प्रसन्न नहीं थे। वे आपके जाने की प्रतीक्षा करते थे, परंतु आपके जाने से लोग दुःखी हैं। बिछड़न का समय पवित्र, निर्मल व कोमल होता है। यह करुणा पैदा करने वाला होता है। भारत में तो पशु-पक्षी भी ऐसे समय उदास हो जाते हैं।

प्रश्न-1 शिवशंभु की दो गाय की कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

उत्तर-लेखक शिवशंभु की दो गायों की कहानी के माध्यम से कहना चाहता है कि भारत में मनुष्य ही नहीं पशुओं में भी साथ रहने वाले के साथ लगाव होता है। वे उस व्यक्ति के बिछड़ने पर भी दुखी होते हैं जो उन्हें कष्ट पहुँचाता है। यहाँ भावना प्रमुख होती है। हमारे देश में पशु-पक्षियों को भी बिछड़ने के समय उदास देखा गया है। बिछड़ते समय वैर-भाव को भुला दिया जाता है। विदाई का समय बड़ा करुणोत्पादक होता है। लॉर्ड कर्जन जैसे क्रूर आततायी के लिए भी भारत की निरीह जनता सहानुभूति का भाव रखती है।

प्रश्न-2 आठ करोड़ प्रजा के गिड़गिड़ाकर विच्छेद न करने की प्रार्थना पर आपने जरा भी ध्यान नहीं दिया-यहाँ किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर-लेखक ने यहाँ बंगाल विभाजन की ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया है। लॉर्ड कर्जन दो बार भारत के वायसराय बनकर आए। उन्होंने भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थाई करने के लिए अनेक काम किए। भारत में राष्ट्रवादी भावनाओं को कुचलने के लिए उन्होंने बंगाल का विभाजन करने की योजना बनाई। कर्ज़न की

इस योजना का जनता ने विरोध किया परंतु कर्जन ने अपनी जिद्द को पूरा किया। बंगाल के दो हिस्से कर दिए गए-पूर्वी बंगाल तथा पश्चिमी बंगाल।

प्रश्न-3 कर्जन को इस्तीफा क्यों देना पड़ गया?

उत्तर-कर्जन को इस्तीफा निम्नलिखित कारणों से देना पड़ा-

1. कर्जन ने राष्ट्रवादी ताकतों को तोड़ने के लिए बंगाल का विभाजन किया था परंतु इसका परिणाम उलटा हुआ। सारा देश एकजुट हो गया और ब्रिटिश शासन की जड़े हिल गई।

2. कर्जन अपने मनपसंद के एक फौजी अफसर को इस पद पर नियुक्त करवाना चाहता था। उसकी सिफारिश को नहीं माना गया। इससे क्षुब्ध होकर उन्होंने इस्तीफा देने की धमकी दी। ब्रिटिश सरकार ने उनका इस्तीफा मंजूर कर लिया।

प्रश्न-4 'विचारिए तो, क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई। कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे।' आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लेखक कहता है कि कर्जन की भारत में शान थी। दिल्ली दरबार में उसका वैभव चरम सीमा पर था। पति-पत्नी की कुर्सी सोने की थी। उसका हाथी सबसे ऊँचा था तथा हमेशा सबसे आगे रहता था। सम्राट के भाई का स्थान भी इनसे नीचा था। प्रशासनिक अधिकारी, राजा, अमीर लोग सभी कर्ज़न के हाथों की कठपुतली थे। इसने बड़े-बड़े राजाओं को मिट्टी मे मिला दिया। इस देश मे भगवान और एडवर्ड के बाद उसका स्थान था परंतु इस्तीफा देने के बाद सब कुछ खत्म हो गया। इसकी सिफारिश पर एक आदमी भी नहीं रखा गया। जिद के कारण इसका वैभव नष्ट हो गया।

प्रश्न-5 आपके और यहाँ के निवासियों के बीच में कोई तीसरी शक्ति और भी है यहाँ तीसरी शक्ति किसे कहा गया है?

उत्तर-लॉर्ड कर्जन स्वयं को निरंकुश, सर्वशक्ति संपन्न मान बैठा था। भारतीय जनता उसकी मनमानी सह रही थी। अचानक गुस्साए लॉर्ड कर्ज़न का इस्तीफा मंजूर हो गया और उसे जाना पड़ा। यहाँ लेखक कहना चाहते हैं कि लॉर्ड कर्जन और भारतीय जनता के बीच एक तीसरी शक्ति अर्थात् ब्रिटिश सरकार है जिस पर न तो लॉर्ड कर्जन का नियंत्रण है और न ही भारत के निवासियों का ही नियंत्रण है। इंग्लैंड की महारानी का शासन न तो कर्जन की बात सुनता है और न ही कर्जन के खिलाफ भारतीय जनता की गुहार सुनता है। उस पर इस निरंकुश का अंकुश भी नहीं था।

प्रश्न-5 पाठ का यह अंश शिवशंभु के चिट्ठे से लिया गया है। शिवशंभु नाम की चर्चा पाठ में भी हुई है। बालमुकुंद गुप्त ने इस नाम का उपयोग क्यों किया होगा?

उत्तर-शिवशंभु एक काल्पनिक पात्र है जो भांग के नशे मे खरी-खरी बात कहता है। यह पात्र अंग्रेजों की कुनीतियों को उजागर करता है। लेखक ने इस नाम का उपयोग सरकारी कानून के कारण किया। कर्जन ने प्रेस की अभिव्यक्ति पर प्रतिबंध लगा दिया था। उस समय ब्रिटिश साम्राज्य से सीधी टक्कर लेने के हालात नहीं थे परंतु शासन की पोल खोलकर जनता को जागरूक भी करना था। अतः काल्पनिक पात्र के जरिए अपनी मरजी की बाते कहलवाई जाती थीं।

प्रश्न-7 नादिर से भी बढ़कर आपकी जिद है-कर्जन के संदर्भ में क्या आपको यह बात सही लगती है? पक्ष या विपक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर-जी हाँ, कर्जन के संदर्भ में हमें यह बात सही लगती है। नादिरशाह एक क्रूर राजा था। उसने दिल्ली में कत्लेआम करवाया, परंतु आसिफजाह ने तलवार गले में डालकर उसके आगे समर्पण कर कत्लेआम रोकने की प्रार्थना की, तो तुरंत कल्लेआम रोक दिया गया। कर्ज़न ने बंगाल का विभाजन किया। आठ करोड़ भारतवासियों के बार-बार विनती करने पर भी उसने अपनी जिद्द नहीं छोड़ी। इस संदर्भ में कर्ज़न की जिद्द नादिरशाह से बड़ी है। वह नादिरशाह से अधिक क्रूर था। उसने जनहित की उपेक्षा की।

प्रश्न-8 क्या आँख बंद करके मनमाने हुक्म चलाना और किसी की कुछ न सुनने का नाम ही शासन है? इन पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए बताइए कि शासन क्या है?

उत्तर-शासन किसी एक व्यक्ति की इच्छा से संचालित शासन व्यवस्था नहीं है। यह नियमों का समूह है जो अच्छी व्यवस्था का गठन करता है। यह प्रबंध जनहित के अनुरूप होना चाहिए। निरंकुश शासक से जनता दुखी रहती है तथा कुछ समय बाद उस शासक का पतन हो जाता है। प्रजा को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होनी चाहिए। हर नीति में जनकल्याण का भाव होना चाहिए।

प्रश्न 9 कैसर, जार तथा नादिरशाह पर टिप्पणियाँ लिखिए।

उत्तर-कैसर यह शब्द रोमन तानाशाह जूलियस सीजर के नाम से बना है। यह शब्द तानाशाह जर्मन शासकों के लिए प्रयोग होता था

ज़ार-यह भी जूलियस सीजर से बना शब्द है जो विशेष रूप से रूस के तानाशाह शासकों (16वी सदी से 1917 तक) के लिए प्रयुक्त होता था। इस शब्द का पहली बार बुल्गेरियाई शासक (913 में) के लिए प्रयोग हुआ था।

नादिरशाह-यह 1736 से 1747 तक ईरान का शाह रहा। तानाशाही स्वरूप के कारण 'नेपोलियन ऑफ परशिया' के नाम से भी जाना जाता था। पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमदशाह अब्दाली को नादिरशाह ने आक्रमण के लिए भेजा था।

प्रश्न 10 राजकुमार सुल्तान ने नरवरगढ़ से किन शब्दों मे विदा ली थी?

उत्तर-राजकुमार सुल्तान ने नरवरगढ़ से विदा लेते समय कहा-प्यारे नरवरगढ़! मेरा प्रणाम स्वीकार ले। आज मैं तुझसे जुदा होता हूँ। तू मेरा अन्नदाता है। अपनी विपद के दिन मैंने तुझमें काटे हैं। तेरे ऋण का बदला यह गरीब सिपाही नहीं दे सकता। भाई नरवरगढ़! यदि मैंने जानबूझकर एक दिन भी अपनी सेवा में चूक की हो, यहाँ की प्रजा की शुभ चिंता न की हो, यहाँ की स्त्रियों को माता और बहन की दृष्टि से न देखा हो तो मेरा प्रणाम न ले, नहीं तो प्रसन्न होकर एक बार मेरा प्रणाम ले और मुझे जाने की आजा दे।

6. गलता लोहा-शेखर जोशी

जीवन परिचय- शेखर जोशी का जन्म उत्तरांचल के अल्मोड़ा में 1932 ई. में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। बीसवीं सदी के छठे दशक में हिंदी कहानी में बड़े परिवर्तन हुए। इस समय एक साथ कई युवा कहानी कारों ने परंपरागत तरीके से हटकर नई तरह की कहानियाँ लिखनी शुरू की। इस आंदोलन में शेखर जोशी का स्थान अन्यतम है।

- **रचनाएँ-**
- कहानी-संग्रह- कोसी का घटवार, साथ के लोग, दाज्यू, हलवाहा, नौरंगी बीमार है।
- शब्दचित्र संग्रह- एक पेड़ की याद ।

सारांश-इस कहानी में समाज के जातिगत विभाजन पर कई कोणों से टिप्पणी की गई है। यह कहानी लेखक के लेखन में अर्थ की गहराई को दर्शाती है। इस पूरी कहानी में लेखक की कोई मुखर टिप्पणी नहीं है। इसमें एक मेधावी, किंतु निर्धन ब्राहमण युवक मोहन किन परिस्थितियों के चलते उस मनोदशा तक पहुँचता है, जहाँ उसके लिए जातीय अभिमान बेमानी हो जाता है। सामाजिक विधि-निषेधों को ताक पर रखकर वह धनराम लोहार के आफर पर बैठता ही नहीं, उसके काम में भी अपनी कुशलता दिखाता है। मोहन का व्यक्तित्व जातिगत आधार पर निर्मित झूठे भाईचारे की जगह मेहनतकशों के सच्चे भाईचारे को प्रस्तावित करता प्रतीत होता है मानो लोहा गलकर नया आकार ले रहा हो।

मोहन के पिता वंशीधर ने जीवनभर पुरोहिती की। अब वृद्धावस्था में उनसे कठिन श्रम व व्रत-उपवास नहीं होता। उन्हें चंद्रदत्त के यहाँ रुद्री पाठ करने जाना था, परंतु जाने की तबियत नहीं है। मोहन उनका आशय समझ गया, लेकिन पिता का अनुष्ठान कर पाने में वह कुशल नहीं है। पिता का भार हलका करने के लिए वह खेतों की ओर चला, लेकिन हँसुवे की धार कुंद हो चुकी थी। उसे अपने दोस्त धनराम की याद आ गई। वह धनराम लोहार की दुकान पर धार लगवाने पहुँचा।,

धनराम उसका सहपाठी था। दोनों बचपन की यादों में खो गए। मोहन ने मास्टर त्रिलोक सिंह के बारे में पूछा। धनराम ने बताया कि वे पिछले साल ही गुजरे थे। दोनों हँस-हँसकर उनकी बातें करने लगे। मोहन पढ़ाई व गायन में निपुण था। वह मास्टर का चहेता शिष्य था और उसे पूरे स्कूल का मॉनीटर बना रखा था। वे उसे कमजोर बच्चों को दंड देने का भी अधिकार देते थे। धनराम ने भी मोहन से मास्टर के आदेश पर डंडे खाए थे। धनराम उसके प्रति स्नेह व आदरभाव रखता था, क्योंकि जातिगत आधार की हीनता उसके मन में बैठा दी गई थी। उसने मोहन को कभी अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझा।

धनराम गाँव के खेतिहर या मजदूर परिवारों के लड़कों की तरह तीसरे दर्जे तक ही पढ़ पाया। मास्टर जी उसका विशेष ध्यान रखते थे। धनराम को तेरह का पहाड़ा कभी याद नहीं हुआ। इसकी वजह से उसकी पिटाई होती। मास्टर जी का नियम था कि सजा पाने वाले को अपने लिए हथियार भी जुटाना होता था। धनराम डर या मंदबुद्ध होने के कारण तेरह का पहाड़ा नहीं सुना पाया। मास्टर जी ने व्यंग्य किया-'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे। विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?"

इतना कहकर उन्होंने थैले से पाँच-छह दरातियाँ निकालकर धनराम को धार लगा लाने के लिए पकड़ा दी। हालाँकि धनराम के पिता ने उसे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखा दी। विद्या सीखने के दौरान मास्टर त्रिलोक सिंह उसे अपनी पसंद का बेंत चुनने की छूट देते थे, परंतु गंगाराम इसका चुनाव स्वयं करते थे। एक दिन गंगाराम अचानक चल बसे। धनराम ने सहज भाव से उनकी विरासत सँभाल ली।

इधर मोहन ने छात्रवृत्ति पाई। इससे उसके पिता वंशीधर तिवारी उसे बड़ा आदमी बनाने का स्वप्न देखने लगे। पैतृक धंधे ने उन्हें निराश कर दिया था। वे कभी परिवार का पूरा पेट नहीं भर पाए। अत: उन्होंने गाँव से चार मील दूर स्कूल में उसे भेज दिया। शाम को थकामाँदा मोहन घर लौटता तो पिता पुराण कथाओं से उसे उत्साहित करने की कोशिश करते। वर्षा के दिनों में मोहन नदी पार गाँव के यजमान के घर रहता था। एक दिन नदी में पानी कम था तथा मोहन घसियारों के साथ नदी पार कर घर आ रहा था। पहाड़ों पर भारी वर्षा के कारण अचानक नदी में पानी बढ़ गया। किसी तरह वे घर पहुँचे इस घटना के बाद वंशीधर घबरा गए और फिर मोहन को स्कूल न भेजा।

उन्हीं दिनों बिरादरी का एक संपन्न परिवार का युवक रमेश लखनऊ से गाँव आया हुआ था। उससे वंशीधर ने मोहन की पढ़ाई के संबंध में अपनी चिंता व्यक्त की तो वह उसे अपने साथ लखनऊ ले जाने को तैयार हो गया। उसके घर में एक प्राणी बढ़ने से कोई अंतर नहीं पड़ता। वंशीधर को रमेश के रूप में भगवान मिल गया। मोहन रमेश के साथ लखनऊ पहुँचा। यहाँ से जिंदगी का नया अध्याय शुरू हुआ। घर की महिलाओं के साथ-साथ उसने गली की सभी औरतों के घर का काम करना शुरू कर दिया। रमेश बड़ा बाबू था। वह मोहन को घरेलू नौकर से अधिक हैसियत नहीं देता था। मोहन भी यह बात समझता था। कह सुनकर उसे समीप के सामान्य स्कूल में दाखिला करा दिया गया। कामों के बोझ व नए वातावरण के कारण वह अपनी कोई पहचान नहीं बना पाया। गर्मियों की छुट्टी में भी वह तभी घर जा पाता जब रमेश या उसके घर का कोई आदमी गाँव जा रहा होता। उसे अगले दरजे की तैयारी के नाम पर शहर में रोक लिया जाता।

मोहन ने परिस्थितियों से समझौता कर लिया था। वह घर वालों को असलियत बताकर दुखी नहीं करना चाहता था। आठवीं कक्षा पास करने के बाद उसे आगे पढ़ने के लिए रमेश का परिवार उत्सुक नहीं था। बेरोजगारी का तर्क देकर उसका तकनीकी स्कूल में दाखिल करा दिया गया। वह पहले की तरह घर व स्कूल के काम में व्यस्त रहता। डेढ़-दो वर्ष के बाद उसे कारखानों के चक्कर काटने पड़े। इधर वंशीधर को अपने बेटे के बड़े अफसर बनने की उम्मीद थी। जब उसे वास्तविकता का पता चला तो उसे गहरा दुख हुआ। धनराम ने

भी उससे पूछा तो उसने झूठ बोल दिया। धनराम ने उन्हें यही कहा-मोहन लला बचपन से ही बड़े बुद्धिमान थे।

इस तरह मोहन और धनराम जीवन के कई प्रसंगों पर बातें करते रहे। धनराम ने हँसुवे के फाल को बेंत से निकालकर तपाया, फिर उसे धार लगा दी। आमतौर पर ब्राहमण टोले के लोगों का शिल्पकार टोले में उठना बैठना नहीं होता था। काम-काज के सिलसिले में वे खड़े-खड़े बातचीत निपटा ली जाती थी। ब्राहमण टोले के लोगों को बैठने के लिए कहना भी उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। मोहन धनराम की कार्यशाला में बैठकर उसके काम को देखने लगा।

धनराम अपने काम में लगा रहा। वह लोहे की मोटी छड़ को भट्टी में गलाकर गोल बना रहा था, किंतु वह छड़ निहाई पर ठीक से फंस नहीं पा रही थी। अत: लोहा ठीक ढंग से मुड़ नहीं पा रहा था। मोहन कुछ देर उसे देखता रहा और फिर उसने दूसरी पकड़ से लोहे को स्थिर कर लिया। नपी-तुली चोटों से छड़ को पीटते-पीटते गोले का रूप दे डाला। मोहन के काम में स्फूर्ति देखकर धनराम अवाक् रह गया। वह पुरोहित खानदान के युवक द्वारा लोहार का काम करने पर आश्चर्यचकित था। धनराम के संकोच, धर्मसंकट से उदासीन मोहन लोहे के छल्ले की त्रुटिहीन गोलाई की जाँच कर रहा था। उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी।

प्रश्न-1 कहानी के उस प्रसंग का उल्लेख करें, जिसमें किताबों की विद्या **और घन चलाने की विद्या का ज़िक्र आया है।**

उत्तर-जिस समय धनराम तेरह का पहाड़ा नहीं सुना सका तो मास्टर त्रिलोक सिंह ने ज़बान के चाबुक लगाते हुए कहा कि 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?' यह सच है कि किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। उन्होंने बचपन में ही अपने पुत्र को धौंकनी फेंकने और सान लगाने के काम में लगा दिया था वे उसे धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगे। मास्टर जी पढ़ाई करते समय छड़ी से और पिता जी मनमाने औजार-हथौड़ा, छड़, हत्था जो हाथ लगे उससे पीट पीटकर सिखाते थे। इस प्रसंग में किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का जिक्र आया है।

प्रश्न-2 धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंदी **क्यों नहीं समझता था?**

उत्तर-धनराम के मन में नीची जाति के होने की बात बचपन से बिठा दी गई थी। दूसरे, मोहन कक्षा में सबसे होशियार था। इस कारण मास्टर जी ने उसे कक्षा का मॉनीटर बना दिया था। तीसरे, मास्टर जी कहते थे कि एक दिन मोहन बड़ा आदमी बनकर स्कूल और उनका नाम रोशन करेगा। उसे भी मोहन से बहुत आशाएँ थीं। इन सभी कारणों से वह मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझता था।

प्रश्न-3 धनराम को मोहन के किस **व्यवहार पर आश्चर्य होता है और क्यों?**

उत्तर-मोहन ब्राह्मण जति का था। उस गाँव में ब्राहमण स्वयं को श्रेष्ठ समझते थे तथा शिल्पकारों के साथ उठते-बैठते नहीं थे। यदि उन्हें बैठने के लिए कह दिया जाता तो भी उनकी मार्यादा भंग होती थी। धनराम की दुकान पर काम खत्म होने के बाद भी मोहन देर तक बैठा रहा। यह देखकर धनराम हैरान हो गया। वह और अधिक हैरान तब हुआ जब मोहन ने उसके हाथ से हथौड़ा लेकर लोहे पर नपी-तुली चोट मारने लगा और धौंकनी फूँकते हुए भट्टी में गरम किया और ठोक पीटकर उसे गोल रूप दे दिया।

प्रश्न-4 मोहन के लखनऊ आने के बाद के समय को लेखक ने उसके जीवन का एक नया अध्याय क्यों कहा?

उत्तर-लेखक ने मोहन के लखनऊ प्रवास को उसके जीवन का एक नया अध्याय कहा है। यहाँ आने पर उसका जीवन बँधी-बँधाई लीक पर चलने लगा था। वह सुबह से शाम तक नौकर की तरह काम करता था। नए वातावरण व काम के बोझ के कारण मेधावी छात्र की प्रतिभा कुंठित हो गई। उसके उज्ज्वल भविष्य की कल्पनाएँ नष्ट हो गई। अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए उसे कारखानों और फैक्ट्रियों के चक्कर लगाने पड़े। उसे कोई काम नहीं मिल सका।

प्रश्न-5 मास्टर त्रिलोक सिंह के किस कथन को लेखक ने ज़बान का चाबुक कहा है और क्यों?

उत्तर-एक दिन धनराम को तेरह का पहाड़ा नहीं आया तो आदत अनुसार मास्टर जी ने संटी मँगवाई और धनराम से सारा दिन पहाड़ा याद करके छुट्टी के समय सुनाने को कहा। जब छुट्टी के समय तक उसे पहाड़ा याद न हो सका तो मास्टर जी ने उसे मारा नहीं वरन् कहा कि "तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें?" यही वह कथन था जिसे पाठ में लेखक ने जबान का चाबुक कहा है क्योंकि धनराम एक लोहार का बेटा था और मास्टर जी का यह कथन उसे मार से भी अधिक चुभ गया। जैसा कि कहा भी जाता है 'मार का घाव भर जाता है, पर कड़वी जबान का नहीं भरता'। यही धनराम के साथ हुआ और निराशा के कारण वह अपनी पढ़ाई आगे जारी नहीं रख सका।

प्रश्न-6 गाँव और शहर, दोनों जगहों पर चलने वाले मोहन के जीवन संघर्ष में क्या फ़र्क है?

उत्तर-गाँव में मोहन अपने लिए संघर्ष कर रहा था। दूसरे गाँव की पाठशाला में जाने के लिए प्रतिदिन नदी पार करना, मन लगाकर पढ़ना, हर अध्यापक के मन में अपनी जगह बनाना – ये सारे संघर्ष वह अपना भविष्य बनाने और अपने माता-पिता के सपने पूरे करने के लिए कर रहा था। लखनऊ शहर में जाकर रमेश के घर में आलू लाना, दही लाना, धोबी को कपड़े देकर आना-ये सब काम वह रमेश के परिवार के लिए कर रहा था। इससे उसका अपना भविष्य धूमिल हो गया और माता-पिता के सपने टूट गए। गाँव का होनहार बालक शहर में घरेलू नौकर बनकर रह गया था।

प्रश्न-7 एक अध्यापक के रूप में त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व आपको कैसा लगता है? अपनी समझ में उनकी खूबियों और खामियों पर विचार करें।

उत्तर-मास्टर त्रिलोक सिंह का व्यक्तित्व अध्यापक के रूप में ठीक-ठाक लगता है। वे अच्छे अध्यापक की तरह बच्चों को लगन से पढ़ाते थे। वे किसी के सहयोग के बिना पाठशाला चलाते थे। वे अनुशासन प्रिय हैं तथा दंड के भय आदि के द्वारा बच्चों को पढ़ाते हैं। वे होशियार बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। इन सब विशेषताओं के बावजूद उनमें कमियाँ भी हैं। वे जातिगत भेदभाव को मानते हैं। वे विद्यार्थियों को सख्त दंड देते थे। वे मोहन से भी बच्चों की पिटाई करवाते थे। वे कमजोर बच्चों को कटु बातें बोलकर उनमें हीन भावना भरते थे। छात्रों में हीनभावना तथा भेदभाव करने का उनका तरीका अशोभनीय था।

प्रश्न-8 वंशीधर को धनराम के शब्द क्यों कचोटते रहे?

उत्तर-वंशीधर को अपने पुत्र से बड़ी आशाएँ थी। वे उसके अफसर बनकर आने के सपने देखते थे। एक दिन धनराम ने उनसे मोहन के बारे में पूछा तो उन्होंने घास का एक तिनका तोड़कर दाँत खोदते हुए बताया कि उसकी सक्रेटेरियट में नियुक्ति हो गई है। शीघ्र ही वह बड़े पद पर पहुँच जाएगा। धनराम ने उन्हें कहा कि मोहन लला बचपन से ही बड़े बुद्धिमान थे। ये शब्द वंशीधर को कचोटते रहे, क्योंकि उन्हें मोहन की वास्तविक स्थिति का पता चल चुका था। लोगों से प्रशंसा सुनकर उन्हें दुःख होता था।

प्रश्न-9 रमेश बाबू ने मोहन को आठवीं कक्षा के बाद हाथ का तकनीकी काम क्यों सिखाया? क्या आप इसे उचित समझते हैं?

उत्तर-रमेश बाबू ने मोहन को आठवीं कक्षा के बाद हाथ का काम सिखाने का फैसला किया। इसके दो कारण थे

पहला कारण दिखावटी था। उनकी मान्यता थी कि आजकल बी.ए., एम.ए. करने का कोई लाभ नहीं। इससे बेरोज़गारी ही बढ़ती है। दूसरा कारण वास्तविक था। वे मोहन की पढ़ाई पर पैसा नहीं खर्च करना चाहते थे। कम-से-कम खर्च करके उससे घर के काम लेते रहना चाहते थे।

वास्तव में, आज के समय में तकनीकी शिक्षा अधिक बेहतर होती है, लेकिन एक स्तर तक सामान्य शिक्षा लेने के बाद ही। ऐसा नहीं कि पढ़ाई शुरू करते ही तकनीकी शिक्षा ली जाने लगे, इससे तो बच्चा एक प्रशिक्षित मज़दूर बनकर ही रह जाएगा। अतः आवश्यक है कि एक स्तर तक सामान्य शिक्षा देने के बाद उसे रोज़गारपरक तकनीकी शिक्षा दी जाए, ताकि भविष्य में वह आत्मनिर्भर बन सके।

7. रजनी-मन्नू भंडारी

- **जीवन परिचय-** मन्नू भंडारी का जन्म 1931 ई. में मध्यप्रदेश के भानपुरा में हुआ। इनकी आरंभिक शिक्षा अजमेर में हुई।

रचनाएँ -इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं

- कहानी-संग्रह- एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, आँखों देखा झूठ।
- उपन्यास- आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, एक इंच मुस्कान (राजेंद्र यादव के साथ)|
- पटकथाएँ- रजनी, निर्मला स्वामी, दर्पण।

पाठ का सार-नयी कहानी आंदोलन में जो नया मोड़ आया. उसमें मन्नू भंडारी का विशेष योगदान रहा। उनकी कहानियों में कहीं पारिवारिक जीवन, कही नारी-जीवन और कहीं समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन की विसंगतियाँ विशेष आत्मीय अंदाज में अभिव्यक्त हुई हैं। चाहे कहानी हो या उपन्यास या फिर पटकथा-सभी में मन्नू जी ने आक्रोश, व्यंग्य एवं संवेदना को मनोवैज्ञानिक रचनात्मक आधार दिया है।

प्रस्तुत पाठ 'रजनी' मन्नू भंडारी द्वारा लिखित बहुचर्चित टेलीविजन धारावाहिक 'रजनी' की एक कड़ी है, जिसमें जुझारू, स्त्री-पात्र एवं सूत्रधार रजनी शिक्षा की समस्या से जूझती नजर आती है।

पहला दृश्य (लीला का घर)

रजनी लीला के घर जाती है तथा उससे बाजार चलने को कहती है। लीला उसे बताती है कि आज अमित का रिजल्ट आ रहा है। रजनी उसे मिठाई तैयार रखने को कहती है, क्योंकि अमित बहुत होशियार लड़का है। अमित के लिए भी रजनी आंटी 'हीरो' हैं। तभी अमित स्कूल से आता है। उसका चेहरा उतरा हुआ है। वह रिपोर्ट कार्ड माँ की तरफ फेंकते हुए कहता है कि मैंने पहले ही गणित में ट्यूशन लगवाने को कहा था। ट्यूशन न करने की वजह में उसे केवल 72 अंक ही मिले। लीला कहती है कि तुमने तो सारे सवाल ठीक किए थे। तुम्हें पंचानवे नंबर जरूर मिलने चाहिए थे। रजनी कार्ड देखती है. दूसरे विषयों में 86, 80, 88, 82, 90 अंक मिले थे। सबसे कम गणित में ही मिले थे। अमित गुस्से व दुःख से कहता है कि सर, बार-बार ट्यूशन करने के तथा न करने पर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहने की चेतावनी देते थे। रजनी अमित को तसल्ली देती है तथा सारी बातों की जाँच करती है। उसे पता चलता है कि मिस्टर पाठक उसे गणित पढ़ाते हैं और अपने हर बच्चे को ट्यूशन लेने के लिए कहते हैं। अमित ने हाफ ईयरली में छियानबे नंबर पाए थो अध्यापक ने फिर भी उससे ट्यूशन रखने का आग्रह किया। रजनी अमित को समझाती है कि उसे अध्यापक से लड़ना चाहिए। यह सारी बदमाशी उसकी है। रजनी अमित से कहती है कि वह कल उसके स्कूल जाकर सर से मिलेगी। अमित डरकर उन्हें जाने से रोकता है। रजनी उसे डाँटती है तथा अगले दिन स्कूल जाने का संकल्प लेती है।

दूसरा दृश्य (हेडमास्टर का कमरा)

रजनी अमित के स्कूल के हेडमास्टर से मिलने पहुँची। उसने अमित सक्सेना की गणित की कॉपी देखने की अनुमति माँगी, तो हेडमास्टर ने वार्षिक परीक्षा की कॉपियाँ दिखाने में असमर्थता दिखाई। रजनी कहती है कि अमित ने मैथ्स में पूरा पेपर ठीक किया था, परंतु उसे केवल बहत्तर अंक मिले हैं। वह देखना चाहती है कि गलती किसकी है। हेडमास्टर फिर भी कॉपी न दिखाने पर अड़ा रहता है और अमित को दोषी बताता है। रजनी कहती है कि अमित के पिछले रिजल्ट बहुत बढ़िया हैं। इस बार उसके नंबर किस बात के लिए काटे गए। हेडमास्टर जब नियमों की दुहाई देते हैं तो रजनी व्यंग्य करती है कि यहाँ होशियार बच्चों को भी ट्यूशन लेने के लिए मजबूर किया जाता है। हेडमास्टर ट्यूशन को टीचर्स व स्टूडेंट्स का आपसी मामला बताता है।

रजनी उसे कुर्सी छोड़ने के लिए कहती है ताकि ट्यूशन के काले धंधे को रोका जा सके। हेडमास्टर आग बबूला होकर रजनी को वहाँ से चले जाने को कहता है।

तीसरा दृश्य (रजनी का घर)

शाम के समय रजनी का पति घर आता है। वह उसके लिए चाय लाती है, फिर उसे अपने काम के बारे में बताती है। इस पर उसका पति रवि उसे समझाता है कि टीचर ट्यूशन करें या धंधा। तुम्हें क्या परेशानी है। तुम्हारा बेटा तो अभी पढ़ने नहीं जा रहा। इस बात पर रजनी गुस्सा हो जाती है और कहती है कि अमित के लिए आवाज क्यों नहीं उठानी चाहिए। अन्याय करने वाले से अधिक दोषी अन्याय सहने वाला होता है। तुम्हारे जैसे लोगों के कारण ही इस देश में कुछ नहीं होता।

चौथा दृश्य (डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन का कार्यालय)

रजनी दफ्तर के बाहर बेंच पर बैठी अधिकारी से मिलने की प्रतीक्षा कर रही है। वह बैचेन हो रही है। प्रतीक्षा करते-करते जब बहुत देर हो जाती है, तो यह बड़बड़ाने लगती है। तभी एक आदमी आता है तथा स्लिप के नीचे पाँच रुपये का नोट रखकर देता है। चपरासी उसे तुरंत अंदर भेजता है। रजनी यह देखकर क्रोधित होती है। और चपरासी को धकेलकर अंदर चली जाती है। निदेशक उसे घंटी बजने पर अंदर जाने की बात कहता है। रजनी उसे खरी-खोटी सुनाती है। तो वह उससे बात करता है। रजनी प्राइवेट स्कूलों और बोर्ड के आपसी संबंधों के बारे में जानकारी इकट्ठा कर रही है। निदेशक समझता है कि शायद वह कोई रिसर्च प्रोजेक्ट पर काम कर रही है। वह बताता है कि बोर्ड मान्यता प्राप्त प्राइवेट स्कूलों को भी 90% ग्रांट देता है। इस ग्रांट के बदले बोर्ड स्कूलों पर नियंत्रण रखता है। स्कूलों को उसके नियम मानने होते हैं।

इस पर रजनी कहती है कि प्राइवेट स्कूलों में ट्यूशन के धंधे के बारे में आपका क्या विचार है। निदेशक कहता है कि इसमें धंधे जैसी कोई बात नहीं है। कमजोर बच्चे के माँ-बाप अपने बच्चों को ट्यूशन दिलवाते हैं। यह कोई मजबूरी नहीं है। इस पर रजनी उसे बताती है कि होशियार बच्चों को भी ट्यूशन लेने के लिए मजबूर किया जाता है। अगर ट्यूशन न ली जाए तो उसके नंबर कम कर दिए जाते हैं। हेडमास्टर ऐसे टीचर के खिलाफ एक्शन लेने से परहेज करता है। क्या आपको ऐसे रैकेट बंद करने के लिए दखलअंदाजी नहीं करनी चाहिए? इस पर निदेशक कहता है कि आज तक कोई शिकायत नहीं आई है। रजनी व्यंग्य करती है कि बिना शिकायत के आपको कोई जानकारी नहीं होती। निदेशक अपनी व्यस्तता का तर्क देता है, तो रजनी उसे कहती है मैं आपके पास शिकायतों का ढेर लगवाती हूँ।

पाँचवाँ दृश्य (अखबार का कार्यालय)

रजनी संपादक के पास जाती है। संपादक उनके कार्य की प्रशंसा करता है और कहता है कि आपने ट्यूशन के विरोध में बाकायदा एक आंदोलन ही खड़ा कर दिया। यह बहुत जरूरी है। रजनी जोश में कहती है कि आप हमारा साथ दीजिए तथा इसे अपने समाचार पत्र में स्थान दीजिए। इससे यह बात सीमित लोगों तक ही नहीं रहेगी। इससे अनेक अभिभावकों को राहत मिलेगी तथा बच्चों का भविष्य सँवर जाएगा।

संपादक रजनी की भावनाएँ समझकर उसका साथ देने का वादा करता है। उसने सारी बातें नोट की तथा एक आकर्षक समाचार बनाया। रजनी उसे बताती है कि 25 तारीख को पेरेंट्स की मीटिंग की जा रही है। यह सूचना अखबार में जरूर दिया जाए, ताकि सब लोगों को सूचना मिल जाए।

छठा दृश्य (बैठक-स्थल)

एक हॉल में पेरेंट्स की मीटिंग चल रही है। बाहर बैनर लगा हुआ है। काफी लोग आ रहे हैं, जिससे हॉल भरा हुआ है। प्रेस के लोग आते हैं। रजनी जोश में संबोधित कर रही है आपकी बड़ी संख्या में उपस्थिति से हमारी मंजिल शीघ्र मिल जाएगी। कुछ बच्चों को ट्यूशन जरूरी है, क्योंकि कुछ माँ पढ़ा नहीं सकतीं, तो कुछ पिता घर के काम में मदद नहीं करते। टीचर्स के एक प्रतिनिधि ने बताया कि उन्हें कम वेतन मिलता है। अतः उन्हें ट्यूशन करना पड़ता है। कई जगह कम वेतन देकर अध्यापकों से अधिक वेतन पर दस्तखत करवाए जाते हैं। इस पर हमारा कहना है कि वे संगठित होकर आंदोलन चलाएँ तथा अन्याय का पर्दाफाश करें। हम यह नियम बताएँ कि स्कूल का टीचर अपने स्कूल के बच्चों का ट्यूशन नहीं करेगा। इस नियम को तोड़ने वाले टीचर्स के

खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए। इससे बच्चों के साथ जोर-जबरदस्ती अपने-आप बंद हो जाएगी। सभा में लोगों ने इस बात का समर्थन किया।

सातवाँ दृश्य (रजनी का घर)

रजनी का पति अखबार पढ़ते हुए बताता है कि बोर्ड ने उसके प्रस्ताव को ज्यों-का-त्यों स्वीकार कर लिया है। रजनी बहुत प्रसन्न होती है। पति भी उस पर गर्व करता है। तभी लीला बेन, कांतिभाई और अमित मिठाई लेकर वहाँ आ जाते हैं।

प्रश्न-1 'रजनी' पाठ का संदेश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'रजनी' पाठ शिक्षा के व्यवसायीकरण, ट्यूशन के रैकेट, अधिकारियों की उदासीनता तथा आम जनता द्वारा अन्याय का विरोध करने की आवश्यकता आदि से संबंधित संदेश देता है। प्रस्तुत पाठ हमें यह सिखाता है कि यदि अन्याय को नहीं रोका गया तो वह बढ़ता जाएगा। अन्याय का विरोध पूरा समाज मिलकर कर सकता है, क्योंकि आम आदमी के सहयोग के बिना सामाजिक,प्रशासनिक एवं राजनैतिक व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन संभव नहीं है।

प्रश्न-2 जब किसी का बच्चा कमज़ोर होता है, तभी उसके माँ-बाप दयूशन लगवाते हैं। अगर लगे कि कोई टीचर लूट रहा है, तो उस टीचर से न ले ट्यूशन, किसी और के पास चले जाएँ. यह कोई मजबूरी तो है नहीं-प्रसंग का उल्लेख करते बताएँ कि यह संवाद आपको किस सीमा तक सही या गलत लगता है, तर्क दीजिए।

उत्तर-रजनी ट्यूशन के रैकेट के बारे में निदेशक के पास जाती है। उसे बताती है कि बच्चों को जबरदस्ती ट्यूशन करने के लिए कहा जाता है। ऐसे लोगों के बारे में बोर्ड क्या कर रहा है? निदेशक ने इस समस्या को गंभीरता से नहीं लिया। वे सहज भाव से कहते हैं कि ट्यूशन करने में कोई मजबूरी नहीं है। कमजोर बच्चे को ट्यूशन पढ़ना पड़ता है। अगर कोई अध्यापक उन्हें लूटता है तो वे दूसरे के पास चले जाएँ। शिक्षा निदेशक का यह जवाब बहुत घटिया व गैरजिम्मेदाराना है। वे ट्यूशन को बुरा नहीं मानते। उन्हें इसमें गंभीरता नज़र नहीं आती। वे बच्चों के शोषण को नहीं रोकना चाहते। ऐसी बातें कहकर वह अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ना चाहता है।

प्रश्न-3 "तो एक और आन्दोलन का मसला मिल गया"-फुसफुसाकर कही गई यह बात-

(क) किसने किस प्रसंग में कही?

(ख) इससे कहने वाले की किस मानसिकता का पता चलता है?

उत्तर-(क) यह बात रजनी के पति रवि ने पेरेंट्स मीटिंग के दौरान कही। रजनी ने कम वेतन पर काम करने वाले अध्यापकों को भी आंदोलन करने के लिए कहती है। उन्हें एकजुट होकर अन्याय करनेवालों का पर्दाफाश करना चाहिए।

(ख) इस कथन से रवि की उदासीन मानसिकता का पता चलता है। इस तरह के व्यक्ति अन्याय के खिलाफ कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता। ये स्वार्थी प्रवृत्ति के होते हैं तथा अपने तक ही सीमित रहते हैं।

प्रश्न-4 रजनी धारावाहिक की इस कड़ी की मुख्य समस्या क्या है? क्या होता अगर-

(क) अमित का पर्चा सचमुच खराब होता।

(ख) संपादक रजनी का साथ न देता।

उत्तर-रजनी धारावाहिक की इस कड़ी की मुख्य समस्या शिक्षा का व्यवसायीकरण है। स्कूल के अध्यापक बच्चों को ज़बरदस्ती ट्यूशन पढ़ने के लिए विवश करते हैं तथा ट्यूशन न लेने पर वे उनको कम अंक देते हैं।

(क) यदि अमित का पर्चा खराब होता तो यह समस्या सामने नहीं आती और न ही रजनी इसे आंदोलन का रूप दे पाती। बच्चों और अभिभावकों को ट्यूशन के शोषण से पीड़ित होना पड़ता।

(ख) यदि संपादक रजनी का साथ न देता तो यह समस्या सीमित लोगों के बीच ही रह जाती। कम संख्या का बोर्ड पर कोई असर नहीं होता। आंदोलन पूरी ताकत से नहीं चल पाता और सफलता संदिग्ध रहती।

प्रश्न-5 गलती करने वाला तो है ही गुनहगार, पर उसे बर्दाश्त करने वाला भी कम गुनहगार नहीं होता-इस संवाद के संदर्भ में आप सबसे ज्यादा किसे और क्यों गुनहगार मानते हैं?

उत्तर-इस संवाद के संदर्भ में हम सबसे ज्यादा, अत्याचार करनेवाले को दोषी मानते हैं, क्योंकि सामान्य रूप से चल रहे संसार में भी बहुत से कष्ट, दुख और तकलीफें हैं। अत्याचारी उन्हें अपने कारनामों से और बढ़ा देता है। वह स्वयं ऊपर से खुश दिखाई देता है, पर उसकी आत्मा तो जानती ही है कि वह गलती कर रहा है। उसके द्वारा जिसे सताया जा रहा है वह भी कष्ट उठा रहा है और उसकी आत्मा भी कष्ट उठाती है। इसलिए वह कष्ट से मुक्त होने के उपाय सोचता है, पर ऐसा कर नहीं पाती। ज्यादातर यही होता है। अतः अत्याचारी ही कष्ट का प्रथम कारण होने की वजह से अधिक दोषी है।

प्रश्न-6 स्त्री के चरित्र की बनी बनाई धारणा से रजनी का चेहरा किन मायनों में अलग है?

उत्तर-रजनी आम स्त्रियों से अलग है। आम स्त्री सहनशील होती है, वह डरपोक होती है। वह अन्याय का विरोध नहीं करती तथा संघर्षों से दूर रहना चाहती है। रजनी इन सबके विपरीत जुझारू संघर्षशील व बहादुर है। वह अपने सामने हो रहे अन्याय को नहीं सहन कर सकती। वह अपने पति तक को खरी-खोटी सुनाती है तथा अधिकारियों की खिंचाई करती है। यह ट्यूशन के विरोध में जन-आंदोलन खड़ा कर देती है।

प्रश्न-7 गणित के टीचर के खिलाफ अन्य बच्चों ने आवाज क्यों नहीं उठाई?

उत्तर-गणित का अध्यापक बच्चों को जबरदस्ती ट्यूशन पर आने के लिए कहता था। ऐसा न करने पर उनके अंक तक काट देता था। दूसरे बच्चों ने उसके खिलाफ आवाज नहीं उठाई, क्योंकि उन्हें लगता था कि ऐसा करने पर अगली कक्षाओं में भी उनके साथ भेदभाव किया जाएगा। अध्यापक उनका भविष्य बिगाड़ देगा और उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। इस डर से अमित व उसकी माँ भी रजनी को विरोध करने से रोकना चाहते थे।

प्रश्न-8 रजनी संपादक से क्या सहायता माँगती है?

उत्तर-रजनी संपादक को ट्यूशन की समस्या बताती है तथा उसे अखबार में छापने का आग्रह करती है। वह उनसे कहती है कि 25 तारीख की पेरेंट्स मीटिंग की खबर भी प्रकाशित करें। इससे सब लोगों तक खबर पहुँच जाएगी। व्यक्तिगत तौर पर हम कम लोगों से संपर्क कर पाएँगे।

प्रश्न 9. 'रजनी' के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर – रजनी इस कहानी की नायिका है। उसके चरित्र का सबसे बड़ा गुण यह है कि वह हमेशा संघर्षशील रहती है। अन्याय के विरुद्ध लड़ती है। वह निर्भीक बेबाक और आत्मविश्वाश से भरपूर है। वह सच्चाई के लिए किसी से भी टकराने के लिए तैयार रहती है। उसमें लोगों को इकट्ठा करने एवं तर्कसहित अपने बातों से लोगों को प्रभावित करने की अद्भूत शक्ति है।

7. जामुन का पेड़-कृश्नचंदर

जीवन परिचय-जन्म पंजाब के गुजरांकला जिले के बजीराबाद गाँव में 1917 ई. में हुआ। मृत्यु-सन् 1977 ई. में

रचनाएँ-इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी संग्रह-ए(क) गिरजा-ए-खंदक, यूकेलिप्ट्स की डाली।

उपन्यास-शिकस्त, जरगाँव की रानी, सड़क वापस जाती है, आसमान रौशन है, एक गधे की आत्मकथा, अन्नदाता, हम वहशी है, जब खेत जागे, बावन पते, एक वायलिन समंदर के किनारे, कागज की नाव, मेरी यादों के किनारे।

सारांश-'जामुन का पेड़' कृश्नचंदर की प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कथा है। हास्य-व्यंग्य के लिए चीजों को अनुपात से ज्यादा फैला-फुलाकर दिखलाने की परिपाटी पुरानी है और यह कहानी भी उसका अनुपालन करती है।

इसलिए इसकी घटनाएँ अतिशयोक्तिपूर्ण और अविश्वसनीय लगने लगती है। विश्वसनीयता ऐसी रचनाओं के मूल्यांकन की कसौटी नहीं हो सकती। प्रस्तुत पाठ यह स्पष्ट करता है कि कार्यालयी तौर-तरीकों से पाया जाने वाला विस्तार कितना निरर्थक और पदानुक्रम कितना हास्यस्पद है। यह व्यवस्था के संवेदनशून्य व अमानवीयता के रूप को भी बताता है।

रात को चली आँधी में सचिवालय के पार्क में जामुन का पेड़ गिर गया। सुबह माली ने देखा कि उसके नीचे एक आदमी दबा पड़ा है। उसने यह सूचना तुरंत चपरासी को दी। इस तरह मिनटो में दबे आदमी के पास भीड़ इकट्ठी हो गई। क्लर्कों को रसीले जामुनों की याद आ रही थी, तभी माली ने आदमी के बारे में पूछा। उन्हें उस आदमी के जीवित होने में संदेह था, तभी वह दबा आदमी बोल पड़ा। माली ने पेड़ हटाने का सुझाव दिया परंतु सुपरिटेंडेंट ने अपने ऊपर के अधिकारी से पूछने की बात कही। इस तरह बात डिप्टी सेक्रेटरी, ज्वाइंट सेक्रेटरी, चीफ सेक्रेटरी मिनिस्टर के पास पहुँची। मंत्री ने चीफ सेक्रेटरी से कुछ कहा और उसी क्रम में बात नीचे तक पहुँची। दोपहर को भीड़ इकट्ठी हो गई। कुछ मनचले क्लर्क सरकारी इजाजत के बिना पेड़ हटाना चाहते थे कि तभी सुपरिटेंडेंट फाइल लेकर भागा-भागा आया और कहा कि यह काम कृषि विभाग का है। वह उन्हें फाइल भेज रहा है। कृषि विभाग ने पेड़ हटवाने की जिम्मेदारी व्यापार विभाग पर डाल दी। व्यापार विभाग ने कृषि विभाग पर जिम्मेदारी डालकर अपना पल्ला झाड़ लिया। दूसरे दिन भी फाइल चलती रही। शाम को इस मामले को होर्टीकल्चर विभाग के पास भेजने का फैसला किया गया क्योंकि यह एक फलदार पेड़ था।

रात को माली ने दबे हुए आदमी को दाल-भात खिलाया, जबकि उसके चारों तरफ पुलिस का पहरा था। माली ने उसके परिवार के बारे में पूछा तो दबे हुए आदमी ने स्वयं को लावारिस बताया। तीसरे दिन हॉटीकल्चर विभाग से जवाब आया कि आजकल 'पेड़ लगाओ' स्कीम जोर-शोर से चल रही है। अतः जामुन के पेड़ को काटने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

एक मनचले ने आदमी को काटकर निकालने की बात कही जिससे पेड़ बच जाए। दबे हुए आदमी ने इस पर आपत्ति की कि ऐसे तो वह मर जाएगा। आदमी को काटकर निकालने वाले ने अपना तर्क दिया कि आजकल प्लास्टिक सर्जरी उन्नति कर चुकी है। यदि आदमी को बीच में से काटकर निकाल लिया जाए तो उसे प्लास्टिक सर्जरी से जोड़ा जा सकता है। इस बात पर फाइल मेडिकल विभाग भेजी गई। वहाँ से रिपोर्ट आई कि सारी जाँच-पड़ताल से पता चला है कि प्लास्टिक सर्जरी तो हो सकती है, किंतु आदमी मर जाएगा। अतः यह फैसला रद्द हो गया।

फ़ाइल चलती रही। रात को माली ने उस आदमी को बताया कि कल सभी सचिवों की बैठक होगी। वहाँ केस सुलझने के आसार हैं। दबे हुए आदमी ने गालिब का एक शेर सुनाया

"ये तो माना कि तगाफुल न करोगे लेकिन
खाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक"

यह सुनकर माली हैरान हो गया। आदमी के शायर होने की बात सारे सचिवालय में फैल गई। फिर यह चर्चा शहर मैं फैल गई और तरह-तरह के कवि व शायर वहाँ इकट्ठे हो गए। वे सभी अपनी रचनाएँ सुनाने लगे। जब यह पता चला कि दबा हुआ व्यक्ति कवि है, तो सब-कमेटी ने यह मामला कल्चरल डिपार्टमेंट को सौंप दिया। साहित्य अकादमी के सचिव के पास फाइल पहुँची। सचिव उसी समय उस आदमी का इंटरव्यू लेने पहुँचा। दबे हुए आदमी ने बताया कि उसका उपनाम ओस है तथा कुछ दिन पहले उसका लिखा हुआ 'ओस के फूल' संग्रह प्रकाशित हुआ है। सचिव ने आश्चर्य जताया कि इतना बड़ा लेखक उनकी अकादमी का सदस्य नहीं है। आदमी ने कहा कि मुझे पेड़ के नीचे से निकालिए। सचिव उसे आश्वासन देकर चला गया।

अगले दिन सचिव ने उसे साहित्य अकादमी का सदस्य चुने जाने की बधाई दी। आदमी ने उससे पेड़ के नीचे से निकालने की प्रार्थना की तो उसने असमर्थता जताई। उसने कहा कि यदि तुम मर गए तो वे उसकी बीवी को वजीफा दे सकते हैं। उनके विभाग का संबंध सिर्फ कल्चर से है। पेड़ काटने का काम आरी-कुल्हाड़ी से होगा। वन विभाग को लिख दिया गया है। शाम को माली ने बताया कि कल वन विभाग वाले पेड़ काट देंगे।

माली खुश था। दबे हुए आदमी का स्वास्थ्य जवाब दे रहा था। दूसरे दिन वन विभाग के लोग आरी कुल्हाड़ी लेकर आए तो विदेश विभाग के आदेश से यह कार्य रोक दिया गया। यह पेड़ पीटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने सचिवालय में दस साल पहले लगाया था। पेड़ काटने से दोनों राज्यों के संबंध बिगड़ जाएँगे। पीटोनिया सरकार राज्य को बहुत सहायता देती है। दो देशों की खातिर एक आदमी के जीवन का बलिदान दिया जा सकता है।

अंडर सेक्रेटरी ने बताया कि प्रधानमंत्री विदेश दौरे से सुबह वापस आ गए हैं। अब वे ही निर्णय करेंगे। शाम के पाँच बजे स्वयं सुपरिंटेंडेट कवि की फाइल लेकर आया और चिल्लाया कि प्रधानमंत्री ने सारी जिम्मेदारी स्वयं लेते हुए पेड़ काटने की अनुमति दे दी। कल यह पेड़ काट दिया जाएगा। तुम्हारी फाइल पूरी हो गई। परंतु कवि का हाथ ठंडा था। उसके जीवन की फाइल भी पूरी हो चुकी थी।

प्रश्न 1 दबा हुआ आदमी एक कवि है, यह बात कैसे पता चली और इस जानकारी का फाइल की यात्रा पर क्या असर पड़ा?

उत्तर-सेक्रेटेरियट के लॉन में खड़ा जामुन का पेड़ रात की आँधी में गिर गया। इसके नीचे एक आदमी दब गया। उसे बचाने के लिए एक सरकारी फाइल बनी। वह एक विभाग से दूसरे विभाग में जाने लगी। माली ने उस आदमी को हौसला देते हुए उसे खिचड़ी खिलाई और कहा कि उसका मामला ऊपर तक पहुँच गया है। तब उस व्यक्ति ने आह भरते हुए गालिब का शेर कहा

"ये तो माना कि तगाफ़ुल न करोगे लेकिन
खाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक "

माली उसे पूछता है कि क्या आप शायर हैं? उसने हाँ में सिर हिलाया। फिर माली ने यह बात क्लर्को को बताई। इस प्रकार यह बात सारे शहर में फैल गई। सेक्रेटरियट में शहर-भर के कवि व शायर इकट्ठे हो गए। फाइल कल्चर डिपार्टमेंट को भेजी गई। वहाँ का सचिव उस व्यक्ति का इंटरव्यू लेने आया और उसे अकादमी का सदस्य बना दिया किंतु यह कहकर कि पेड़ से नीचे से निकालने का काम उसके विभाग का नहीं है वह फाइल वन विभाग को भेज देता है। इससे पेड़ हटाने या काटने की अनुमति मिलने का रास्ता और लंबा हो गया है।

प्रश्न-2 कृषि विभाग वालों ने मामले को हॉटीकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे क्या तर्क दिया?

उत्तर-कृषि विभाग ने मामला हॉटीकल्चर डिपार्टमेंट को सौंपते हुए लिखा-क्योंकि यह एक फलदार पेड़ का मामला है और एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट अनाज और खेती-बाड़ी के मामलों में फैसला करने का हकदार है। जामुन का पेड़ चूँकि एक फलदार पेड़ है। इसलिए यह विषय हॉटीकल्चर डिपार्टमेंट के अंतर्गत आता है।

प्रश्न-3 कहानी में दो प्रसंग ऐसे हैं, जहाँ लोग पेड़ के नीचे दबे आदमी को निकालने के लिए कटिबद्ध होते हैं?

उत्तर-एक बार तो कहानी के शुरुआत में पहले ही दिन माली के कहने पर जमा भीड़ तैयार थी कि सब मिलकर जोर लगाते हैं। उसी समय सुपरिटेंडेंट बोला कि 'ठहरो! मैं अंडर सेक्रेटरी से पूछ लेता हूँ और इससे यह मामला ठप्प हो गया। दूसरा प्रसंग दोपहर के भोजन के समय आता है। दबे हुए व्यक्ति को बाहर निकालने के लिए फाइल कार्यालय में घूम रही थी तो कुछ मनचले किस्म के क्लर्क सरकारी फैसले के इंतजार के बिना इस पेड़ को स्वयं हटा देना चाहते थे कि उसी समय सुपरिटेंडेंट फाइल लेकर भागा-भागा आया और कहा कि कृषि विभाग के अधीन आने वाले इस पेड़ को हम नहीं काट सकते। इस प्रकार पेड़ हटाने का मामला खट्टाई में पड़ जाता हैहै।

प्रश्न-4 यह कहना कहाँ तक युक्तिसंगत है कि इस कहानी में हास्य के साथ-साथ करुणा की भी अंतर्धारा है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर-यह कहना बिल्कुल सही है कि इस कहानी हास्य के साथ-साथ करुणा की भी अंतर्धारा है। व्यक्ति पेड़ के नीचे दबा हुआ है। चारों तरफ भीड़ जमा है। वे जामुन के पेड़ तथा रसीले जामुनों की चर्चा कर रहे हैं परंतु दबे व्यक्ति को बचाने का प्रयास नहीं होता है। क्लर्कों, अधिकारियों तथा विभागों की कार्यप्रणाली हास्य के साथ करुणा को जाग्रत करती है। फाइल चलती रहती है। माली ही दया करके उसे खाना खिला देता है। कुछ लोग आदमी को काटकर उसे प्लास्टिक सर्जरी से जोड़ने की बात कहते हैं। यह संवेदनहीनता का चरम रूप

है। कल्चर विभाग का सचिव उसे अकादमी का सदस्य बना देता है, उससे मिठाई माँगता है, परंतु उसे बचाने का प्रयास नहीं करता। देशों के संबंध के नाम पर आम आदमी की बलि चढ़ाई जा सकती है। ये सभी घटनाएँ करुणा की गहनता को व्यक्त करती हैं।

प्रश्न-5 यदि आप माली की जगह पर होते, तो हुकूमत के फैसले का इंतजार करते या नहीं? अगर हाँ तो क्यों और नहीं, तो क्यों?

उत्तर-यदि हम माली के स्थान पर होते तो हुकूमत के फैसले का जरा भी इंतजार न करते और बिना किसी की परवाह किए दबे हुए आदमी को निकाल लेते, क्योंकि किसी भी विभाग, कानून और हुकूमत के फैसले से ज्यादा आवश्यक है किसी की जान बचाना। अतः सबसे पहले वही किया जाना चाहिए। इतने सारे लोगों के बीच महज औपचारिकता के चलते एक व्यक्ति की जान चली जाना मनुष्यता के नाम पर धब्बा है।

प्रश्न-6 हॉर्टीकल्चर विभाग का जवाब व्यंग्यपूर्ण क्यों था?

उत्तर-हॉर्टीकल्चर विभाग के सचिव ने जवाब दिया कि उनका विभाग पेड़ लगाओ अभियान में जोर-शोर से जुटा हुआ है। ऐसे में किसी भी अधिकारी को पेड़ काटने की बात नहीं सोचनी चाहिए। जामुन फलदार पेड़ है। अतः फलदार पेड़ को काटने की अनुमति कदापि नहीं दे सकते। लेखक व्यंग्य करता है कि ऐसे अफसरों को अपनी नीतियों और पद की अधिक चिंता रहती है, व्यक्ति की जान की नहीं।

प्रश्न-7 पेड़ के बजाय आदमी को काटने की सलाह पर टिप्पणी करें।

उत्तर-एक मनचले क्लर्क ने सलाह दी कि यदि जामुन के फलदार पेड़ को बचाने की जरूरत है तो उसके नीचे दब आदमी को काटकर निकाल लो फिर उसे प्लास्टिक सर्जरी से जोड़ दिया जाएगा। इस तरीके से पेड़ भी बच जाएगा। यह सुझाव सरकारी बाबुओं की संवेदनशून्यता पर चोट करता है। ये लोग अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य अपने अफ़सरों को खुश रखना है।

प्रश्न-8 साहित्य अकादमी के सचिव ने शायर को क्या बताया?

उत्तर-उसने शायर को बताया कि तुम्हें साहित्य अकादमी ने अपनी केंद्रीय शाखा का सदस्य चुन लिया गया है। हमारा विभाग तुम्हे पेड़ के नीचे से तो नहीं निकाल सकता किन्तु तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारी बीवी को वज़ीफा दे सकता है। हालांकि हमने फॉरेस्ट डिपार्टमेंट को लिख दिया है और अर्जेंट लिखा है।

प्रश्न-9 साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी ने लौटकर क्या बताया?

उत्तर-साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी ने लौटकर तीन बातें बताईं-

(क) दबे हुए व्यक्ति (कवि) को साहित्य अकादमी के केंद्रीय शाखा का मेम्बर चुन लिया गया है।

(ख) वे दबे हुए व्यक्ति को पेड़ के नीचे से नहीं निकाल सकते लेकिन उसके मरने पर उसकी पत्नी को वजीफ़ा दे सकते हैं।

(ग) हमारा विभाग सिर्फ कल्चर से संबंधित है। पेड़ काटने का मामला कलम-दवात से नहीं, आरी-कुल्हाड़ी से संबंधित है। उसके लिए हमने फॉरेस्ट डिपार्टमेंट को लिख दिया है और अर्जेंट लिखा है।

8. भारत माता-जवाहरलाल नेहरू

भारत माता' अध्याय हिंदुस्तान की कहानी का पाँचवाँ अध्याय है। इसमें नेहरू जी ने बताया है कि किस तरह देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों में जाकर वे आम लोगों को बताते थे कि अनेक हिस्सों में बँटा होने के बाद भी हिंदुस्तान एक है। इस अपार फैलाव के बीच एकता के क्या आधार हैं और क्यों भारत एक देश है, जिसके सभी हिस्सों की नियति एक ही तरीके से बनती-बिगड़ती है।

पाठ का सारांश-नेहरू जी कहते हैं कि जब वे जलसों में जाते हैं तो वे लोगों से भारत की चर्चा करते हैं। भारत संस्कृत शब्द है और इस जाति के परंपरागत संस्थापक के नाम से निकला है। शहरों के लोगों के बजाय वे गाँवों में किसानों से देश के बारे में चर्चा करते हैं। वे उन्हें बताते हैं कि देश के हिस्से अलग होते हुए भी एक हैं। नेहरू जी ने भारत की यात्रा के दौरान लोगों को यह समझाने का प्रयास किया कि हर जगह

किसानों की समस्याएँ एक-सी हैं-गरीबों, कर्जदारों, पूँजीपतियों के शिकंजे, जमींदार, महाजन, कड़े लगान और सूद, पुलिस के जुल्म। ये सभी बातें विदेशी सरकार की देन हैं तथा सबको इससे छुटकारा पाने के लिए सोचना है। सभी लोगों को देश के बारे में सोचना है। वे लोगों से विदेशों मे होने वाली घटनाओं का जिक्र करते। किसानों को विदेशों के बारे में समझाना आसान न था किंतु मुश्किल भी नहीं था क्योंकि हमारे महाकाव्यों व पुराणों ने इस देश की कल्पना करा दी थी और तीर्थ यात्रा करने वाले लोगों ने या बडी लडाइयों में भाग लेने सिपाहियों और कछ ने विदेशों में नौकरी करके देश-दनिया की जानकारी दी। सन् तीस की आर्थिक मंदी की वजह से दूसरे देशों के बारे में नेहरू जी के दिए गए उदाहरण लोगों के समझ में आ जाते थे।

जलसों में नेहरू का स्वागत अकसर 'भारत माता की जय' के नारे से होता था। वे लोगों से इस नारे का मतलब पूछते तो वे जवाब न दे पाते। एक हट्टे-कट्टे किसान ने भारत माता का अर्थ धरती बताया। उन्होंने पूछा कि कौन-सी धरती? उनके गाँव, जिले, सूबे या पूरे देश की धरती। इस प्रश्न पर फिर सब चुप हो जाते। नेहरू उन्हें बताते हैं कि भारत वह है जो उन्होंने समझ रखा है। इसमें नदी, पहाड़, जंगल, खेत आदि सब तो शामिल हैं ही परंतु भारत माता वास्तव में है-इस देश में रहने वाले लोग। भारत माता की जय का अर्थ है-इन सबकी जय।

प्रश्न-1 भारत की चर्चा नेहरू जी कब और किससे करते थे?

उत्तर-भारत की चर्चा नेहरू जी देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों में जाकर अपने सुनने वालों से किया करते थे। इस विषय की चर्चा ज्यादातर वे किसानों से करते थे। उन्हें लगता था कि शहर के लोग तो ज्यादा समझदार होते हैं परन्तु गाँव में रहने वाले किसानों को संपूर्ण भारत के बारे में जानकारी कम है तथा उनका दृष्टिकोण सीमित है। अतः उनके सामने वे अक्सर भारत की चर्चा किया करते थे।

प्रश्न-2 नेहरू जी भारत के सभी किसानों से कौन-सा प्रश्न बार-बार करते थे?

उत्तर-नेहरू जी भारत के सभी किसानों से निम्नलिखित प्रश्न बार-बार करते थे-वे 'भारत माता की जय' से क्या समझते हैं? यह भारत माता कौन है? वह धरती कौन-सी है जिसे वे भारत माता कहते हैं-गाँव की, जिले की, सूबे की या पूरे हिंदुस्तान की।

प्रश्न-3 दुनिया के बारे में किसानों को बताना नेहरू जी के लिए क्यों आसान था?

उत्तर-नेहरू जी के लिए किसानों को दुनिया के बारे में बताना आसान था। इसकी वजह यह थी कि हमारे पुराने महाकाव्यों ने और पुराणों की कथा-कहानियों ने, जिन्हें वे खूब जानते थे, उन्हें इस देश की कल्पना करा दी थी, और हमेशा कुछ लोग ऐसे मिल जाते थे, जिन्होंने हमारे बड़े-बड़े तीर्थों की यात्रा कर रखी थी, जो हिंदुस्तान के चारों कोनों पर हैं। या हमें पुराने सिपाही मिल जाते, जिन्होंने पिछली बड़ी जंग में या और धावों के सिलसिले में विदेशों में नौकरियाँ की थीं। सन् तीस के बाद जो आर्थिक मंदी पैदा हुई थी, उसकी वजह से दूसरे मुल्कों के बारे में मेरे हवाले उनकी समझ में आ जाते थे।

प्रश्न-4 किसान सामान्यत: भारत माता का क्या अर्थ बताते थे?

उत्तर-किसान सामान्यत: 'भारत माता' का अर्थ-धरती से समझते थे। नेहरू जी ने उन्हें समझाया कि उनके गाँव, जिले, नदियाँ, पहाड़, जंगल, खेत ये सब तो भारत है ही परन्तु इन सब से बढ़कर भारत माता वे लोग हैं जो इस हिंदुस्तान की धरती पर रहते हैं। ये करोड़ों भारतीय ही भारत माता हैं। भारत माता की जय का अर्थ है इन सब लोगों की जय।

प्रश्न-5 भारत माता के प्रति नेहरू जी की क्या अवधारणा थी?

उत्तर-भारत माता के प्रति नेहरू जी की अवधारणा थी कि देश का हर हिस्सा-नदी, पहाड़, खेत आदि सभी भारत माता है और इन सबसे भी ज्यादा महत्वपूर्ण भारत में रहने वाले करोड़ों लोग हैं, वे ही भारत माता हैं। 'भारत माता की जय' का अर्थ है-करोड़ों भारतवासियों की जय। इस धारणा का अर्थ है कि किसी भूभाग पर रहने वाले लोगों से ही देश बनता है न कि केवल किसी भूभाग या वहाँ स्थित नदी, पहाड़, जंगल आदि से।

प्रश्न-6 आजादी से पूर्व किसानों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता था?

उत्तर-आजादी से पूर्व किसानों को गरीबी, कर्जदारी, पूँजीपतियों के शिकजे में फैंसे रहना, जमींदारों और महाजनों के कर्ज के जाल में फंसकर अपना सब कुछ गँवा देना, लगान, पुलिस के अत्याचार, अधिक ब्याज देना, विदेशी शासन के अत्याचार आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता था।

प्रश्न-7 भारत के विकास को लेकर आप क्या सपने देखते हैं?

उत्तर-भारत के विकास को लेकर मेरा सपना निम्नलिखित है-

(क) सभी भारतीयों को रोटी, कपड़ा व मकान सहजता से मिले।

(ख) शिक्षा और स्वास्थ्य का अधिकार सबको मिले।

(ग) देश के कृषि व औद्योगिक क्षेत्रों में विकास हो ताकि लोगों को रोजगार मिले।

(घ) देश में तकनीकी क्रांति आए।

(ङ) देश में शांति का माहौल कायम रहे।

प्रश्न-8 आपकी दृष्टि में भारत माता और हिंदुस्तान की क्या संकल्पना है? बताइए।

उत्तर-मेरी दृष्टि में भारत माता या हिंदुस्तान वह देश है जो विभिन्न भौगोलिक सीमाओं से आबद्ध है। उत्तर में हिमालय इसका मस्तक है जो प्रहरी के समान इसकी रात-दिन रक्षा करता है तो दक्षिण में सागर इसके चरणों को पखारता है। अनेक नदियाँ, पहाड़, जंगल, खेत, पशु-पक्षी इसकी शोभा में वृद्धि करते हैं। इस देश का हर निवासी इसका अंश है। इन सबको मिलाकर बना हुआ देश भारत है।

प्रश्न-9 वर्तमान समय में किसानों की स्थिति किस सीमा तक बदली है? चर्चा कर लिखिए?

उत्तर-आज किसानों की दशा में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। अब वे अपने खेतों के मालिक हैं। उन्हें लगान नहीं देना पड़ता। सूखा पड़ने या बाढ़ आने पर उन्हें मुआवजा मिलता है। उनकी फसलों की खरीद हेतु सरकार न्यूनतम मूल्य घोषित करती है। अच्छे बीज, खाद, कीटनाशक, बिजली, पानी आदि सब पर सरकार भारी सब्सिडी देती है। अब उन्हें भूखा नहीं मरना पड़ता। खेती के साथ वे छोटे-छोटे कुटीर उद्योग भी लगा सकते हैं। अब उन्हें महाजनों, जमींदारों और पुलिस के अत्याचार सहने नहीं पड़ते।